अध्याय ६

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा रघुनाथ दास गोस्वामी की भेंट

भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृतप्रवाह भाष्य* में इस अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। जब श्री चैतन्य महाप्रभु में प्रेमावेश के दिव्य विकार प्रकट होते थे, तब रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी उनके पास रहते और उनकी इच्छा के अनुरूप उनको सन्तुष्ट किया करते थे। रघुनाथ दास गोस्वामी बहुत समय से श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों के निकट आने का प्रयास कर रहे थे, इसलिए अन्ततः उन्होंने घर-बार छोड़ दिया और महाप्रभु से भेंट की। जब श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन जाते समय शान्तिपुर गये थे, तब रघुनाथ दास गोस्वामी ने महाप्रभु के चरणकमलों पर अपना जीवन अर्पित करने की बात की थी। किन्तु इसी बीच एक मुसलमान अधिकारी रघुनाथ दास गोस्वामी के ताऊ हिरण्य दास से ईर्ष्या करने लगा और उसने किसी बड़े दरबारी सचिव को उसको बन्दी बनाने के लिए प्रेरित किया। इस तरह हिरण्य दास ने अपना घर छोड़ दिया, किन्तु रघुनाथ दास की बुद्धिमानी से गलतफहमी दूर हो गई। तब रघुनाथ दास पानिहाटि चले गये और उन्होंने श्री नित्यानन्द प्रभु के आदेश से वहाँ *चिड़ादधि महोत्सव* सम्पन्न किया, जिसमें उन्होंने चिउड़ा के साथ दही मिलाकर वितरित किया। इस उत्सव के अगले दिन नित्यानन्द प्रभु ने रघुनाथ दास को आशीर्वाद दिया कि उसे शीघ्र ही श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण प्राप्त होगी। इस घटना के बाद रघुनाथ दास अपने पुरोहित यदुनन्दन आचार्य की सहायता से चालाकी से अपने घर से निकल भागे। वे आम रास्ते से न जाकर

छिपते हुए जगन्नाथपुरी गये। वे बारह दिनों के बाद जगन्नाथ पुरी में श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में पहुँचे।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथदास गोस्वामी को स्वरूप दामोदर गोस्वामी के हाथों सौंप दिया। इसलिए रघुनाथ दास गोस्वामी का दूसरा नाम *स्वरूपेर रघु* या स्वरूप-दामोदर का रघुनाथ है। रघुनाथ दास गोस्वामी पाँच दिनों तक मन्दिर में प्रसाद लेते रहे, किन्तु बाद में वे सिंह द्वार पर खड़े रहते और भिक्षा से जो भी मिल जाता उसे खाते। बाद में वे विभिन्न छत्रों (लंगरों) से भीख माँगकर जीवन धारण करने लगे। जब रघुनाथ दास के पिता को यह समाचार मिला, तो उसने कुछ सेवक तथा धन भेजा, किन्तु रघुनाथ दास ने यह धन लेने से मना कर दिया। यह जानकर कि रघुनाथदास गोस्वामी छत्रों से भीख माँगकर जीवन-यापन करते हैं, श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी गुंजा माला तथा गोवर्धन पर्वत की एक शिला (गोवर्धन शिला) उन्हें भेंट की। तत्पश्चात् रघुनाथ दास गोस्वामी फेंके गये भोजन को एकत्र करके उसे धोकर खाने लगे। इस विरक्त जीवन से स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा श्री चैतन्य महाप्रभु दोनों ही अतीव प्रसन्न थे। एक दिन श्री चैतन्य महाप्रभु ने वही भोजन छीनकर खाया और रघुनाथ दास गोस्वामी को उनके वैराग्य के लिए आशीर्वाद दिया।

कृपा-गुणैर्यः कुगृहान्ध-कूपाद्
उद्धृत्य भङ्ग्या रघुनाथ-दासम् ।
न्यस्य स्वरूपे विदधेऽन्तरङ्गं
श्री-कृष्ण-चैतन्यममुं प्रपद्ये ॥ १ ॥

कृपा-गुणैर्यः कुगृहान्ध-कूपाद्
उद्धृत्य भङ्ग्या रघुनाथ-दासम् ।
न्यस्य स्वरूपे विदधेऽन्तरङ्गं
श्री-कृष्ण-चैतन्यममुं प्रपद्ये ॥ १ ॥

कृपा-गुणैः—अहैतुकी कृपा रूपी रस्सियों द्वारा; **यः**—जो; **कु-गृह**—घृणित पारिवारिक जीवन रूपी; **अन्ध-कूपात्**—अन्धकूप से; **उद्धृत्य**—उद्धार पाकर; **भङ्ग्या**—युक्ति द्वारा; **रघुनाथ-दासम्**—रघुनाथ दास गोस्वामी को; **न्यस्य**—सौंपकर; **स्वरूपे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी को; **विदधे**—बनाया; **अन्तः-अङ्गम्**—अपने अन्तरंग साथियों में से एक; **श्री-**

कृष्ण-चैतन्यम्—भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु को; **अमुम्**—उनको; **प्रपद्ये**—मैं प्रणाम करता हूँ।

अनुवाद

श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अपनी अहैतुकी कृपा रूपी रस्सी से रघुनाथदास गोस्वामी को घृणित पारिवारिक जीवन रूपी अन्धे कुएँ से उद्धार करने के लिए युक्ति का प्रयोग किया। उन्होंने रघुनाथ दास गोस्वामी को स्वरूप दामोदर गोस्वामी के संरक्षण में रखकर अपना निजी संगी बनाया। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय हो; **श्री-चैतन्य**—चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! और श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

এই-মত গৌরচন্দ্র ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
নীলাচলে নানা লীলা করে নানা-রঙ্গে ॥৩॥

এइ-মত গৌরচন্দ্র ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
নীলাচলে নানা লীলা করে নানা-রঙ্গে ॥ ৩॥

এइ-মত—इस प्रकार; **गौरचन्द्र**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **भक्त-गण-सङ्गे**—अपने संगियों के साथ; **नीलाचले**—नीलाचल (जगन्नाथ पुरी) में; **नाना**—अनेक; **लीला**—लीलाएँ; **करे**—करते; **नाना-रङ्गे**—अनेक प्रकार के दिव्य आनन्द में।

अनुवाद

इस तरह भगवान् गौरचन्द्र ने अपने संगियों के साथ जगन्नाथपुरी में नाना प्रकार की दिव्य आनन्ददायिनी लीलाएँ सम्पन्न कीं।

যদ্যপি অন্তরে কৃষ্ণ-বিয়োগ বাধয়ে ।
বাহিরে না প্রকাশয় ভক্ত-দুঃখ-ভয়ে ॥ ৪ ॥

य़द्यपि अन्तरे कृष्ण-वियोग बाधये ।
बाहिरे ना प्रकाशय भक्त-दुःख-भये ॥ ४ ॥

य़द्यपि—यद्यपि; **अन्तरे**—हृदय में; **कृष्ण-वियोग**—कृष्ण का विरह; **बाधये**—बाधा देता; **बाहिरे**—बाहरी रूप से; **ना प्रकाशय**—नहीं दिखाते; **भक्त-दुःख-भये**—भक्तों की अप्रसन्नता के भय से।

अनुवाद

यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण के विछोह की पीड़ा होती थी, किन्तु वे अपनी भावनाओं को बाह्य रूप से प्रकट नहीं करते थे, क्योंकि उन्हें भय था कि भक्तगण दुःखी होंगे।

উৎকট বিরহ-দুঃখ যবে বাহিরায় ।
তবে যে বৈকল্য প্রভুর বর্ণন না যায় ॥ ৫ ॥

उत्कट विरह-दुःख य़बे बाहिराय ।
तबे य़े वैकल्य प्रभुर वर्णन ना य़ाय ॥ ५ ॥

उत्कट—तीव्र; **विरह-दुःख**—विरह का दुःख; **य़बे**—जब; **बाहिराय**—प्रकट होता; **तबे**—उस समय; **य़े**—जो; **वैकल्य**—परिवर्तन; **प्रभुर**—महाप्रभु के; **वर्णन ना य़ाय**—वर्णन नहीं किये जा सकते।

अनुवाद

जब कृष्ण के विछोह से उत्पन्न गहन दुःख को महाप्रभु प्रकट करते, तो उनमें जो विकार आते, उनका वर्णन नहीं किया जा सकता।

রামানন্দের কৃষ্ণ-কথা, স্বরূপের গান ।
বিরহ-বেদনায় প্রভুর রাখয়ে পরাণ ॥ ৬ ॥

रामानन्देर कृष्ण-कथा, स्वरूपेर गान ।
विरह-वेदनाय प्रभुर राखये पराण ॥ ६ ॥

रामानन्देर—रामानन्द राय की; **कृष्ण-कथा**—भगवान् कृष्ण की कथाएँ; **स्वरूपेर गान**—स्वरूप दामोदर के गीत; **विरह-वेदनाय**—विरह वेदना के समय पर; **प्रभुर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का; **राखये**—रखते; **पराण**—जीवन।

अनुवाद

जब महाप्रभु को कृष्ण के विछोह की तीव्र पीड़ा का अनुभव होता, तब एकमात्र श्री रामानन्द राय द्वारा कही गई कृष्ण कथा तथा स्वरूप दामोदर के मधुर गीत उन्हें जीवित रखते।

দিনে প্রভু নানা-সঙ্গে হয় অন্য মন ।
রাত্রি-কালে বাড়ে প্রভুর বিরহ-বেদন ॥ ৭ ॥

दिने प्रभु नाना-सङ्गे हय अन्य मन ।
रात्रि-काले बाड़े प्रभुर विरह-वेदन ॥ ७ ॥

दिने—दिन के समय; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नाना-सङ्गे**—अनेक संगियों द्वारा; **हय**—हो जाते; **अन्य**—व्यस्त; **मन**—उनका मन; **रात्रि-काले**—रात को; **बाड़े**—बढ़ जाता; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **विरह-वेदन**—विरह का कष्ट।

अनुवाद

दिन के समय विविध भक्तों की संगति होने से महाप्रभु का मन कुछ दूसरी ओर लगा रहता, किन्तु रात में कृष्ण-विरह की पीड़ा तेजी से बढ़ जाती।

তাঁর সুখ-হেতু সঙ্গে রহে দুই জনা ।
কৃষ্ণ-রস-শ্লোক-গীতে করেন সান্ত্বনা ॥ ৮ ॥

ताँर सुख-हेतु सङ्गे रहे दुइ जना ।
कृष्ण-रस-श्लोक-गीते करेन सान्त्वना ॥ ८ ॥

ताँर सुख-हेतु—उनकी प्रसन्नता के लिए; **सङ्गे**—उनके संग में; **रहे**—रहते; **दुइ जना**—दो व्यक्ति; **कृष्ण-रस**—कृष्ण के दिव्य रसों के; **श्लोक**—श्लोकों; **गीते**—गीतों द्वारा; **करेन सान्त्वना**—वे सांत्वना देते।

अनुवाद

दो व्यक्ति रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी महाप्रभु के साथ रहते, जो उनकी तुष्टि हेतु कृष्णलीला विषयक विविध श्लोक सुनाकर तथा उपयुक्त गीत गाकर उनको शान्त रखते।

সুবল যৈছে পূর্বে কৃষ্ণ-সুখের সহায় ।
গৌর-সুখ-দান-হেতু তৈছে রাম-রায় ॥৯॥

सुबल ग्रैछे पूर्वे कृष्ण-सुखेर सहाय ।
गौर-सुख-दान-हेतु तैछे राम-राय ॥ ९ ॥

सुबल—सुबल, कृष्ण के गोपसखाओं में से एक; **ग्रैछे**—जिस प्रकार; **पूर्वे**—पहले; **कृष्ण-सुखेर**—कृष्ण को सुख देने के लिए; **सहाय**—सहायक; **गौर-सुख-दान-हेतु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को आनन्द देने के लिए; **तैछे**—उसी प्रकार; **राम-राय**—रामानन्द राय।

अनुवाद

पूर्वकाल में जब भगवान् कृष्ण स्वयं उपस्थित थे, तब उनका एक ग्वाल मित्र सुबल उन्हें तब सुख देता, जब वे राधारानी का विरह अनुभव करते। उसी तरह रामानन्द राय श्री चैतन्य महाप्रभु को सुख देने में सहायक बनते।

পূর্বে যৈছে রাধার ললিতা সহায়-প্রধান ।
তৈছে স্বরূপ-গোসাঞি রাখে মহাপ্রভুর প্রাণ ॥১০॥

पूर्वे ग्रैछे राधार ललिता सहाय-प्रधान ।
तैछे स्वरूप-गोसाञि राखे महाप्रभुर प्राण ॥ १० ॥

पूर्वे—पहले; **ग्रैछे**—जिस प्रकार; **राधार**—श्रीमती राधारानी की; **ललिता**—ललिता नामक उनकी सखी; **सहाय-प्रधान**—सर्वोच्च सहायिका; **तैछे**—उसी प्रकार; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **राखे**—रखते; **महाप्रभुर प्राण**—श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन।

अनुवाद

पूर्वकाल में जब श्रीमती राधारानी कृष्ण-वियोग की पीड़ा का

अनुभव करतीं, तब उनकी नित्य सखी ललिता अनेक प्रकार से सहायता करके उन्हें जीवित रखतीं। उसी तरह जब श्री चैतन्य महाप्रभु को राधारानी के भाव आते, तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी उनका जीवन बनाये रखने में उनकी सहायता करते।

এই দুই জনার সৌভাগ্য কহন না যায় ।
প্রভুর 'অন্তরঙ্গ' বলি' যাঁরে লোকে গায় ॥১১॥

एइ दुइ जनार सौभाग्य कहन ना ग्राय ।
प्रभुर 'अन्तरङ्ग' बलि' ग्राँरे लोके गाय ॥ ११ ॥

एइ दुइ जनार—इन दो लोगों का; **सौभाग्य**—सौभाग्य; **कहन ना ग्राय**—वर्णन नहीं किया जा सकता; **प्रभुर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अन्तरङ्ग**—अत्यन्त अन्तरंग संगी; **बलि'**—जैसे; **ग्राँरे**—जिसे; **लोके**—लोग; **गाय**—कहते।

अनुवाद

रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर गोस्वामी के सौभाग्य का वर्णन कर पाना अत्यन्त कठिन है। वे श्री चैतन्य महाप्रभु के घनिष्ठ विश्वसनीय मित्रों के रूप में विख्यात थे।

এই-মত বিহরে গৌর লঞা ভক্ত-গণ ।
রঘুনাথ-মিলন এবে শুন, ভক্ত-গণ ॥১২॥

एइ-मत विहरे गौर लञा भक्त-गण ।
रघुनाथ-मिलन एबे शुन, भक्त-गण ॥ १२ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **विहरे**—आनन्द लेते; **गौर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा भक्त-गण**—अपने भक्तों को साथ लेकर; **रघुनाथ-मिलन**—रघुनाथ दास गोस्वामी से मिलन; **एबे**—अब; **शुन**—सुनिए; **भक्त-गण**—हे भक्तों।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु अपने भक्तों के साथ जीवन का आनन्द लेते थे। हे श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों, अब सुनो कि रघुनाथ दास गोस्वामी किस तरह महाप्रभु से मिले।

পূর্বে শান্তিপুরে রঘুনাথ যবে আইলা ।
মহাপ্রভু কৃপা করি' তাঁরে শিখাইলা ॥ ১৩ ॥

पूर्वे शान्तिपुरे रघुनाथ य्रबे आइला ।
महाप्रभु कृपा करि' ताँरे शिखाइला ॥ १३ ॥

पूर्वे—पहले; **शान्तिपुरे**—शान्तिपुर में; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **य्रबे आइला**—जब वे आये; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **कृपा करि'**—अहैतुकी कृपा दर्शाकर; **ताँरे शिखाइला**—उन्हें शिक्षा दी।

अनुवाद

जब गृहस्थ जीवन के समय रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने शान्तिपुर गये, तब महाप्रभु ने अपनी अहैतुकी कृपावश उन्हें योग्य शिक्षाएँ दीं।

প্রভুর শিক্ষাতে তেঁহো নিজ-ঘরে যায় ।
মর্কট-বৈরাগ্য ছাড়ি' হৈলা 'বিষয়ি-প্রায়' ॥ ১৪ ॥

प्रभुर शिक्षाते तेंहो निज-घरे य्राय ।
मर्कट-वैराग्य छाड़ि' हैला 'विषयि-प्राय' ॥ १४ ॥

प्रभुर शिक्षाते—श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेश द्वारा; **तेंहो**—वे; **निज-घरे य्राय**—अपने घर लौट गये; **मर्कट-वैराग्य**—बन्दर जैसा वैराग्य; **छाड़ि'**—छोड़कर; **हैला**—हो गये; **विषयि-प्राय**—एक विषयी व्यक्ति जैसे।

अनुवाद

तथाकथित वैरागी बनने के स्थान पर रघुनाथ दास महाप्रभु के उपदेशों का अनुसरण करते हुए अपने घर लौटे और विषयी-व्यक्ति की तरह कार्य करने लगे।

ভিতরে বৈরাগ্য, বাহিরে করে সর্ব-কর্ম ।
দেখিয়া ত' মাতা-পিতার আনন্দিত মন ॥ ১৫ ॥

भितरे वैराग्य, बाहिरे करे सर्व-कर्म ।
देखिया त' माता-पितार आनन्दित मन ॥ १५ ॥

भितरे—अपने हृदय में; **वैराग्य**—पूर्ण विरक्ति; **बाहिरे**—बाहरी रूप से; **करे**—करते; **सर्व**—सब; **कर्म**—कार्य; **देखिया**—देखकर; **त'**—निश्चय ही; **माता-पितार**—माता और पिता का; **आनन्दित**—सन्तुष्ट; **मन**—मन।

अनुवाद

रघुनाथ दास अपने गृहस्थ जीवन से भी भीतर से पूरी तरह विरक्त थे, किन्तु उन्होंने अपने वैराग्य को बाहर प्रकट नहीं किया। उल्टे वे सामान्य व्यापारी की तरह कार्य करते रहे। यह देखकर उनके माता-पिता सन्तुष्ट थे।

'मथुरा हैते प्रभु आइला',—वार्ता यबे पाइला ।
प्रभु-पाश चलिवारे उद्योग करिला ॥ १६॥

'मथुरा हैते प्रभु आइला',—वार्ता यबे पाइला ।
प्रभु-पाश चलिबारे उद्योग करिला ॥ १६॥

मथुरा हैते—मथुरा से; **प्रभु आइला**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु लौट आये हैं; **वार्ता**—सन्देश; **यबे पाइला**—जब उन्हें मिला; **प्रभु-पाश**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **चलिबारे**—जाने का; **उद्योग करिला**—प्रयास किया।

अनुवाद

जब उन्हें यह सन्देश मिला कि श्री चैतन्य महाप्रभु मथुरापुरी से लौट आये हैं, तो रघुनाथ दास ने महाप्रभु के चरणों तक जाने का प्रयास किया।

हेन-काले मुलुकेर एक म्लेच्छ अधिकारी ।
सप्तग्राम-मुलुकेर से हय 'चौधुरी' ॥ १७॥

हेन-काले मुलुकेर एक म्लेच्छ अधिकारी ।
सप्तग्राम-मुलुकेर से हय 'चौधुरी' ॥ १७॥

हेन-काले—इस समय; **मुलुकेर**—प्रदेश का; **एक**—एक; **म्लेच्छ**—मुस्लिम; **अधिकारी**—अफसर; **सप्तग्राम-मुलुकेर**—सप्तग्राम नामक स्थान का; **से**—वह व्यक्ति; **हय**—है; **चौधुरी**—कर संग्रहक।

अनुवाद

उस समय एक मुसलमान अधिकारी सप्तग्राम से कर वसूलता था।

तात्पर्य

पहले जब मुसलमान सरकार शासन करती थी, तब कर वसूल करने के लिए नियुक्त व्यक्ति स्थानीय जमींदारों से कर वसूल करता था। वह एकत्रित राशि का एक चौथाई अपने लाभ के रूप में रख लेता और शेष सरकारी खजाने में जमा कर देता था।

हिरण्य-दास मुलुक निल 'मक्करि' करिया ।
तार अधिकार गेल, मरे से देखिया ॥ १८॥

हिरण्य-दास मुलुक निल 'मक्करि' करिया ।
तार अधिकार गेल, मरे से देखिया ॥ १८॥

हिरण्य-दास—रघुनाथ गोस्वामी के ताऊ; **मुलुक निल**—प्रदेश का अधिकार लिया; **मक्करि करिया**—कुछ समझौते द्वारा; **तार अधिकार गेल**—मुस्लिम चौधरी ने अपना पद गवाँ दिया; **मरे से देखिया**—हिरण्य दास से अत्यन्त ईर्ष्या करने लगा।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास के ताऊ हिरण्य दास ने कर वसूलने के लिए सरकार से समझौता किया, तो मुसलमान चौधुरी या कर संग्राहक अपना पद खोने के कारण उससे अत्यधिक ईर्ष्या करने लगा।

बार लक्ष देय राजाय, साधे बिश लक्ष ।
से 'तुरुक्' किछु ना पाञा हैल प्रतिपक्ष ॥ १९॥

बार लक्ष देय राजाय, साधे बिश लक्ष ।
से 'तुरुक्' किछु ना पाञा हैल प्रतिपक्ष ॥ १९॥

बार लक्ष—१,२००,००० सिक्के; **देय**—देते थे; **राजाय**—मुस्लिम राज्य को; **साधे**—एकत्रित करते; **बिश लक्ष**—२०,००,००० सिक्के; **से तुरुक्**—वह तुर्क; **किछु**—कुछ; **ना पाञा**—न पाकर; **हैल प्रतिपक्ष**—उनका शत्रु बन गया।

अनुवाद

हिरण्यदास बीस लाख रुपये एकत्र करते थे, अतएव उन्हें सरकार को पन्द्रह लाख रूपये देने चाहिए थे। किन्तु वे केवल बारह लाख रुपये देते

थे और इस तरह तीन लाख रुपये अधिक लाभ उठाते थे। यह देखकर मुसलमान चौधुरी जो कि तुर्क था उनका प्रतिद्वन्द्वी बन गया।

রাজ-ঘরে কৈফিয়ত্দিয়া উজীরে আনিল ।
হিরণ্য-দাস পলাইল, রঘুনাথেরে বান্ধিল ॥২০॥

राज-घरे कैफियत् दिया उजीरे आनिल ।
हिरण्य-दास पलाइल, रघुनाथेरे बान्धिल ॥ २० ॥

राज-घरे—राजकोष को; **कैफियत् दिया**—एक गुप्त हिसाब भेजकर; **उजीरे आनिल**—अधिकारी मन्त्री को बुला लाया; **हिरण्य-दास पलाइल**—हिरण्य दास भाग गये; **रघुनाथेरे बान्धिल**—उसने रघुनाथ दास को बन्दी बना लिया।

अनुवाद

सरकारी खजाने को गुप्त हिसाब भेजकर चौधुरी कार्यकारी मन्त्री को ले आया। हिरण्यदास को पकड़ने के उद्देश्य से चौधुरी आया, किन्तु वे घर छोड़ चुके थे। अतएव चौधुरी ने रघुनाथ दास को बन्दी बना लिया।

প্রতি-দিন রঘুনাথে করয়ে ভৎর্সনা ।
'বাপ-জ্যেঠারে আন', নহে পাইবা যাতনা ॥২১॥

प्रति-दिन रघुनाथे करये भर्त्सना ।
'बाप-ज्येठारे आन', नहे पाइबा ग्रातना ॥ २१ ॥

प्रति-दिन—रोज; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास को; **करये भर्त्सना**—वह डाँटता; **बाप-ज्येठारे आन**—अपने पिता और ताऊ को लाओ; **नहे**—अन्यथा; **पाइबा ग्रातना**—तुम्हें दण्ड मिलेगा।

अनुवाद

प्रतिदिन वह मुसलमान रघुनाथ दास की भर्त्सना करता और उनसे कहता, "अपने पिता तथा उसके बड़े भाई (ताऊ) को ले आओ, अन्यथा तुम्हें दण्ड दिया जायेगा।"

মারিতে আনয়ে যদি দেখে রঘুনাথে ।
মন ফিরি' যায়, তবে না পারে মারিতে ॥২২॥

मारिते आनये ग्रदि देखे रघुनाथे ।
मन फिरि' ग्राय, तबे ना पारे मारिते ॥ २२ ॥

मारिते—मारने के लिए; **आनये**—लाता; **ग्रदि**—जब; **देखे**—देखता; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास को; **मन**—उसका मन; **फिरि' ग्राय**—बदल जाता; **तबे**—उस समय; **ना पारे मारिते**—वह मार नहीं पाता।

अनुवाद

चौधुरी उन्हें पीटना चाहता था, किन्तु जब वह रघुनाथ के मुख की ओर देखता, तो उसका मन बदल जाता और वह उन्हें पीट नहीं पाता था।

বিশেষে কায়স্থ-বুদ্ধ্যে অন্তরে করে ডর ।
মুখে তর্জে গর্জে, মারিতে সভয় অন্তর ॥২৩॥
विशेषे कायस्थ-बुद्ध्ये अन्तरे करे डर ।
मुखे तर्जे गर्जे, मारिते सभय अन्तर ॥ २३ ॥

विशेषे—विशेष रूप से; **कायस्थ-बुद्ध्ये**—एक कायस्थ जानकर; **अन्तरे**—अपने हृदय में; **करे डर**—भयभीत होता; **मुखे**—अपने मुख से; **तर्जे गर्जे**—डराता; **मारिते**—मारने में; **स-भय**—भय; **अन्तर**—हृदय में।

अनुवाद

निस्सन्देह, वह चौधुरी रघुनाथ दास से भयभीत था, क्योंकि रघुनाथ दास कायस्थ जाति के थे। यद्यपि चौधुरी उसे मुख से डाँटता-डपटता था, किन्तु उन्हें पीटने से डरता था।

तात्पर्य

रघुनाथ दास उच्चकुलीन कायस्थ परिवार के थे। स्थानीय लोगों पर उनका काफी प्रभाव था, इसलिए वह चौधुरी उन्हें पीटने से डरता था। ऊपर से वह रघुनाथ दास को डाँटता-डपटता था, किन्तु उन्हें पीटता नहीं था। भारत में सामान्यतया कायस्थ जाति के लोग अत्यन्त बुद्धिमान तथा व्यापार प्रबन्ध में पटु होते हैं। पहले वे अधिकांशतः सरकारी अफसर थे। उनका उल्लेख याज्ञवल्क्य तक ने किया है, जिसका उद्धरण श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में दिया है :

चाटतष्करदुर्वृतै र्महासाहसिकादिभिः ।
पीड्यमाना प्रजा रक्षेत् कायस्थैश्च विशेषतः ॥

इस श्लोक से प्रतीत होता है कि कायस्थ जाति के सरकारी अधिकारी कभी-कभी नागरिकों को डाँटते-फटकारते थे, अतः राजा का कर्तव्य होता था कि कायस्थों के अत्याचार से जनता की रक्षा करे। बंगाल में कायस्थ जाति का सम्मान प्रायः ब्राह्मणों जैसा होता है, किन्तु उत्तरी भारत में कायस्थों को शूद्र माना जाता है, क्योंकि ये सामान्यतः माँस खाते हैं तथा मदिरा पीते हैं। जो भी हो, इतिहास से यही प्रतीत होता है कि कायस्थ अत्यन्त बुद्धिमान होते हैं। इसीलिए मुसलमान चौधुरी रघुनाथ दास से भयभीत था, क्योंकि वे कायस्थ जाति के थे।

তবে রঘুনাথ কিছু চিন্তিলা উপায় ।
বিনতি করিয়া কহে সেই ম্লেচ্ছ-পায় ॥২৪॥

तबे रघुनाथ किछु चिन्तिला उपाय ।
विनति करिया कहे सेइ म्लेच्छ-पाय ॥ २४॥

तबे—तब; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **किछु**—कुछ; **चिन्तिला**—विचार किया; **उपाय**—उपाय; **विनति करिया**—अत्यन्त विनम्रतापूर्वक; **कहे**—वे कहते हैं; **सेइ म्लेच्छ**—उस मुस्लिम चौधरी के; **पाय**—चरणों में।

अनुवाद

जब यह हो रहा था, तो रघुनाथ दास ने इसका समाधान निकालने की एक युक्ति सोची। अतः उन्होंने मुसलमान चौधरी के चरणों पर यह अनुनय किया।

"আমার পিতা, জ্যেঠা হয় তোমার দুই ভাই ।
ভাই-ভাইয়ে তোমরা কলহ কর সর্বদাই ॥২৫॥

"आमार पिता, ज्येठा हय तोमार दुइ भाइ ।
भाइ-भाइये तोमरा कलह कर सर्वदाइ ॥ २५॥

आमार पिता—मेरे पिता; **ज्येठा**—और उनके बड़े भाई; **हय**—हैं; **तोमार**—आपके;

दुइ भाइ—दो भाई; **भाइ-भाइये**—भाई-भाई के बीच; **तोमरा**—आप सबका; **कलह कर**—झगड़ा; **सर्वदाइ**—सदैव।

अनुवाद

"हे महोदय, मेरे पिता तथा उनके बड़े भाई (ताऊ) दोनों ही आपके भाई हुए। सारे भाई किसी न किसी बात के लिए सदैव झगड़ते आये हैं।

कभु कलह, कभु प्रीति—इहार निश्चय नाइ ।
कालि पुनः तिन भाइ हइबा एक-ठाञि ॥२६॥

कभु कलह, कभु प्रीति—इहार निश्चय नाइ ।
कालि पुनः तिन भाइ हइबा एक-ठाञि ॥ २६ ॥

कभु—कभी; **कलह**—लड़ाई; **कभु**—कभी; **प्रीति**—अति अन्तरंग मैत्रीपूर्ण व्यवहार; **इहार**—इन सबका; **निश्चय नाइ**—कोई निश्चय नहीं; **कालि**—अगले दिन; **पुनः**—फिर; **तिन भाइ**—तीनों भाई; **हइबा**—हो जायेंगे; **एक-ठाञि**—इकट्ठे।

अनुवाद

"कभी भाई-भाई परस्पर लड़ते हैं, तो कभी मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हैं। इसका कोई निश्चय नहीं कि ऐसे बदलाव कब आ जाए। इस तरह मुझे पूरा विश्वास है कि आज आप लड़ रहे हैं, किन्तु कल आप तीनों भाई शान्ति से एक स्थान पर बैठे होंगे।

आमि यैछे पितार, तैछे तोमार बालक ।
आमि तोमार पाल्य, तुमि आमार पालक ॥२७॥

आमि ग्रैछे पितार, तैछे तोमार बालक ।
आमि तोमार पाल्य, तुमि आमार पालक ॥ २७ ॥

आमि—मैं; **ग्रैछे**—जिस प्रकार; **पितार**—अपने पिता का; **तैछे**—उसी प्रकार; **तोमार**—आपका; **बालक**—पुत्र; **आमि**—मैं; **तोमार**—आपका; **पाल्य**—पालन योग्य व्यक्ति; **तुमि**—आप; **आमार**—मेरे; **पालक**—पालक।

अनुवाद

"जिस तरह मैं अपने पिता का पुत्र हूँ, उसी तरह आपका भी हूँ। मैं आपके आश्रित हूँ और आप मेरे पालनकर्ता हैं।

पालक हञा पाल्येरे ताड़िते ना युय़ाय़ ।
तुमि सर्व-शास्त्र जान 'जिन्दा-पीर'-प्राय़'' ॥२८॥

पालक हञा पाल्येरे ताड़िते ना य़ुयाय ।
तुमि सर्व-शास्त्र जान 'जिन्दा-पीर'-प्राय" ॥ २८ ॥

पालक हञा—एक पालक होकर; **पाल्येरे**—आश्रित को; **ताड़िते**—दण्ड देना; **ना य़ुयाय**—अच्छा नहीं है; **तुमि**—आप; **सर्व-शास्त्र**—सभी शास्त्र; **जान**—जानते हैं; **जिन्दा-पीर**—एक जीवित साधु; **प्राय**—के समान।

अनुवाद

"पालनकर्ता के लिए शोभा नहीं देता कि अपने द्वारा पाले जाने वाले व्यक्ति को दण्ड दे। आप सभी शास्त्रों में निपुण हैं। निस्सन्देह, आप एक जीवन्त सन्त के समान हैं।

एत शुनि' सेइ म्लेच्छेर मन आर्द्र हैल ।
दाड़ि वाहि' अश्रु पड़े, काँदिते लागिल ॥२९॥

एत शुनि' सेइ म्लेच्छेर मन आर्द्र हैल ।
दाड़ि वाहि' अश्रु पड़े, काँदिते लागिल ॥ २९ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **सेइ म्लेच्छेर**—उस मुस्लिम का; **मन**—मन; **आर्द्र हैल**—नर्म हो गया; **दादि वाहि'**—उसकी दाढ़ी से बहकर; **अश्रु पड़े**—आँसु गिरने लगे; **काँदिते लागिल**—रोने लगा।

अनुवाद

रघुनाथ दास की याचनापूर्ण वाणी सुनकर उस मुसलमान का हृदय पिघल गया। वह रोने लगा और उसके आँसू उसकी दाढ़ी से लुढ़क पड़े।

म्लेच्छ बले,—''आजि हैते तुमि—मोर 'पुत्र' ।
आजि छाड़ाइमु तोमा' करि' एक सूत्र'' ॥३०॥

म्लेच्छ बले,—"आजि हैते तुमि—मोर 'पुत्र' ।
आजि छाड़ाइमु तोमा' करि' एक सूत्र" ॥ ३० ॥

म्लेच्छ बले—मुस्लिम ने कहा; **आजि हैते**—आज से; **तुमि**—तुम; **मोर पुत्र**—मेरा पुत्र;

आजि—आज; **छाड़ाइमु तोमा'**—मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगा; **करि' एक सूत्र**—किसी न किसी विधि से।

अनुवाद

मुसलमान चौधरी ने रघुनाथ दास से कहा, "आज से तुम मेरे पुत्र हुए। मैं आज तुम्हें किसी न किसी तरह छुड़ाकर रहूँगा।"

উজিরে কহিয়া রঘুনাথে ছাড়াইল ।
প্রীতি করি' রঘুনাথে কহিতে লাগিল ॥ ৩১ ॥

উজিরে কহিয়া রঘুনাথে ছাড়াইল ।
প্রীতি করি' রঘুনাথে কহিতে লাগিল ॥ ৩১ ॥

उजिरे—मन्त्री को; **कहिया**—कहकर; **रघुनाथे छाड़ाइल**—रघुनाथ दास को छुड़वा दिया; **प्रीति करि'**—अत्यन्त स्नेहपूर्वक; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास को; **कहिते लागिल**—कहने लगा।

अनुवाद

मन्त्री को सूचित करके चौधुरी ने रघुनाथ दास को छोड़ दिया और तब उनसे अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहने लगा।

"তোমার জ্যেঠা নির্বুদ্ধি অষ্ট-লক্ষ খায় ।
আমি—ভাগী, আমারে কিছু দিবারে যুয়ায় ॥ ৩২ ॥

"তোমার জ্যেঠা নির্বুদ্ধি অষ্ট-লক্ষ খায় ।
আমি—ভাগী, আমারে কিছু দিবারে যুয়ায় ॥ ৩২ ॥

तोमार ज्येठा—तुम्हारे पिता का बड़ा भाई; **निर्बुद्धि**—बुद्धि विहीन; **अष्ट-लक्ष खाय**—८,००,००० सिक्के खाता है; **आमि**—मैं; **भागी**—भागीदार; **आमारे**—मुझे; **किछु**—कुछ; **दिबारे**—देना; **युयाय**—उचित है।

अनुवाद

उसने कहा, "तुम्हारे पिता का बड़ा भाई (तुम्हारा ताऊ) कम बुद्धि वाला है। वह आठ लाख रुपयों का भोग करता है, किन्तु क्योंकि मैं उसका भागीदार हूँ, अतएव उसे उसका कुछ हिस्सा मुझे भी देना चाहिए।

যাহ তুমি, তোমার জ্যেঠারে মিলাহ আমারে ।
যে-মতে ভাল হয় করুন, ভার দিলুঁ তাঁরে ॥৩৩॥

য়াহ তুমি, তোমার জ্যেঠারে মিলাহ আমারে ।
য়ে-মতে ভাল হয় করুন, ভার দিলুঁ তাঁরে ॥ ३३ ॥

য়াহ—जाओ; **তুমি**—तुम; **তোমার**—अपने; **জ্যেঠারে**—ताऊ का; **মিলাহ আমারে**—मुझसे मिलन करवाओ; **য়ে-মতে**—किसी भी विधि से; **ভাল**—अच्छा; **হয়**—है; **করুন**—उसे करने दो; **ভার দিলুঁ তাঁরে**—मैं पूर्णतया उस पर निर्भर रहूँगा।

अनुवाद

"अब तुम जाकर मेरे तथा अपने ताऊ के बीच भेंट कराओ। वह जो भला समझता हो वही करे। मैं पूरी तरह उसके निर्णय पर आश्रित रहूँगा।

রঘুনাথ আসি' তবে জ্যেঠারে মিলাইল ।
ম্লেচ্ছ-সহিত বশ কৈল—সব শান্ত হৈল ॥৩৪॥

রঘুনাথ আসি' তবে জ্যেঠারে মিলাইল ।
ম্লেচ্ছ-সহিত বশ কৈল—সব শান্ত হৈল ॥ ३४ ॥

রঘুনাথ—रघुनाथ दास ने; **আসি'**—आकर; **তবে**—तब; **জ্যেঠারে মিলাইল**—चौधरी और अपने पिता के बड़े भाई की एक भेंट रखवाई; **ম্লেচ্ছ-সহিত**—मुस्लिम के साथ; **বশ কৈল**—उन्होंने समझौता किया; **সব**—सब कुछ; **শান্ত হৈল**—शान्त हो गया।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने अपने ताऊ तथा चौधरी की भेंट का प्रबन्ध किया। उन्होंने कलह का समाधान कर दिया और सब शान्त हो गया।

এই-মত রঘুনাথের বত্সরেক গেল ।
দ্বিতীয় বত্সরে পলাইতে মন কৈল ॥৩৫॥

এই-মত রঘুনাথের বত্সরেক গেল ।
দ্বিতীয় বত্সরে পলাইতে মন কৈল ॥ ३५ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **রঘুনাথের**—रघुनाथ दास का; **বত্সরেক**—एक वर्ष; **গেল**—बीत गया; **দ্বিতীয় বত্সরে**—अगले साल; **পলাইতে**—घर से भागने का; **মন কৈল**—विचार किया।

अनुवाद

इस तरह रघुनाथ दास ने पूरा एक वर्ष अच्छे व्यापारी प्रबन्धक के रूप में बिताया, किन्तु अगले वर्ष उन्होंने पुनः घर छोड़ने का निश्चय किया।

রাত্রে উঠি' একেলা চলিলা পলাঞা ।
দূর হৈতে পিতা তাঁরে আনিল ধরিয়া ॥৩৬॥

रात्रे उठि' एकेला चलिला पलाञा ।
दूर हैते पिता ताँरे आनिल धरिया ॥ ३६ ॥

रात्रे—रात को; **उठि'**—उठकर; **एकेला**—अकेले; **चलिला**—निकले; **पलाञा**—भागने; **दूर हैते**—कुछ दूरी से; **पिता**—उनके पिता; **ताँरे**—उन्हें; **आनिल**—वापस ले आये; **धरिया**—पकड़कर।

अनुवाद

एक रात वे अकेले उठे और चल पड़े, किन्तु उनके पिता ने दूर स्थान पर उन्हें पकड़ लिया और वे उन्हें लौटा ले आये।

এই-মতে বারে বারে পলায়, ধরি' আনে ।
তবে তাঁর মাতা কহে তাঁর পিতা সনে ॥৩৭॥

एइ-मते बारे बारे पलाय, धरि' आने ।
तबे ताँर माता कहे ताँर पिता सने ॥ ३७॥

एइ-मते—इस प्रकार; **बारे बारे**—बारम्बार; **पलाय**—वे भाग जाते; **धरि' आने**—उन्हें वापस लाते; **तबे**—तब; **ताँर माता**—उनकी माता; **कहे**—कहती है; **ताँर पिता सने**—उनके पिता से।

अनुवाद

यह प्रायः प्रतिदिन का व्यापार बन गया था। रघुनाथ घर से भाग जाते और उनके पिता उन्हें फिर लौटा ले आते। तब रघुनाथ दास की माता ने उनके पिता (अपने पति) से कहा।

"পুত্র 'বাতুল' হইল, ইহায় রাখহ বান্ধিয়া" ।
তাঁর পিতা কহে তারে নির্বিণ্ণ হঞা ॥৩৮॥

"पुत्र 'बातुल' हइल, इहाय राखह बान्धिया" ।
ताँर पिता कहे तारे निर्विण्ण हञा ॥ ३८ ॥

पुत्र—पुत्र; **बातुल हइल**—पागल हो गया है; **इहाय**—उसे; **राखह बान्धिया**—बाँधकर रखो; **ताँर पिता**—उसके पिता; **कहे**—कहते हैं; **तारे**—उसे (माता को); **निर्विण्ण हञा**—बहुत दुःखी होकर।

अनुवाद

माताने कहा, "हमारा पुत्र पागल हो गया है। उसे रस्सी से बाँधकर रखो।" उनके पिता अत्यन्त दुःखी होकर अपनी पत्नी से बोले।

''इन्द्र-सम ऐश्वर्य, स्त्री अप्सरा-सम ।
ए सब बान्धिते नारिलेक याँर मन ॥ ३७ ॥
"इन्द्र-सम ऐश्वर्य, स्त्री अप्सरा-सम ।
ए सब बान्धिते नारिलेक याँर मन ॥ ३९ ॥

इन्द्र-सम—स्वर्ग के राजा इन्द्र के समान; **ऐश्वर्य**—भौतिक ऐश्वर्य; **स्त्री**—पत्नी; **अप्सरा-सम**—स्वर्ग की अप्सरा के समान; **ए सब**—ये सब; **बान्धिते**—बाँधने में; **नारिलेक**—समर्थ नहीं हुए; **याँर मन**—जिसका मन।

अनुवाद

"हमारे पुत्र रघुनाथ दास के पास स्वर्ग के राजा इन्द्र के जैसा ऐश्वर्य है और उसकी पत्नी अप्सरा जैसी सुन्दर है। फिर भी यह सब उसके मन को बाँध नहीं सका।

दड़ির বন্ধনে তাঁরে রাখিবা কে-মতে? ।
জন্ম-দাতা পিতা নারে 'প্রারব্ধ' খণ্ডাইতে ॥ ৪০ ॥
दड़िर बन्धने ताँरे राखिबा के-मते? ।
जन्म-दाता पिता नारे 'प्रारब्ध' खण्डाइते ॥ ४० ॥

दड़िर बन्धने—रस्सियों के बन्धनों द्वारा; **ताँरे**—उसे; **राखिबा**—तुम रखोगी; **के मते**—कैसे; **जन्म-दाता पिता**—जन्म देने वाला पिता; **नारे**—समर्थ नहीं है; **प्रारब्ध**—पूर्व कर्मों का फल; **खण्डाइते**—नष्ट करने में।

अनुवाद

"तो फिर हम इस बालक को रस्सियों से बाँधकर घर पर कैसे रख सकते हैं? किसी के पिता के लिए भी यह सम्भव नहीं है कि किसी के विगत कर्मों के फल को निरस्त कर दे।

চৈতন্য-চন্দ্রের কৃপা হঞাছে ইঁহারে ।
চৈতন্য-চন্দ্রের 'বাতুল' কে রাখিতে পারে?'' ॥ ৪১ ॥

চৈতন্য-চন্দ্রের কৃপা হঞাছে ইঁহারে ।
চৈতন্য-চন্দ্রের 'বাতুল' কে রাখিতে পারে?" ॥ ৪১ ॥

চৈতন্য-চন্দ্রের—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की; **কৃপা**—कृपा; **হঞাছে ইঁহারে**—इस पर हो गई है; **চৈতন্য-চন্দ্রের**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के; **বাতুল**—पागल को; **কে**—कौन; **রাখিতে পারে**—रख सकता है।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस पर पूर्ण कृपा की है। चैतन्यचन्द्र के पागल को घर पर कौन रख सकता है?

তবে রঘুনাথ কিছু বিচারিলা মনে ।
নিত্যানন্দ-গোসাঞির পাশ চলিলা আর দিনে ॥ ৪২ ॥

তবে রঘুনাথ কিছু বিচারিলা মনে ।
নিত্যানন্দ-গোসাঞির পাশ চলিলা আর দিনে ॥ ৪২ ॥

তবে—तत्पश्चात्; **রঘুনাথ**—रघुनाथ दास ने; **কিছু**—कुछ; **বিচারিলা মনে**—अपने मन में विचार किया; **নিত্যানন্দ-গোসাঞির পাশ**—नित्यानन्द गोसाईं के पास; **চলিলা**—गये; **আর দিনে**—अगले दिन।

अनुवाद

तब रघुनाथ दास ने अपने मन में कुछ विचार किया और अगले दिन वे नित्यानन्द गोसांइ के पास गये।

পানিহাটি-গ্রামে পাইলা প্রভুর দরশন ।
কীর্তনীয়া সেবক সঙ্গে আর বহু-জন ॥ ৪৩ ॥

पानिहाटि-ग्रामे पाइला प्रभुर दरशन ।
कीर्तनीया सेवक सङ्गे आर बहु-जन ॥ ४३ ॥

पानिहाटि-ग्रामे—पाणिहाटि नामक गाँव में; **पाइला**—पाए; **प्रभुर दरशन**—नित्यानन्द प्रभु के दर्शन; **कीर्तनीया सेवक**—संकीर्तन करने वाले और सेवक; **सङ्गे**—साथ; **आर**—और; **बहु-जन**—अन्य अनेक लोग।

अनुवाद

पानिहाटि गाँव में रघुनाथ दास की भेंट नित्यानन्द प्रभु से हुई, जिनके साथ अनेक कीर्तन करने वाले, सेवक तथा अन्य लोग थे।

गङ्गा-तीरे वृक्ष-मूले पिण्डार उपरे ।
वसियाछेन—येन कोटी सूर्योदय करे ॥ ४४ ॥

गङ्गा-तीरे—गंगा के किनारे; **वृक्ष-मूले**—एक वृक्ष के नीचे; **पिण्डार उपरे**—एक शिला के ऊपर; **वसियाछेन**—बैठे हुए; **येन**—जैसे; **कोटी सूर्य**—करोड़ों सूर्य; **उदय करे**—उदय हो रहे हों।

अनुवाद

गंगानदी के तट पर एक वृक्ष के नीचे एक शिला पर बैठे हुए नित्यानन्द प्रभु करोड़ों उदय होते सूर्यों के समान तेज युक्त प्रतीत हो रहे थे।

तले उपरे बहु-भक्त हञाछे वेष्टित ।
देखि' प्रभुर प्रभाव रघुनाथ—विस्मित ॥ ४५ ॥

तले—भूमि के; **उपरे**—ऊपर; **बहु-भक्त**—अनेक भक्त; **हञाछे वेष्टित**—वे घिरे हुए थे; **देखि'**—देखकर; **प्रभुर प्रभाव**—नित्यानन्द प्रभु का प्रभाव; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **विस्मित**—विस्मित हो गये।

अनुवाद

उन्हें घेरकर भूमि पर अनेक भक्त बैठे हुए थे। नित्यानन्द प्रभु के प्रभाव को देखकर रघुनाथ दास आश्चर्यचकित हो गये।

দণ্ডবৎ হঞা সেই পড়িলা কত-দূরে ।
সেবক কহে,—'রঘুনাথ দণ্ডবত্করে' ॥ ৪৬ ॥

दण्डवत् हञा सेइ पड़िला कत-दूरे ।
सेवक कहे,—'रघुनाथ दण्डवत् करे' ॥ ४६ ॥

दण्डवत् हञा—एक दण्ड के समान गिरकर; **सेइ**—वे; **पड़िला कत-दूरे**—दूर से गिरते हैं; **सेवक कहे**—नित्यानन्द प्रभु के सेवक ने कहा; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **दण्डवत् करे**—प्रणाम कर रहा है।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने दूर स्थान पर ही दण्ड की तरह गिरकर नमस्कार किया और नित्यानन्द प्रभु के सेवक ने इंगित किया, "रघुनाथ दास आपको नमस्कार कर रहा है।"

শুনি' প্রভু কহে,—"চোরা দিলি দরশন ।
আয়, আয়, আজি তোর করিমু দণ্ডন" ॥ ৪৭ ॥

शुनि' प्रभु कहे,—"चोरा दिलि दरशन ।
आय, आय, आजि तोर करिमु दण्डन" ॥ ४७ ॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभु कहे**—नित्यानन्द प्रभु ने कहा; **चोरा**—चोर; **दिलि दरशन**—तुम मुझे मिलने आये हो; **आय आय**—इधर आओ, इधर आओ; **आजि**—आज; **तोर**—तुम्हें; **करिमु**—मैं दूँगा; **दण्डन**—दण्ड।

अनुवाद

यह सुनकर नित्यानन्द प्रभु ने कहा, "तुम चोर हो। अब तुम मुझे मिलने आये हो। यहाँ आओ, यहाँ आओ। आज मैं तुम्हें दण्ड दूँगा!"

প্রভু বোলায়, তেঁহো নিকটে না করে গমন ।
আকর্ষিয়া তাঁর মাথে প্রভু ধরিলা চরণ ॥ ৪৮ ॥

प्रभु बोलाय, तेंहो निकटे ना करे गमन ।
आकर्षिया ताँर माथे प्रभु धरिला चरण ॥ ४८ ॥

प्रभु बोलाय—प्रभु बुलाते हैं; **तेंहो**—वे; **निकटे**—पास; **ना करे गमन**—नहीं आते; **आकर्षिया**—उन्हें पास बुलाकर; **ताँर माथे**—उनके सिर पर; **प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु; **धरिला चरण**—अपने चरण रखते हैं।

अनुवाद

प्रभु ने उन्हें बुलाया, किन्तु रघुनाथ दास उनके निकट नहीं गये। तब प्रभु ने उन्हें बलपूर्वक पकड़ लिया और उनके सिर पर अपना चरणकमल रख दिया।

কৌতুকী নিত্যানন্দ সহজে দয়াময় ।
রঘুনাথে কহে কিছু হঞা সদয় ॥ ৪৯ ॥
कौतुकी नित्यानन्द सहजे दयामय ।
रघुनाथे कहे किछु हञा सदय ॥ ४९ ॥

कौतुकी—अत्यत विनोदी; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द; **सहजे**—स्वभाव से; **दया-मय**—अत्यन्त दयालु; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास से; **कहे**—कहते हैं; **किछु**—कुछ; **हञा स-दय**—कृपापूर्वक।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु स्वभाव से अत्यन्त दयालु तथा विनोदी थे। दयालु होने के कारण वे रघुनाथ दास से इस प्रकार बोले।

"নিকটে না আইস, চোরা, ভাগ' দূরে দূরে ।
আজি লাগ্পাঞাছি, দণ্ডিমু তোমারে ॥ ৫০ ॥
"निकटे ना आइस, चोरा, भाग' दूरे दूरे ।
आजि लाग्पाञाछि, दण्डिमु तोमारे ॥ ५० ॥

निकटे—समीप; **ना आइस**—तुम नहीं आते; **चोरा**—चोर; **भाग'**—तुम भाग जाते हो; **दूरे दूरे**—दूर; **आजि**—आज; **लाग् पाञाछि**—मैंने पकड़ लिया; **दण्डिमु तोमारे**—मैं तुम्हें दण्ड दूँगा।

अनुवाद

"तुम चोर की भाँति हो, क्योंकि पास आने के बदले तुम दूर रहते हो। अब चूँकि मैंने तुम्हें पकड़ लिया है, इसलिए तुम्हें दण्ड दूँगा।

दधि, चिड़ा भक्षण कराह मोर गणे'' ।
शुनि' आनन्दित हैल रघुनाथ मने ॥५१॥

दधि, चिड़ा भक्षण कराह मोर गणे" ।
शुनि' आनन्दित हैल रघुनाथ मने ॥५१॥

दधि—दही; **चिड़ा**—चिड़ा; **भक्षण कराह**—खिलाओ; **मोर गणे**—मेरे संगियों को; **शुनि'**—सुनकर; **आनन्दित हैल**—अत्यन्त प्रसन्न हो गये; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **मने**—मन में।

अनुवाद

तुम उत्सव मनाओ और मेरे सभी संगियों को दही तथा चिउड़ा खिलाओ।" यह सुनकर रघुनाथ दास अत्यधिक प्रसन्न हुए।

सेइ-क्षणे निज-लोक पाठाइला ग्रामे ।
भक्ष्य-द्रव्य लोक सब ग्राम हैते आने ॥५२॥

सेइ-क्षणे निज-लोक पाठाइला ग्रामे ।
भक्ष्य-द्रव्य लोक सब ग्राम हैते आने ॥५२॥

सेइ-क्षणे—तुरन्त; **निज-लोक**—अपने सेवकों को; **पाठाइला ग्रामे**—उन्होंने समीप के गाँव में भेजा; **भक्ष्य-द्रव्य**—खाद्य पदार्थ; **लोक सब**—सभी लोग; **ग्राम हैते**—गाँव से; **आने**—लाए।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने तुरन्त ही अपने आदमियों को समस्त प्रकार की खाद्य वस्तुएँ खरीदकर लाने के लिए गाँव में भेजा।

चिड़ा, दधि, दुग्ध, सन्देश, आर चिनि, कला ।
सब द्रव्य आनाञा चौदिके धरिला ॥५३॥

चिड़ा, दधि, दुग्ध, सन्देश, आर चिनि, कला ।
सब द्रव्य आनाञा चौदिके धरिला ॥ ५३ ॥

चिड़ा—चिड़ा; **दधि**—दही; **दुग्ध**—दूध; **सन्देश**—सन्देश (एक मिठाई); **आर**—और; **चिनि**—शक्कर; **कला**—केला; **सब**—सभी; **द्रव्य**—पदार्थ; **आनाञा**—मँगाकर; **चौदिके**—चारों ओर; **धरिला**—रख दिये।

अनुवाद

रघुनाथ दास चिउड़ा, दही, दूध, मिठाइयाँ, चीनी, केले तथा अन्य खाद्य सामग्रियाँ ले आये और उन्हें चारों ओर रख दिया।

'महोत्सव'-नाम शुनि' ब्राह्मण-सज्जन ।
आसिते लागिल लोक असङ्ख्य-गणन ॥ ५४ ॥
'महोत्सव'-नाम शुनि' ब्राह्मण-सज्जन ।
आसिते लागिल लोक असङ्ख्य-गणन ॥ ५४ ॥

महोत्सव—महोत्सव; **नाम**—नाम; **शुनि**—सुनकर; **ब्राह्मण-सत्-जन**—ब्राह्मण और अन्य सज्जन; **आसिते लागिल**—आने लगे; **लोक**—लोग; **असङ्ख्य-गणन**—असंख्य।

अनुवाद

ज्योंही लोगों ने सुना कि उत्सव होने जा रहा है, त्योंही सभी प्रकार के ब्राह्मण तथा अन्य सज्जन पधारने लगे। इस तरह से असंख्य लोग इकट्ठे हो गये।

आर ग्रामान्तर हैते सामग्री आनिल ।
शत दुइ-चारि होल्ला ताँहा आनाइल ॥ ५५ ॥
आर ग्रामान्तर हैते सामग्री आनिल ।
शत दुइ-चारि होल्ला ताँहा आनाइल ॥ ५५ ॥

आर—तथा; **ग्राम-अन्तर हैते**—अन्य गावों से; **सामग्री**—सामान; **आनिल**—लाकर; **शत**—सौ; **दुइ-चारि**—दो से चार; **होल्ला**—मिट्टी के गोल घड़े; **ताँहा**—वहाँ; **आनाइल**—मंगवाएँ।

अनुवाद

भीड़ बढ़ती देखकर रघुनाथ दास ने अन्य गाँवों से और खाद्य पदार्थ

मँगाने का प्रबन्ध किया। वे दो-चार सौ बड़े गोल मिट्टी के घड़े भी ले आये।

বড় বড় মৃৎকুণ্ডিকা আনাইল পাঁচ সাতে ।
এক বিপ্র প্রভু লাগি' চিড়া ভিজায় তাতে ॥৫৬॥

बड़ बड़ मृत्कुण्डिका आनाइल पाँच साते ।
एक विप्र प्रभु लागि' चिड़ा भिजाय ताते ॥ ५६ ॥

बड़ बड़—बड़े बड़े; **मृत्-कुण्डिका**—मिट्टी के बर्तन; **आनाइल**—मंगवाएँ; **पाँच साते**—पाँच या सात; **एक विप्र**—एक ब्राह्मण; **प्रभु लागि'**—नित्यानन्द प्रभु के लिए; **चिड़ा**—चिड़ा; **भिजाय**—भिगोने लगा; **ताते**—उनमें।

अनुवाद

उन्होंने पाँच-सात बड़े-बड़े मिट्टी के पात्र भी मंगवाये और एक ब्राह्मण इन पात्रों में नित्यानन्द प्रभु की तुष्टि हेतु चिउड़ा भिगोने लगा।

এক-ঠাঞি তপ্ত-দুগ্ধে চিড়া ভিজাঞা ।
অর্দ্ধেক ছানিল দধি, চিনি, কলা দিয়া ॥৫৭॥

एक-ठाञि तप्त-दुग्धे चिड़ा भिजाञा ।
अर्धेक छानिल दधि, चिनि, कला दिया ॥ ५७ ॥

एक-ठाञि—एक तरफ; **तप्त-दुग्धे**—गर्म दूध में; **चिड़ा**—चिड़ा; **भिजाञा**—भिगोया; **अर्धेक**—उसका आधा; **छानिल**—मिलाया; **दधि**—दही; **चिनि**—शक्कर; **कला**—केला; **दिया**—डाल दिया।

अनुवाद

एक स्थान पर इन बड़े पात्रों में गर्म दूध में चिउड़ा भिगोया गया। तब आधा चिउड़ा दही, चीनी तथा केलों के साथ मिलाया गया।

আর অর্দ্ধেক ঘনাবৃত-দুগ্ধেতে ছানিল ।
চাঁপা-কলা, চিনি, ঘৃত, কর্পূর তাতে দিল ॥৫৮॥

आर अर्धेक घनावृत-दुग्धेते छानिल ।
चाँपा-कला, चिनि, घृत, कर्पूर ताते दिल ॥ ५८ ॥

आर अर्धेक—आधा; **घन-आवृत**—गाढ़े; **दुग्धेते**—दूध में; **छानिल**—मिलाया; **चाँपा-कला**—चांपा केला (एक विशेष प्रकार का केला); **चिनि**—शक्कर; **घृत**—घी; **कर्पूर**—कपूर; **ताते दिल**—उसमें डाल दिया।

अनुवाद

आधे भाग को गाढ़े दूध में तथा विशेष प्रकार के केले में, जो चाँपा-कला कहलाता है, मिलाया गया। तब चीनी, घी तथा कपूर डाला गया।

धुति परि' प्रभु यदि पिण्डाते वसिला ।
सात-कुण्डी विप्र ताँर आगेते धरिला ॥५९॥

धुति परि' प्रभु यदि पिण्डाते वसिला ।
सात-कुण्डी विप्र ताँर आगेते धरिला ॥५९॥

धुति परि'—नये वस्त्र पहनकर; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द; **यदि**—जब; **पिण्डाते वसिला**—एक उच्च आसन पर बैठे; **सात-कुण्डी**—सात बड़े-बड़े मिट्टी के घड़े; **विप्र**—ब्राह्मण ने; **ताँर आगेते**—उनके सामने; **धरिला**—रख दिये।

अनुवाद

जब नित्यानन्द प्रभु अपनी वस्त्र बदल चुके और चबूतरे पर बैठ गये, तब वह ब्राह्मण उनके सामने सात बड़े-बड़े पात्र ले आया।

चबुतरा-उपरे यत प्रभुर निज-गणे ।
बड़ बड़ लोक वसिला मण्डली-रचने ॥६०॥

चबुतरा-उपरे यत प्रभुर निज-गणे ।
बड़ बड़ लोक वसिला मण्डली-रचने ॥६०॥

चबुतरा-उपरे—उच्च स्थान पर; **यत**—सभी; **प्रभुर निज-गणे**—प्रभु के अति अन्तरंग साथी; **बड़ बड़ लोक**—बड़े बड़े लोग; **वसिला**—बैठ गये; **मण्डली-रचने**—एक गोल घेरा बनाकर।

अनुवाद

इस चबूतरे पर श्री नित्यानन्द प्रभु के सभी सर्वाधिक प्रमुख संगी तथा साथ ही अन्य बड़े लोग उनके चारों ओर एक गोलाकार में बैठ गये।

রামদাস, সুন্দরানন্দ, দাস-গদাধর ।
মুরারি, কমলাকর, সদাশিব, পুরন্দর ॥৬১॥

रामदास, सुन्दरानन्द, दास-गदाधर ।
मुरारि, कमलाकर, सदाशिव, पुरन्दर ॥६१॥

रामदास—रामदास; **सुन्दरानन्द**—सुन्दरानन्द; **दास-गदाधर**—गदाधर दास; **मुरारि**—मुरारि; **कमलाकर**—कमलाकर; **सदाशिव**—सदाशिव; **पुरन्दर**—पुरन्दर।

अनुवाद

इनमें रामदास, सुन्दरानन्द, गदाधर दास, मुरारि, कमलाकर, सदाशिव तथा पुरन्दर सम्मिलित थे।

ধনঞ্জয়, জগদীশ, পরমেশ্বর-দাস ।
মহেশ, গৌরীদাস, হোড়-কৃষ্ণদাস ॥৬২॥

धनञ्जय, जगदीश, परमेश्वर-दास ।
महेश, गौरीदास, होड़-कृष्णदास ॥६२॥

धनञ्जय—धनंजय; **जगदीश**—जगदीश; **परमेश्वर-दास**—परमेश्वर दास; **महेश**—महेश; **गौरीदास**—गौरीदास; **होड़-कृष्णदास**—होड़ कृष्णदास।

अनुवाद

धनंजय, जगदीश, परमेश्वर दास, महेश, गौरीदास तथा होड़ कृष्णदास भी उसमें थे।

উদ্ধারণ দত্ত আদি যত নিজ-গণ ।
উপরে বসিলা সব, কে করে গণন? ॥৬৩॥

उद्धारण दत्त आदि यत निज-गण ।
उपरे वसिला सब, के करे गणन? ॥६३॥

उद्धारण दत्त—उद्धारण दत्त; **आदि**—और ऐसे अन्य व्यक्ति; **यत निज गण**—सभी अन्तरंग लोग; **उपरे**—ऊपर; **वसिला**—बैठ गये; **सब**—सभी; **के**—कौन; **करे गणन**—गिन सकता है।

अनुवाद

इसी तरह उद्धारण दत्त ठाकुर तथा नित्यानन्द प्रभु के अन्य निजी

संगी उनके साथ उस चबूतरे के ऊपर बैठे। उन सब की गणना कोई नहीं कर सकता था।

तात्पर्य

यहाँ पर उल्लिखित भक्तों का वर्णन श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने अपने *अनुभाष्य* में किया है। अधिक जानकारी के लिए आदिलीला के निम्नलिखित सन्दर्भों को देखें। रामदास १०.११६-११८, ११.१३-१६। सुन्दरानन्द ११.२३, गदाधर दास १०.५३, ११.१३-१५ तथा ११.१७। यहाँ पर उल्लिखित मुरारि, मुरारि गुप्त से भिन्न हैं। उनका पूरा नाम मुरारि चैतन्य दास है और वे नित्यानन्द प्रभु के निजी पार्षद हैं। इसी तरह श्लोक ११.२० भी देखें। कमलाकर ११.२४, सदाशिव ११.३८, पुरन्दर ११.२८, धनंजय ११.३१, जगदीश ११.३०, परमेश्वर ११.२९, महेश ११.३२, गौरीदास ११.२६, होड़ कृष्णदास ११.४७ तथा उद्धारण दत्त ठाकुर ११.४१।

শুনি' পণ্ডিত ভট্টাচার্য যত বিপ্র আইলা ।
মান্য করি' প্রভু সবারে উপরে বসাইলা ॥ ৬৪ ॥

शुनि' पण्डित भट्टाचार्य्य यत विप्र आइला ।
मान्य करि' प्रभु सबारे उपरे वसाइला ॥ ६४ ॥

शुनि'—सुनकर; **पण्डित भट्टाचार्य्य**—विद्वान और पुजारी; **यत**—सभी; **विप्र**—ब्राह्मण; **आइला**—आ गये; **मान्य करि'**—सम्मान देकर; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु ने; **सबारे**—उन सभी को; **उपरे वसाइला**—ऊपर बिठाया।

अनुवाद

उत्सव के विषय में सुनकर सभी प्रकार के विद्वान, ब्राह्मण तथा पुरोहित वहाँ आये। भगवान् नित्यानन्द ने उन सबका सम्मान किया और अपने साथ चबूतरे पर बैठाया।

দুই দুই মৃৎকুণ্ডিকা সবার আগে দিল ।
একে দুগ্ধ-চিড়া, আরে দধি-চিড়া কৈল ॥ ৬৫ ॥

दुइ दुइ मृत्कुण्डिका सबार आगे दिल ।
एके दुग्ध-चिड़ा, आरे दधि-चिड़ा कैल ॥ ६५ ॥

दुइ दुइ—दो-दो; **मृत्-कुण्डिका**—मिट्टी के पात्र; **सबार आगे**—सभी के सामने; **दिल**—दिये; **एके**—एक में; **दुग्ध-चिड़ा**—चिड़ा और दूध का मिश्रण; **आरे**—दूसरे में; **दधि-चिड़ा**—चिड़ा और दही; **कैल**—डाला।

अनुवाद

हर एक को दो दो मिट्टी के पात्र दिये गये। एक में चिउड़ा के साथ गाढ़ा दूध रखा था और दूसरे में दही के साथ चिउड़ा था।

আর যত লোক সব চৌতরা-তলানে ।
মণ্ডলী-বন্ধে বসিলা, তার না হয় গণনে ॥৬৬॥

आर ग्रत लोक सब चौतरा-तलाने ।
मण्डली-बन्धे वसिला, तार ना हय गणने ॥ ६६ ॥

आर—अन्य; **ग्रत**—जितने भी; **लोक**—लोग; **सब**—सब; **चौतरा-तलाने**—मंच के नीचे; **मण्डली-बन्धे**—मंडली बनाकर; **वसिला**—बैठ गये; **तार**—उनकी; **ना हय गणने**—गिनती नहीं की जा सकती थी।

अनुवाद

अन्य सारे लोग चबूतरे के चारों ओर मण्डली बनाकर बैठे। कोई यह नहीं गिन सका कि कुल कितने लोग थे।

একেক জনারে দুই দুই হোল্না দিল ।
দধি-চিড়া দুগ্ধ-চিড়া, দুইতে ভিজাইল ॥৬৭॥

एकेक जनारे दुइ दुइ होल्ना दिल ।
दधि-चिड़ा दुग्ध-चिड़ा, दुइते भिजाइल ॥ ६७ ॥

एकेक जनारे—उनमें से प्रत्येक को; **दुइ दुइ**—दो दो; **होल्ना दिल**—मिट्टी के पात्र दिये गये; **दधि-चिड़ा**—चिड़ा और दही; **दुग्ध-चिड़ा**—चिड़ा गाढ़े दूध के साथ; **दुइते**—दो पात्रों में; **भिजाइल**—भिगोये गये।

अनुवाद

हर एक को दो दो मिट्टी के पात्र दिये गये—एक में दही में भिगोया चिउड़ा था और दूसरे में गाढ़े दूध में भिगोया चिउड़ा था।

কোন কোন বিপ্র উপরে স্থান না পাঞা ।
দুই হোল্লায় চিড়া ভিজায় গঙ্গা-তীরে গিয়া ॥৬৮॥

কোন কোন বিপ্র উপরে স্থান না পাঞা ।
দুই হোল্লায় চিড়া ভিজায় গঙ্গা-তীরে গিয়া ॥ ৬৮ ॥

কোন কোন—কুछ; **বিপ্র**—ব্রাহ্মণ; **উপরে**—মंच पर; **স্থান না পাঞা**—स्थान न पाकर; **দুই হোল্লায়**—दो पात्रों में; **চিড়া ভিজায়**—चिड़ा भिगोकर; **গঙ্গা-তীরে**—गंगा के किनारे; **গিয়া**—गये।

अनुवाद

कुछ ब्राह्मण जिन्हें चबूतरे पर स्थान नहीं मिल पाया, अपने दो-दो मिट्टी के पात्र लेकर गंगा के किनारे चले गये और वहीं अपना चिउड़ा भिगोया।

তীরে স্থান না পাঞা আর কত জন ।
জলে নামি' দধি-চিড়া করয়ে ভক্ষণ ॥৬৯॥

তীরে স্থান না পাঞা আর কত জন ।
জলে নামি' দধি-চিড়া করয়ে ভক্ষণ ॥ ৬৯ ॥

তীরে—किनारे पर; **স্থান**—स्थान; **না পাঞা**—न पाकर; **আর**—अन्य; **কত**—कुछ; **জন**—व्यक्ति; **জলে নামি'**—पानी में उतरकर; **দধি-চিড়া**—दही और चिड़ा; **করয়ে ভক্ষণ**—खाने लगे।

अनुवाद

अन्य लोग जिन्हें गंगा के किनारे भी स्थान नहीं मिल सका, वे जल में प्रवेश कर गये और वहीं दोनों प्रकार का चिउड़ा खाने लगे।

কেহ উপরে, কেহ তলে, কেহ গঙ্গা-তীরে ।
বিশ-জন তিন-ঠাঞি পরিবেশন করে ॥৭০॥

কেহ উপরে, কেহ তলে, কেহ গঙ্গা-তীরে ।
বিশ-জন তিন-ঠাঞি পরিবেশন করে ॥ ৭০ ॥

কেহ উপরে—कुछ मंच पर; **কেহ তলে**—कुछ मंच के नीचे; **কেহ গঙ্গা-তীরে**—कुछ गंगा

किनारे; **बिश-जन**—बीस लोग; **तिन-ठाञि**—तीन स्थानों पर; **परिवेशन करे**—बाँट रहे थे।

अनुवाद

इस तरह कुछ तो चबूतरे के ऊपर बैठे, कुछ चबूतरे के नीचे और कुछ गंगा के किनारे बैठे और उन सबको भोजन बाँटने वाले बीस व्यक्तियों द्वारा दो-दो पात्र दिये गये।

হেন-কালে আইলা তথা রাঘব পণ্ডিত ।
হাসিতে লাগিলা দেখি' হঞা বিস্মিত ॥৭১॥

হেন-কালে আইলা তথা রাঘব পণ্ডিত ।
হাসিতে লাগিলা দেখি' হঞা বিস্মিত ॥৭১॥

হেন-কালে—इस समय; **আইলা**—आ गये; **তথা**—वहाँ; **রাঘব পণ্ডিত**—राघव पण्डित नामक महान् विद्वान; **হাসিতে লাগিলা**—हँसने लगे; **দেখি'**—देखकर; **হঞা বিস্মিত**—हैरान होकर।

अनुवाद

उसी समय राघव पण्डित वहाँ आ गये। वह स्थिति को देखकर अत्यन्त आश्चर्य से हँसने लगे।

নি-সক্কি নানা-মত প্রসাদ আনিল ।
প্রভুরে আগে দিয়া ভক্ত-গণে বাঁটি দিল ॥৭২॥

নি-সক্কি নানা-মত প্রসাদ আনিল ।
প্রভুরে আগে দিয়া ভক্ত-গণে বাঁটি দিল ॥৭২॥

নি-সক্কি—घी में पका हुआ भोजन; **নানা-মত**—अनेक प्रकार के; **প্রসাদ**—भगवान् का प्रसाद; **আনিল**—वे लाये; **প্রভুরে আগে**—नित्यानन्द प्रभु के समक्ष; **দিয়া**—रखकर; **ভক্ত-গণে**—सभी भक्तों को; **বাঁটি দিল**—बाँटा।

अनुवाद

वे अपने साथ घी में पकाये हुए अनेक प्रकार के पकवान लाए थे, जिन्हें उन्होंने नित्यानन्द प्रभु को भेंट किया। यह प्रसाद पहले नित्यानन्द प्रभु के समक्ष रखा गया और तब भक्तों में वितरित कर दिया गया।

প্রভুরে কহে,—"তোমা লাগি' ভোগ লাগাইল ।
তুমি ইহাঁ উৎসব কর, ঘরে প্রসাদ রহিল" ॥৭৩॥

প্রভুরে কহে,—"তোমা লাগি' ভোগ লাগাইল ।
তুমি ইহাঁ উৎসব কর, ঘরে প্রসাদ রহিল" ॥৭৩॥

প্রভুরে কহে—उन्होंने नित्यानन्द प्रभु से कहा; **তোমা লাগি'**—आपके लिए; **ভোগ লাগাইল**—मैंने श्री विग्रह को भोग अर्पित किया; **তুমি**—आप; **ইহাঁ**—यहाँ; **উৎসব কর**—एक उत्सव में व्यस्त हैं; **ঘরে**—घर पर; **প্রসাদ**—प्रसाद; **রহিল**—पड़ा है।

अनुवाद

राघव पण्डित ने नित्यानन्द प्रभु से कहा, "हे महोदय, मैं आपके लिए पहले ही भोजन अर्चाविग्रह को अर्पित कर चुका हूँ, किन्तु आप यहाँ उत्सव में लगे हैं, इसलिए भोजन अछूता पड़ा है।"

প্রভু কহে,—"এ-দ্রব্য দিনে করিয়ে ভোজন ।
রাত্র্যে তোমার ঘরে প্রসাদ করিমু ভক্ষণ ॥৭৪॥

প্রভু কহে,—"এ-দ্রব্য দিনে করিয়ে ভোজন ।
রাত্র্যে তোমার ঘরে প্রসাদ করিমু ভক্ষণ ॥৭৪॥

প্রভু কহে—नित्यानन्द प्रभु ने कहा; **এ-দ্রব্য**—यह भोजन; **দিনে**—दिन के समय; **করিয়ে ভোজন**—मुझे खाने दो; **রাত্র্যে**—रात को; **তোমার ঘরে**—तुम्हारे घर पर; **প্রসাদ**—प्रसाद; **করিমু ভক্ষণ**—मैं खाऊँगा।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने उत्तर दिया, "दिन में मुझे यह सारा भोजन खाने दो और रात में मैं तुम्हारे घर पर भोजन करूँगा।

গোপ-জাতি আমি বহু গোপ-গণ সঙ্গে ।
আমি সুখ পাই এই পুলিন-ভোজন-রঙ্গে" ॥৭৫॥

গোপ-জাতি আমি বহু গোপ-গণ সঙ্গে ।
আমি সুখ পাই এই পুলিন-ভোজন-রঙ্গে" ॥৭৫॥

গোপ-জাতি—गोपबालकों की जाति का; **আমি**—मैं; **বহু**—अनेक; **গোপ-গণ**—

ग्वालबाल; **सङ्गे**—साथ; **आमि**—मैं; **सुख पाइ**—अत्यन्त प्रसन्न हूँ; **एइ**—इस; **पुलिन**—नदी किनारे; **भोजन-रङ्गे**—भोजन के आनन्द में।

अनुवाद

"मैं ग्वालों की जाति का हूँ, इसलिए सामान्यतया मेरे साथ अनेक ग्वाल संगी रहते हैं। जब हम नदी के रेतीले तट पर इस तरह के वन्य-भोजन में एकसाथ खाते हैं, तो मैं प्रसन्न होता हूँ।"

রাঘবে বসাঞা দুই কুণ্ডী দেওয়াইলা ।
রাঘব দ্বিবিধ চিড়া তাতে ভিজাইলা ॥৭৬॥

राघवे वसाञा दुइ कुण्डी देओयाइला ।
राघव द्विविध चिड़ा ताते भिजाइला ॥ ७६ ॥

राघवे—राघव पण्डित को; **वसाञा**—बिठाकर; **दुइ**—दो; **कुण्डी**—पात्र; **देओयाइला**—उन्हें दिलवाएँ; **राघव**—राघव पण्डित ने; **द्वि-विध**—दो प्रकार के; **चिड़ा**—चिड़ा; **ताते**—उनमें; **भिजाइला**—भिगोये।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने राघव पण्डित को बैठाया और उन्हें भी दो पात्र दिलाए। इनमें दो प्रकार के चिउड़े भिगोये हुए थे।

সকল-লোকের চিড়া পূর্ণ যবে হইল ।
ধ্যানে তবে প্রভু মহাপ্রভুরে আনিল ॥৭৭॥

सकल-लोकेर चिड़ा पूर्ण यबे हइल ।
ध्याने तबे प्रभु महाप्रभुरे आनिल ॥ ७७ ॥

सकल-लोकेर—सभी का; **चिड़ा**—चिड़ा; **पूर्ण**—पूर्ण; **यबे**—जब; **हइल**—हो गया; **ध्याने**—ध्यान में; **तबे**—उस समय; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **महाप्रभुरे आनिल**—श्री चैतन्य महाप्रभु को ले आये।

अनुवाद

जब हर एक को चिउड़ा परोसा जा चुका, तो नित्यानन्द प्रभु ध्यान में श्री चैतन्य महाप्रभु को ले आये।

महाप्रभु आइला देखि' निताई उठिला ।
ताँरे लञा सबार चिड़ा देखिते लागिला ॥७८॥

महाप्रभु आइला देखि' निताइ उठिला ।
ताँरे लञा सबार चिड़ा देखिते लागिला ॥७८॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **आइला**—आये; **देखि'**—देखकर; **निताइ**—नित्यानन्द प्रभु; **उठिला**—खड़े हो गये; **ताँरे लञा**—उनके साथ; **सबार**—सभी को; **चिड़ा**—चिड़ा; **देखिते लागिला**—देखने लगे।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु आये, तो नित्यानन्द प्रभु उठ खड़े हुए। तब उन्होंने देखा कि किस तरह अन्य लोग दही तथा घनीभूत दूध के साथ चिउड़ा का आनन्द ले रहे हैं।

सकल कुण्डीर, होल्लार चिड़ार एक एक ग्रास ।
महाप्रभुर मुखे देन करि' परिहास ॥७९॥

सकल कुण्डीर, होल्लार चिड़ार एक एक ग्रास ।
महाप्रभुर मुखे देन करि' परिहास ॥७९॥

सकल कुण्डीर—सभी पात्रों से; **होल्लार**—बड़े पात्रों से; **चिड़ार**—चिउड़े का; **एक एक ग्रास**—एक ग्रास; **महाप्रभुर मुखे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख में; **देन**—डालकर; **करि' परिहास**—मजाक करने लगे।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने प्रत्येक पात्र से चिउड़े का एक ग्रास लिया और उसे परिहास वश श्री चैतन्य महाप्रभु के मुँह में ठूँस दिया।

हासि' महाप्रभु आर एक ग्रास लञा ।
ताँर मुखे दिया खाओयाय हासिया हासिया ॥८०॥

हासि' महाप्रभु आर एक ग्रास लञा ।
ताँर मुखे दिया खाओयाय हासिया हासिया ॥८०॥

हासि'—हँसकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आर**—दूसरा; **एक ग्रास**—एक ग्रास;

लञा—लेकर; **ताँर मुखे**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु के मुख में; **दिया**—डालकर; **खाओयाय**—खिलाकर; **हासिया हासिया**—हँसते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी हँसते-हँसते भोजन का एक कौर लिया, उसे नित्यानन्द प्रभु के मुँह में डाल दिया और नित्यानन्द को खिलाते समय हँसने लगे।

এই-মত নিতাই বুলে সকল মণ্ডলে ।
দাণ্ডাঞা রঙ্গ দেখে বৈষ্ণব সকলে ॥৮১॥

एइ-मत निताइ बुले सकल मण्डले ।
दाण्डाञा रङ्ग देखे वैष्णव सकले ॥८१॥

एइ-मत—इस प्रकार; **निताइ बुले**—नित्यानन्द प्रभु गुजर रहे थे; **सकल मण्डले**—सभी दलों के बीच से; **दाण्डाञा**—खड़े हुए; **रङ्ग देखे**—मनोरंजन देख रहे थे; **वैष्णव सकले**—सभी वैष्णव।

अनुवाद

इस तरह नित्यानन्द प्रभु भोजन करने वालों की सभी मंडलियों में से होकर घूम रहे थे और वहाँ पर खड़े सारे वैष्णव यह कौतुक देख रहे थे।

কি করিয়া বেড়ায়,—ইহা কেহ নাহি জানে ।
মহাপ্রভুর দর্শন পায় কোন ভাগ্যবানে ॥৮২॥

कि करिया बेड़ाय,—इहा केह नाहि जाने ।
महाप्रभुर दर्शन पाय कोन भाग्यवाने ॥८२॥

कि करिया—क्या कर रहे थे; **बेड़ाय**—चलते हुए; **इहा**—यह; **केह नाहि जाने**—कोई समझ न सका; **महाप्रभुर दर्शन पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन कर पाए; **कोन भाग्यवाने**—कुछ भाग्यशाली लोग।

अनुवाद

जब नित्यानन्द प्रभु घूम रहे थे, तब वे क्या कर रहे थे यह कोई नहीं समझ सका। किन्तु कुछ लोग जो बड़े भाग्यशाली थे, यह देख सके कि श्री चैतन्य महाप्रभु भी वहाँ उपस्थित थे।

তবে হাসি' নিত্যানন্দ বসিলা আসনে ।
চারি কুণ্ডী আরোয়া চিড়া রাখিলা ডাহিনে ॥৮৩॥

तबे हासि' नित्यानन्द वसिला आसने ।
चारि कुण्डी आरोया चिड़ा राखिला डाहिने ॥८३॥

तबे हासि'—फिर हँसकर; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **वसिला आसने**—अपने आसन पर बैठ गये; **चारि कुण्डी**—चार मिट्टी के पात्र; **आरोया चिड़ा**—उबले धान से नहीं बनाया हुआ चिड़ा; **राखिला डाहिने**—उन्होंने अपनी दाई ओर रखा।

अनुवाद

तब नित्यानन्द प्रभु हँसे और बैठ गये। उन्होंने अपने दाहिनी ओर चार पात्र रखे जिनका चिउड़ा उबले चावल से नहीं बनाया गया था।

আসন দিয়া মহাপ্রভুরে তাহাঁ বসাইলা ।
দুই ভাই তবে চিড়া খাইতে লাগিলা ॥৮৪॥

आसन दिया महाप्रभुरे ताहाँ वसाइला ।
दुइ भाइ तबे चिड़ा खाइते लागिला ॥८४॥

आसन दिया—आसन देकर; **महाप्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ताहाँ**—वहाँ; **वसाइला**—बिठाया; **दुइ भाइ**—दोनों भाई; **तबे**—उस समय; **चिड़ा**—चिड़ा; **खाइते लागिला**—खाने लगे।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने श्री चैतन्य महाप्रभु को स्थान दिया और उन्हें बैठाया। तब दोनों भाई एकसाथ चिउड़ा खाने लगे।

দেখি' নিত্যানন্দ-প্রভু আনন্দিত হৈলা ।
কত কত ভাবাবেশ প্রকাশ করিলা ॥৮৫॥

देखि' नित्यानन्द-प्रभु आनन्दित हैला ।
कत कत भावावेश प्रकाश करिला ॥८५॥

देखि'—देखकर; **नित्यानन्द-प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **आनन्दित हैला**—अत्यन्त प्रसन्न हो गये; **कत कत**—बहुत से; **भाव-आवेश**—प्रेमभाव; **प्रकाश करिला**—उन्होंने प्रकाशित किये।

अनुवाद

अपने साथ चैतन्य महाप्रभु को खाते देखकर नित्यानन्द प्रभु अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने नाना प्रकार के भावावेश प्रदर्शित किये।

আজ্ঞা দিলা,—'হরি বলি' করহ ভোজন' ।
'হরি' 'হরি'-ধ্বনি উঠি' ভরিল ভুবন ॥৮৬॥

आज्ञा दिला,—'हरि बलि' करह भोजन' ।
'हरि' 'हरि'-ध्वनि उठि' भरिल भुवन ॥८६॥

आज्ञा दिला—उन्होंने आदेश दिया; **हरि बलि'**—"हरि" बोलते हुए; **करह भोजन**—आप सब खाइये; **हरि हरि-ध्वनि**—"हरि, हरि" की गूँज; **उठि'**—उठकर; **भरिल भुवन**—समस्त ब्रह्माण्ड में भर गई।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने आज्ञा दी, "सभी लोग हरिनाम का कीर्तन करते हुए भोजन करें।" "हरि, हरि" की ध्वनि की गूँज से तुरन्त ही सारा ब्रह्माण्ड भर गया।

'হরি' 'হরি' বলি' বৈষ্ণব করয়ে ভোজন ।
পুলিন-ভোজন সবার হইল স্মরণ ॥৮৭॥

'हरि' 'हरि' बलि' वैष्णव करये भोजन ।
पुलिन-भोजन सबार हइल स्मरण ॥८७॥

हरि हरि बलि'—"हरि, हरि" बोलते हुए; **वैष्णव**—सभी वैष्णव; **करये भोजन**—खाने लगे; **पुलिन-भोजन**—यमुना के किनारे भोजन; **सबार हइल स्मरण**—सभी को स्मरण आ गया।

अनुवाद

जब सारे वैष्णव "हरि, हरि" बोलकर भोजन कर रहे थे, तो उन्हें स्मरण हो आया कि किस तरह कृष्ण तथा बलराम अपने ग्वालबाल साथियों के साथ यमुना के तट पर भोजन करते थे।

নিত্যানন্দ মহাপ্রভু—কৃপালু, উদার ।
রঘুনাথের ভাগ্যে এত কৈলা অঙ্গীকার ॥৮৮॥

नित्यानन्द महाप्रभु—कृपालु, उदार ।
रघुनाथेर भाग्ये एत कैला अङ्गीकार ॥ ८८ ॥

नित्यानन्द महाप्रभु—भगवान् नित्यानन्द प्रभु और भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **कृपालु**—दयावान; **उदार**—उदार; **रघुनाथेर भाग्ये**—रघुनाथ दास के महान् सौभाग्य द्वारा; **एत**—यह सब; **कैला अङ्गीकार**—उन्होंने स्वीकार किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु अत्यन्त दयालु तथा उदार हैं। यह तो रघुनाथदास का सौभाग्य था कि उन्होंने ये सब व्यवहार स्वीकार कर लिए।

নিত্যানন্দ-প্রভাব-কৃপা জানিবে কোন্জন? ।
মহাপ্রভু আনি' করায় পুলিন-ভোজন ॥ ৮৯ ॥

নিত্যানন্দ-প্রভাব-কৃপা জানিবে কোন্ জন? ।
মহাপ্রভু আনি' করায় পুলিন-ভোজন ॥ ৮৯ ॥

নিত্যানন্দ—নিত্যানন্দ प्रभु का; **प्रभाव-कृपा**—प्रभाव और कृपा; **जानिबे**—जान सकता है; **कोन् जन**—कौन; **महाप्रभु आनि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु को बुलाकर; **कराय पुलिन-भोजन**—उन्हें नदी किनारे भोजन करवाते हैं।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु के प्रभाव तथा कृपा को कौन समझ सकता है? वे इतने शक्तिशाली हैं कि उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को गंगा तट पर चिउड़ा खाने आने के लिए प्रेरित किया।

শ্রী-রামদাসাদি গোপ প্রেমাবিষ্ট হৈলা ।
গঙ্গা-তীরে 'যমুনা-পুলিন' জ্ঞান কৈলা ॥ ৯০ ॥

শ্রী-রামদাসাদি গোপ প্রেমাবিষ্ট হৈলা ।
গঙ্গা-তীরে 'যমুনা-পুলিন' জ্ঞান কৈলা ॥ ৯০ ॥

श्री-रामदास-आदि—श्री रामदास आदि; **गोप**—ग्वालबाल; **प्रेम-आविष्ट हैला**—प्रेमभाव में आविष्ट हो गये; **गङ्गा-तीरे**—गंगा नदी के किनारे को; **यमुना-पुलिन**—यमुना नदी का किनारा; **ज्ञान कैला**—उन्होंने माना।

अनुवाद

श्री रामदास इत्यादि जितने ग्वालबाल अन्तरंग भक्त थे, वे प्रेमावेश में डूब गये। वे गंगा के तट को यमुना का तट समझ बैठे।

महोत्सव शुनि' पसारि नाना-ग्राम हैते ।
चिड़ा, दधि, सन्देश, कला आनिल वेचिते ॥९१॥

महोत्सव शुनि' पसारि नाना-ग्राम हैते ।
चिड़ा, दधि, सन्देश, कला आनिल वेचिते ॥ ९१ ॥

महोत्सव शुनि'—महोत्सव के बारे में सुनकर; **पसारि**—दुकानदार; **नाना-ग्राम**—अनेक गाँव; **हैते**—से; **चिड़ा**—चिड़ा; **दधि**—दही; **सन्देश**—सन्देश (मिठाई); **कला**—केला; **आनिल**—लाए; **वेचिते**—बेचने के लिए।

अनुवाद

जब अनेक अन्य गाँव के दुकानदारों ने महोत्सव के बारे में सुना, तो वे चिउड़ा, दही, सन्देश, मिठाई तथा केला बेचने के लिए वहाँ आ गये।

यत द्रव्य लञा आइसे, सब मूल्य करि' लय ।
तार द्रव्य मूल्य दिया ताहारे खाओयाय ॥९२॥

यत द्रव्य लञा आइसे, सब मूल्य करि' लय ।
तार द्रव्य मूल्य दिया ताहारे खाओयाय ॥ ९२ ॥

यत द्रव्य—सभी वस्तुएँ; **लञा**—लेकर; **आइसे**—आये; **सब**—सब; **मूल्य करि' लय**—रघुनाथ ने खरीद ली; **तार द्रव्य**—उनके वस्तुओं का; **मूल्य दिया**—मूल्य चुकाकर; **ताहारे खाओयाय**—उन्हें ही खिला दी।

अनुवाद

जैसे ही वे सभी प्रकार की भोज्य सामग्री लेकर आये, रघुनाथदास ने सारी की सारी खरीद ली। उन्होंने उन्हें उनके सामान का मूल्य चुकता किया और बाद में वही भोजन उन्हें खिला दिया।

कौतुक देखिते आइल यत यत जन ।
सेइ चिड़ा, दधि, कला करिल भक्षण ॥९३॥

कौतुक देखिते आइल यत यत जन ।
सेइ चिड़ा, दधि, कला करिल भक्षण ॥ ९३ ॥

कौतुक—ये मनोरंजक घटनाएँ; **देखिते**—देखने के लिए; **आइल**—आये; **यत यत जन**—जो-जो लोग; **सेइ**—वे; **चिड़ा**—चिड़ा; **दधि**—दही; **कला**—केला; **करिल भक्षण**—खाए।

अनुवाद

जो भी यह देखने के लिए आया कि ये कैसे कुतूहलवर्धक कार्य हो रहे हैं, उन्हें भी चिउड़ा, दही तथा केला खिलाया गया।

ভোজন করি' নিত্যানন্দ আচমন কৈলা ।
চারি কুণ্ডীর অবশেষ রঘুনাথে দিলা ॥৯৪॥

भोजन करि' नित्यानन्द आचमन कैला ।
चारि कुण्डीर अवशेष रघुनाथे दिला ॥ ९४ ॥

भोजन करि'—भोजन समाप्त करके; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु ने; **आचमन कैला**—अपने हाथ मुँह धोये; **चारि कुण्डीर**—चारों पात्रों में; **अवशेष**—जो कुछ बचा था; **रघुनाथे दिला**—रघुनाथ दास को दे दिया।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने भोजन करने के बाद हाथ तथा मुख धोये और रघुनाथ दास को चार पात्रों में बचा हुआ भोजन दिया।

আর তিন কুণ্ডিকায় অবশেষ ছিল ।
গ্রাসে-গ্রাসে করি' বিপ্র সব ভক্তে দিল ॥৯৫॥

आर तिन कुण्डिकाय अवशेष छिल ।
ग्रासे-ग्रासे करि' विप्र सब भक्ते दिल ॥ ९५ ॥

आर—अन्य; **तिन कुण्डिकाय**—तीन पात्रों में; **अवशेष छिल**—अवशिष्ट भोजन था; **ग्रासे-ग्रासे**—ग्रास-ग्रास; **करि'**—करके; **विप्र**—एक ब्राह्मण ने; **सब भक्ते**—सभी भक्तों को; **दिल**—दिया।

अनुवाद

भगवान् नित्यानन्द के तीन अन्य बड़े पात्रों में भोजन बचा रहा, जिसे एक ब्राह्मण ने सारे भक्तों को एक-एक ग्रास देकर बाँट दिया।

पुष्प-माला विप्र आनि' प्रभु-गले दिल ।
चन्दन आनिया प्रभुर सर्वाङ्गे लेपिल ॥९६॥

पुष्प-माला विप्र आनि' प्रभु-गले दिल ।
चन्दन आनिया प्रभुर सर्वाङ्गे लेपिल ॥ ९६ ॥

पुष्प-माला—एक फूलों का हार; **विप्र**—एक ब्राह्मण ने; **आनि'**—लाकर; **प्रभु-गले**—भगवान् नित्याानन्द प्रभु के गले में; **दिल**—डाला; **चन्दन आनिया**—चन्दन लेप लाकर; **प्रभुर**—नित्यानन्द प्रभु के; **सर्वाङ्गे लेपिल**—समस्त शरीर पर लेप कर दिया।

अनुवाद

तब एक ब्राह्मण एक फूल की माला ले आया, उसने उसे नित्यानन्द प्रभु के गले में डाल दी और उनके सारे शरीर में चन्दन का लेप किया।

सेवक ताम्बूल लञा करे समर्पण ।
हासिया हासिया प्रभु करये चर्वण ॥९७॥

सेवक ताम्बूल लञा करे समर्पण ।
हासिया हासिया प्रभु करये चर्वण ॥ ९७॥

सेवक—सेवक ने; **ताम्बूल**—पान; **लञा**—लाकर; **करे समर्पण**—अर्पित किया; **हासिया हासिया**—हँसकर; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु ने; **करये चर्वण**—चबाया।

अनुवाद

जब नौकर पान ले आया और नित्यानन्द प्रभु को भेंट किया, तो प्रभु हँसने लगे और पान चबाने लगे।

माला-चन्दन-ताम्बूल शेष यें आछिल ।
श्री-हस्ते प्रभु ताहा सबाकारे बाँटि' दिल ॥९८॥

माला-चन्दन-ताम्बूल शेष यें आछिल ।
श्री-हस्ते प्रभु ताहा सबाकारे बाँटि' दिल ॥ ९८॥

माला-चन्दन-ताम्बूल—फूलों का हार, चन्दन का लेप तथा पान का; **शेष ग्रे आछिल**—जो कुछ अवशेष बचा; **श्री-हस्ते**—अपने हाथों से; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु ने; **ताहा**—वह; **सबाकारे**—सबको; **बाँटि' दिल**—बाँट दिया।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने अपने हाथों से सारे भक्तों में बची हुई फूलमालाएँ, चन्दन लेप तथा पान बाँट दिये।

आनन्दित रघुनाथ प्रभुर 'शेष' पाञा ।
आपनार गण-सह खाइला बाँतिया ॥९९॥

आनन्दित रघुनाथ प्रभुर 'शेष' पाञा ।
आपनार गण-सह खाइला बाँटिया ॥ ९९ ॥

आनन्दित—अति आनन्दित होकर; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **प्रभुर शेष पाञा**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु का शेष प्राप्त करके; **आपनार गण**—अपने संगियों के; **सह**—साथ; **खाइला**—खाया; **बाँतिया**—बाँटकर।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु के बचे भोजन का शेष पाकर अत्यन्त प्रसन्न रघुनाथ दास ने कुछ तो खाया और शेष अपने निजी संगियों में बाँट दिया।

एइ त' कहिलुँ नित्यानन्देर विहार ।
'चिड़ा-दधि-महोञ्सव'-नामे ख्याति यार ॥१००॥

एइ त' कहिलुँ नित्यानन्देर विहार ।
'चिड़ा-दधि-महोत्सव'-नामे ख्याति ग्रार ॥ १०० ॥

एइ त'—इस प्रकार; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **नित्यानन्देर विहार**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु की लीलाएँ; **चिड़ा-दधि-महोत्सव**—चिड़ा-दही खाने का महोत्सव; **नामे**—नाम से; **ख्याति**—प्रसिद्धि; **ग्रार**—जिसकी।

अनुवाद

इस तरह मैंने चिड़ा-दही महोत्सव के सम्बन्ध में नित्यानन्द प्रभु की लीलाओं का वर्णन किया है।

प्रभु विश्राम कैला, यदि दिन-शेष हैल ।
राघव-मन्दिरे तबे कीर्तन आरम्भिल ॥ १०१ ॥

प्रभु विश्राम कैला, यदि दिन-शेष हैल ।
राघव-मन्दिरे तबे कीर्तन आरम्भिल ॥ १०१ ॥

प्रभु—नित्यानन्द प्रभु ने; **विश्राम कैला**—विश्राम किया; **यदि**—जब; **दिन-शेष हैल**—दिन समाप्त हो गया; **राघव-मन्दिरे**—राघव पण्डित के मन्दिर में; **तबे**—उस समय; **कीर्तन आरम्भिल**—पवित्र नाम का संकीर्तन करना प्रारम्भ किया।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु ने दिन में आराम किया और जब दिन का अन्त हो गया, तो वे राघव पण्डित के मन्दिर गये और वहाँ भगवान् के पवित्र नाम का संकीर्तन करना प्रारम्भ कर दिया।

भक्त सब नाचाञा नित्यानन्द-राय ।
शेषे नृत्य करे प्रेमे जगत्भासाय ॥ १०२ ॥

भक्त सब नाचाञा नित्यानन्द-राय ।
शेषे नृत्य करे प्रेमे जगत् भासाय ॥ १०२ ॥

भक्त सब—सभी भक्तों को; **नाचाञा**—नचाया; **नित्यानन्द-राय**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु ने; **शेषे**—अन्त में; **नृत्य करे**—नाचना प्रारम्भ किया; **प्रेमे**—प्रेमभाव में; **जगत् भासाय**—समस्त संसार को डुबा दिया।

अनुवाद

सर्वप्रथम नित्यानन्द प्रभु ने सारे भक्तों को नाचने के लिए प्रेरित किया और अन्त में वे स्वयं भी नाचने लगे। इस तरह उन्होंने सारे जगत् को प्रेमावेश से आप्लावित कर दिया।

महाप्रभु ताँर नृत्य करेन दरशन ।
सबे नित्यानन्द देखे, ना देखे अन्य-जन ॥ १०३ ॥

महाप्रभु ताँर नृत्य करेन दरशन ।
सबे नित्यानन्द देखे, ना देखे अन्य-जन ॥ १०३ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर**—उनका; **नृत्य**—नर्तन; **करेन दरशन**—देख रहे थे; **सबे**—सब; **नित्यानन्द देखे**—नित्यानन्द प्रभु देख पाए; **ना देखे**—नहीं देख पाए; **अन्य-जन**—अन्य लोग।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु श्री नित्यानन्द प्रभु का नृत्य देख रहे थे। नित्यानन्द प्रभु तो इसे देख सके, किन्तु अन्य लोग नहीं देख पाये।

নিত্যানন্দের নৃত্য,—যেন তাঁহার নর্তনে ।
উপমা দিবার নাহি এ-তিন ভুবনে ॥ ১০৪॥

নিত্যানন্দের নৃত্য,—য়েন তাঁহার নর্তনে ।
উপমা দিবার নাহি এ-তিন ভুবনে ॥ ১০৪॥

नित्यानन्देर नृत्य—भगवान् नित्यानन्द प्रभु का नृत्य; **य़ेन**—समान; **ताँहार नर्तने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य के; **उपमा दिबार नाहि**—कोई उपमा नहीं दी जा सकती; **ए-तिन भुवने**—इन तीनों भुवनों में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य की तरह नित्यानन्द प्रभु के नृत्य की तुलना इन तीनों जगतों से किसी भी वस्तु से नहीं की जा सकती।

নৃত্যের মাধুরী কেবা বর্ণিবারে পারে ।
মহাপ্রভু আইসে যেই নৃত্য দেখিবারে ॥ ১০৫॥

নৃত্যের মাধুরী কেবা বর্ণিবারে পারে ।
মহাপ্রভু আইসে য়েই নৃত্য দেখিবারে ॥ ১০৫॥

नृत्येर माधुरी—नृत्य की मधुरता; **केबा**—कौन; **वर्णिबारे पारे**—वर्णन कर सकता है; **महाप्रभु आइसे**—श्री चैतन्य महाप्रभु आते हैं; **य़ेइ**—वह; **नृत्य**—नृत्य; **देखिबारे**—देखने के लिए।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु के नृत्य की मधुरता का वर्णन उचित प्रकार से कोई नहीं कर सकता। श्री चैतन्य महाप्रभु स्वयं चलकर इसे देखने आते हैं।

नृत्य करि' प्रभु यबे विश्राम करिला ।
भोजनेर लागि' पण्डित निवेदन कैला ॥ १०६ ॥

नृत्य करि' प्रभु यबे विश्राम करिला ।
भोजनेर लागि' पण्डित निवेदन कैला ॥ १०६ ॥

नृत्य करि'—नृत्य करके; **प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु ने; **यबे**—जब; **विश्राम करिला**—विश्राम किया; **भोजनेर लागि'**—उनसे भोजन के लिए; **पण्डित**—राघव पण्डित ने; **निवेदन कैला**—प्रार्थना की।

अनुवाद

नृत्य के बाद जब नित्यानन्द प्रभु विश्राम कर चुके, तो राघव पण्डित ने उनसे निवेदन किया कि वे रात्रि का भोजन कर लें।

भोजने बसिला प्रभु निज-गण लञा ।
महाप्रभुर आसन डाहिने पातिया ॥ १०७ ॥

भोजने बसिला प्रभु निज-गण लञा ।
महाप्रभुर आसन डाहिने पातिया ॥ १०७ ॥

भोजने—भोजन करने के लिए; **बसिला**—बैठ गये; **प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **निज-गण लञा**—अपने संगीगणों के साथ; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आसन**—आसन; **डाहिने पातिया**—दाई और बिछाते हैं।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु अपने निजी संगियों के साथ भोजन करने बैठ गये और श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए अपने दाहिनी ओर आसन बना दिया।

महाप्रभु आसि' सेई आसने बसिल ।
देखि' राघवेर मने आनन्द बाड़िल ॥ १०८ ॥

महाप्रभु आसि' सेइ आसने बसिल ।
देखि' राघवेर मने आनन्द बाड़िल ॥ १०८ ॥

महाप्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आसि'**—आकर; **सेइ आसने**—उस आसन पर; **बसिल**—बैठ गये; **देखि'**—देखकर; **राघवेर मने**—राघव पण्डित के मन में; **आनन्द**—महान् आनन्द; **बाड़िल**—बढ़ गया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु वहाँ पर आये और अपने आसन पर बैठ गये। यह देखकर राघव पण्डित को अत्यधिक आनन्द हुआ।

दुई-भाई-आगे प्रसाद आनिया धरिला ।
सकल वैष्णवे पिछे परिवेशन कैला ॥१०९॥

दुइ-भाइ-आगे प्रसाद आनिया धरिला ।
सकल वैष्णवे पिछे परिवेशन कैला ॥१०९॥

दुइ-भाइ-आगे—दोनों भाइयों के सामने; **प्रसाद**—भगवान् कृष्ण को अर्पित भोग का शेष; **आनिया**—लाकर; **धरिला**—रख दिया; **सकल वैष्णवे**—सभी वैष्णवों को; **पिछे**—उसके बाद; **परिवेशन कैला**—बाँटने लगें।

अनुवाद

राघव पण्डित दोनों भाइयों के समक्ष प्रसाद ले आये और उसके बाद अन्य सभी वैष्णवों को प्रसाद वितरित किया।

नाना-प्रकार पिठा, पायस, दिव्य शाल्यन्न ।
अमृत निन्दये ऐछे विविध व्यञ्जन ॥११०॥

नाना-प्रकार पिठा, पायस, दिव्य शाल्यन्न ।
अमृत निन्दये ऐछे विविध व्यञ्जन ॥११०॥

नाना-प्रकार पिठा—अनेक प्रकार की मिठाईयाँ; **पायस**—खीर; **दिव्य शाल्यन्न**—उत्कृष्ट भात; **अमृत**—अमृत को; **निन्दये**—लज्जित करने वाले; **ऐछे**—ऐसे; **विविध व्यञ्जन**—विविध व्यंजन।

अनुवाद

उसमें तरह-तरह की मिठाईयाँ, खीर तथा उत्तम पकाए चावल थे, जो अमृत के भी स्वाद को मात करने वाले थे। कई प्रकार की सब्जियाँ भी थीं।

राघव-ठाकुरेर प्रसाद अमृतेर सार ।
महाप्रभु याहा खाइते आइसे बार बार ॥१११॥

राघव-ठाकुरेर प्रसाद अमृतेर सार ।
महाप्रभु ग्राहा खाइते आइसे बार बार ॥ १११ ॥

राघव-ठाकुरेर—राघव पण्डित का; **प्रसाद**—भगवान् को अर्पित अन्न, प्रसाद; **अमृतेर सार**—अमृत का सार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ग्राहा**—जिसे; **खाइते**—खाने के लिए; **आइसे**—आते थे; **बार बार**—बारम्बार।

अनुवाद

राघव पण्डित द्वारा तैयार किया गया तथा अर्चाविग्रह को भेंट किया गया भोजन अमृत के सार के तुल्य था। श्री चैतन्य महाप्रभु ऐसा प्रसाद खाने के लिए वहाँ बारम्बार आये।

पाक करि' राघव यबे भोग लागाय ।
महाप्रभुर लागि' भोग पृथक्बाड़य ॥ ११२ ॥

पाक करि' राघव ग्रबे भोग लागाय ।
महाप्रभुर लागि' भोग पृथक्बाड़य ॥ ११२ ॥

पाक करि'—पकाने के बाद; **राघव**—राघव पण्डित; **ग्रबे**—जब; **भोग लागाय**—भोगों को श्री विग्रह को अर्पित करते हैं; **महाप्रभुर लागि'**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए; **भोग**—भोग; **पृथक्**—अलग से; **बाड़य**—लगाते हैं।

अनुवाद

जब राघव पण्डित भोजन पकाने के बाद उसे अर्चाविग्रह को अर्पित करते, तब वे श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए अलग भोग लगाते।

प्रति-दिन महाप्रभु करेन भोजन ।
मध्ये मध्ये प्रभु ताँरे देन दरशन ॥ ११३ ॥

प्रति-दिन महाप्रभु करेन भोजन ।
मध्ये मध्ये प्रभु ताँरे देन दरशन ॥ ११३ ॥

प्रति-दिन—रोज; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन भोजन**—खाते हैं; **मध्ये मध्ये**—कभी-कभी; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उन्हें; **देन दरशन**—अपने दर्शन देते।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिदिन राघव पण्डित के घर भोजन करते।

कभी-कभी वे राघव पण्डित को अपना दर्शन पाने का अवसर प्रदान करते।

দুই ভাইরে রাঘব আনি' পরিবেশে ।
যত্ন করি' খাওয়ায়, না রহে অবশেষে ॥ ১১৪॥

দুই ভাইরে রাঘব আনি' পরিবেশে ।
যত্ন করি' খাওয়ায়, না রহে অবশেষে ॥ ১১৪॥

दुइ भाइरे—दोनों भाइयों को; **राघव**—राघव पण्डित; **आनि'**—बुलाकर; **परिवेशे**—परोसते; **यत्न करि'**—अत्यन्त सावधानीपूर्वक; **खाओयाय**—उन्हें खिलाते; **ना रहे अवशेषे**—कुछ भी अवशेष न बचता।

अनुवाद

राघव पण्डित प्रसाद लाकर दोनों भाइयों को देते और बड़ी ही सावधानी से उन्हें खिलाते। वे सारा प्रसाद खा जाते, जिससे कोई शेष नहीं बचता था।

কত উপহার আনে, হেন নাহি জানি ।
রাঘবের ঘরে রান্ধে রাধা-ঠাকুরাণী ॥ ১১৫॥

কত উপহার আনে, হেন নাহি জানি ।
রাঘবের ঘরে রান্ধে রাধা-ঠাকুরাণী ॥ ১১৫॥

कत उपहार—अनेक उपहार; **आने**—लाते; **हेन**—इतने; **नाहि जानि**—मैं नहीं समझ सकता; **राघवेर घरे**—राघव पण्डित के घर पर; **रान्धे**—पकाती; **राधा-ठाकुराणी**—परम माता, श्रीमती राधारानी।

अनुवाद

वे इतने सारे प्रसाद ले आते कि लोग उन्हें ठीक से जान नहीं पाते थे। निस्सन्देह, यह सच था कि परम माता राधारानी स्वयं आकर राघव पण्डित के घर भोजन पकातीं।

দুর্বাসার ঠাঞি তেঁহো পাঞাছেন বর ।
অমৃত হইতে পাক তাঁর অধিক মধুর ॥ ১১৬॥

दुर्वासार ठाञि तेंहो पाञाछेन वर ।
अमृत हइते पाक ताँर अधिक मधुर ॥ ११६ ॥

दुर्वासार ठाञि—दुर्वासा मुनि से; **तेंहो**—उन्हें; **पाञाछेन वर**—वरदान प्राप्त हुआ था; **अमृत हइते**—अमृत से भी; **पाक**—भोजन; **ताँर**—उनका; **अधिक मधुर**—अधिक मधुर।

अनुवाद

श्रीमती राधारानी को दुर्वासा मुनि से यह वर मिला था कि वे जो कुछ भी पकायेंगी, वह अमृत से भी अधिक मधुर होगा। उनकी पाक-विद्या का यह विशेष गुण है।

সুগন্ধি সুন্দর প্রসাদ——মাধুর্যের সার ।
দুই ভাই তাহা খাঞা সন্তোষ অপার ॥ ১১৭ ॥
सुगन्धि सुन्दर प्रसाद——माधुर्य्येर सार ।
दुइ भाइ ताहा खाञा सन्तोष अपार ॥ ११७ ॥

सु-गन्धि—सुगन्धित; **सुन्दर**—सुन्दर; **प्रसाद**—प्रसाद; **माधुर्य्येर सार**—समस्त मधुरता का सार; **दुइ भाइ**—दोनों भाई; **ताहा**—वह; **खाञा**—खाते; **सन्तोष अपार**—अत्यन्त सन्तुष्ट होकर।

अनुवाद

यह भोजन सुगन्धित एवं देखने में सुहावना होता और समस्त मधुरता का सार होता। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु दोनों भाई परम सन्तोष के साथ भोजन करते।

ভোজনে বসিতে রঘুনাথে কহে সর্ব-জন ।
পণ্ডিত কহে,——ইঁহ পাছে করিবে ভোজন' ॥ ১১৮ ॥
भोजने वसिते रघुनाथे कहे सर्व-जन ।
पण्डित कहे,——इँह पाछे करिबे भोजन' ॥ ११८ ॥

भोजने—खाने के लिए; **वसिते**—बैठना; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास से; **कहे**—निवेदन किये; **सर्व-जन**—सभी लोग; **पण्डित कहे**—राघव पण्डित ने कहा; **इँह**—यह; **पाछे**—बाद में; **करिबे भोजन**—प्रसाद खाएँगे।

अनुवाद

वहाँ पर उपस्थित सारे भक्तों ने रघुनाथ दास से प्रार्थना की कि वे बैठकर प्रसाद ग्रहण करें, किन्तु राघव पण्डित ने उन्हें बताया कि, "वे बाद में प्रसाद ग्रहण करेंगे।"

ভক্ত-গণ আকণ্ঠ ভরিয়া করিল ভোজন ।
'হরি' ধ্বনি করি' উঠি' কৈলা আচমন ॥ ১১৯॥

भक्त-गण आकण्ठ भरिया करिल भोजन ।
'हरि' ध्वनि करि' उठि' कैला आचमन ॥ ११९॥

भक्त-गण—सभी भक्तों ने; **आकण्ठ**—गले तक; **भरिया**—भरकर; **करिल भोजन**—प्रसाद ग्रहण किया; **हरि ध्वनि**—हरि के पवित्र नाम की ध्वनि; **करि'**—करते हुए; **उठि'**—उठकर; **कैला आचमन**—अपने मुख और हाथ धोने लगे।

अनुवाद

सारे भक्तों ने इतना प्रसाद खाया कि उनके गले तक भोजन भर गया। तत्पश्चात् हरि के पवित्र नाम का उच्चारण करते हुए सभी उठ खड़े हुए और सबने अपने-अपने हाथ-मुँह धोये।

ভোজন করি' দুই ভাই কৈলা আচমন ।
রাঘব আনি' পরাইলা মাল্য-চন্দন ॥ ১২০॥

भोजन करि' दुइ भाइ कैला आचमन ।
राघव आनि' पराइला माल्य-चन्दन ॥ १२०॥

भोजन करि'—खाने के बाद; **दुइ भाइ**—दोनों भाइयों ने; **कैला आचमन**—अपने हाथ-मुँह धोये; **राघव**—राघव पण्डित ने; **आनि'**—लाकर; **पराइला**—उन्हें पहनाया; **माल्य-चन्दन**—फूलों के हार तथा चन्दन लेप।

अनुवाद

भोजन के बाद दोनों भाइयों ने हाथ-मुँह धोये। तब राघव पण्डित फूल की मालाएँ तथा चन्दन लेप ले आये और उन्हें सुसज्जित किया।

বিড়া খাওয়াইলা, কৈলা চরণ বন্দন ।
ভক্ত-গণে দিলা বিড়া, মাল্য-চন্দন ॥ ১২১॥

बिड़ा खाओयाइला, कैला चरण वन्दन ।
भक्त-गणे दिला बिड़ा, माल्य-चन्दन ॥ १२१॥

बिड़ा खाओयाइला—उन्होंने पान खिलाया; **कैला चरण वन्दन**—चरणकमलों में प्रणाम किया; **भक्त-गणे**—भक्तों को; **दिला**—दिये; **बिड़ा**—पान; **माल्य-चन्दन**—हार तथा चन्दन लेप।

अनुवाद

राघव पण्डित ने उन्हें पान का बीड़ा खिलाया और उनके चरणकमलों की वन्दना की। उन्होंने भक्तों को भी पान, फूल-मालाएँ तथा चन्दन लेप दिया।

রাঘবের কৃপা রঘুনাথের উপরে ।
দুই ভাইএর অবশিষ্ট পাত্র দিলা তাঁরে ॥ ১২২॥

राघवेर कृपा रघुनाथेर उपरे ।
दुइ भाइएर अवशिष्ट पात्र दिला ताँरे ॥ १२२॥

राघवेर—राघव पण्डित की; **कृपा**—दया; **रघुनाथेर उपरे**—रघुनाथ दास के प्रति; **दुइ भाइएर**—दोनों भाइयों के; **अवशिष्ट**—भोजन के शेष; **पात्र**—बर्तन; **दिला ताँरे**—उन्हें दे दिये।

अनुवाद

रघुनाथ दास के ऊपर विशेष कृपालु होने के कारण राघव पण्डित ने उन्हें दोनों भाइयों द्वारा छोड़े गये उच्छिष्ट की थालियाँ दीं।

কহিলা,—"চৈতন্য গোসাঞি করিয়াছেন ভোজন ।
তাঁর শেষ পাইলে, তোমার খণ্ডিল বন্ধন" ॥ ১২৩॥

कहिला,—"चैतन्य गोसाञि करियाछेन भोजन ।
ताँर शेष पाइले, तोमार खण्डिल बन्धन" ॥ १२३॥

कहिला—उन्होंने कहा; **चैतन्य गोसाञि**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु ने; **करियाछेन**

भोजन—खाया है; **ताँर शेष**—उनका शेष; **पाइले**—यदि तुम ग्रहण करते हो; **तोमार**—तुम्हारा; **खण्डिल**—कट जायेगा; **बन्धन**—बन्धन।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह भोजन किया है। यदि तुम उनके शेष को ग्रहण करोगे, तो तुम अपने परिवार के बन्धन से छूट जाओगे।"

भक्त-चित्ते भक्त-गृहे सदा अवस्थान ।
कभु गुप्त, कभु व्यक्त, स्वतन्त्र भगवान् ॥ १२४॥

भक्त-चित्ते भक्त-गृहे सदा अवस्थान ।
कभु गुप्त, कभु व्यक्त, स्वतन्त्र भगवान् ॥ १२४॥

भक्त-चित्ते—एक भक्त के हृदय में; **भक्त-गृहे**—भक्त के घर पर; **सदा अवस्थान**—सदैव निवास करते हैं; **कभु गुप्त**—कभी गुप्त रूप से; **कभु व्यक्त**—कभी प्रकट होकर; **स्वतन्त्र**—पूर्णतया स्वतन्त्र; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्।

अनुवाद

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् सदैव या तो भक्त के हृदय में या उसके घर में निवास करते हैं। यह बात कभी छिपी रहती है और कभी प्रकट होती है, क्योंकि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं।

सर्वत्र 'व्यापक' प्रभुर सदा सर्वत्र वास ।
इहाते संशय यार, सेइ याय नाश ॥ १२५॥

सर्वत्र 'व्यापक' प्रभुर सदा सर्वत्र वास ।
इहाते संशय यार, सेइ याय नाश ॥ १२५॥

सर्वत्र—सब जगह; **व्यापक**—व्याप्त; **प्रभुर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का; **सदा**—सदैव; **सर्वत्र**—सर्वत्र, सब जगह; **वास**—निवास; **इहाते**—इस विषय में; **संशय**—सन्देह; **यार**—जिसका; **सेइ**—वह; **याय नाश**—नष्ट हो जाता है।

अनुवाद

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् सर्वव्यापी हैं, अतएव वे सर्वत्र निवास करते हैं। जो इसमें सन्देह करता है, उसका विनाश हो जाता है।

প্রাতে নিত্যানন্দ প্রভু গঙ্গা-স্নান করিয়া ।
সেই বৃক্ষ-মূলে বসিলা নিজ-গণ লঞা ॥ ১২৬॥

प्राते नित्यानन्द प्रभु गङ्गा-स्नान करिया ।
सेइ वृक्ष-मूले वसिला निज-गण लञा ॥ १२६॥

प्राते—प्रात: काल में; **नित्यानन्द प्रभु**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु; **गङ्गा स्नान**—गंगा में स्नान; **करिया**—करके; **सेइ वृक्ष-मूले**—उसी वृक्ष के नीचे; **वसिला**—बैठ गये; **निज-गण लञा**—अपने संगियों के साथ।

अनुवाद

प्रात: काल गंगा स्नान करने के बाद नित्यानन्द प्रभु अपने संगियों के साथ उसी वृक्ष के नीचे बैठ गये, जहाँ वे पहले बैठ चुके थे।

রঘুনাথ আসি' কৈলা চরণ বন্দন ।
রাঘব-পণ্ডিত-দ্বারা কৈলা নিবেদন ॥ ১২৭॥

रघुनाथ आसि' कैला चरण वन्दन ।
राघव-पण्डित-द्वारा कैला निवेदन ॥ १२७॥

रघुनाथ—रघुनाथ दास ने; **आसि'**—आकर; **कैला चरण वन्दन**—उनके चरणकमलों की वन्दना की; **राघव-पण्डित-द्वारा**—राघव पण्डित के माध्यम से; **कैला निवेदन**—अपनी इच्छा व्यक्त की।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने वहाँ जाकर नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों की पूजा की। उन्होंने राघव पण्डित के द्वारा अपनी इच्छा निवेदित की।

"অধম, পামর মুই হীন জীবাধম! ।
মোর ইচ্ছা হয়—পাঙ চৈতন্য-চরণ ॥ ১২৮॥

"अधम, पामर मुइ हीन जीवाधम! ।
मोर इच्छा हय—पाङ चैतन्य-चरण ॥ १२८॥

अधम—सबसे पतित; **पामर**—सर्वाधिक पापी; **मुइ**—मैं; **हीन**—हीन; **जीव-अधम**—सभी जीवों से नीच; **मोर**—मेरी; **इच्छा**—इच्छा; **हय**—है; **पाङ**—मैं प्राप्त कर सकूँ; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

"मैं मनुष्यों में अधम, अत्यन्त पापी, पतित तथा तिरस्कृत हूँ। तो भी मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण पाने का इच्छुक हूँ।

वामन हञा येन चान्द धरिवारे चाय ।
अनेक यत्न कैनु, ताते कभु सिद्ध नय ॥१२९॥

वामन हञा ग्रेन चान्द धरिबारे चाय ।
अनेक ग्रत्न कैनु, ताते कभु सिद्ध नय ॥१२९॥

वामन हञा—एक बौना होते हुए; **ग्रेन**—जैसे; **चान्द**—चन्द्रमा; **धरिबारे**—पकड़ना; **चाय**—चाहे; **अनेक ग्रत्न**—अनेक प्रयास; **कैनु**—मैंने किये; **ताते**—उनमें; **कभु सिद्ध नय**—मैं सफल नहीं हुआ।

अनुवाद

चाँद पकड़ने के इच्छुक किसी बौने की तरह मैंने अनेक बार भरसक प्रयत्न किये, किन्तु कभी सफल नहीं हुआ।

यत-बार पलाइ आमि गृहादि छाड़िया ।
पिता, माता——दुइ मोरे राखये बान्धिया ॥१३०॥

ग्रत-बार पलाइ आमि गृहादि छाड़िया ।
पिता, माता——दुइ मोरे राखये बान्धिया ॥१३०॥

ग्रत-बार—जितनी बार; **पलाइ**—भागा; **आमि**—मैं; **गृह-आदि छाड़िया**—अपने घर से सम्बन्ध को त्यागकर; **पिता माता**—पिता और माता; **दुइ**—दोनों ने; **मोरे**—मुझे; **राखये बान्धिया**—बाँध दिया।

अनुवाद

"जितनी बार मैंने भाग जाना और अपने घरेलू सम्बन्ध तोड़ देना चाहा, उतनी बार मेरे पिता तथा माता ने दुर्भाग्यवश मुझे बाँधकर रखा।

तोमार कृपा विना केह 'चैतन्य' ना पाय ।
तुमि कृपा कैले ताँरे अधमेह पाय ॥१३१॥

तोमार कृपा विना केह 'चैतन्य' ना पाय ।
तुमि कृपा कैले ताँरे अधमेह पाय ॥ १३१ ॥

तोमार कृपा—आपकी कृपा; **विना**—बिना; **केह**—कोई भी; **चैतन्य**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना पाय**—नहीं पा सकते; **तुमि कृपा कैले**—यदि आप कृपा करें; **ताँरे**—उस पर; **अधमेह**—एक पतित जीव भी; **पाय**—प्राप्त कर सकता है।

अनुवाद

"आपकी कृपा के बिना कोई भी श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण प्राप्त नहीं कर सकता, किन्तु यदि आप कृपालु हों, तो अधम से अधम व्यक्ति भी उनके चरणकमलों की शरण पा सकता है।

অয়োগ্য মুই নিবেদন করিতে করি ভয় ।
মোরে 'চৈতন্য' দেহ' গোসাঞি হঞা সদয় ॥ ১৩২ ॥

अयोग्य मुइ निवेदन करिते करि भय ।
मोरे 'चैतन्य' देह' गोसाञि हञा सदय ॥ १३२ ॥

अयोग्य—अयोग्य; **मुइ**—मैं; **निवेदन करिते**—अपनी इच्छा प्रकट करते; **करि भय**—मैं भयभीत हूँ; **मोरे**—मुझे; **चैतन्य देह'**—कृपया श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण दे दीजिए; **गोसाञि**—मेरे प्रभु; **हञा स-दय**—दया करके।

अनुवाद

"यद्यपि मैं अयोग्य हूँ और यह याचना करते हुए अत्यधिक भयभीत हूँ, तो भी मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में शरण प्रदान करके मेरे प्रति विशेष कृपालु हों।

মোর মাথে পদ ধরি' করহ প্রসাদ ।
নির্বিঘ্নে চৈতন্য পাঙ——কর আশীর্বাদ'' ॥ ১৩৩ ॥

मोर माथे पद धरि' करह प्रसाद ।
निर्विघ्ने चैतन्य पाङ——कर आशीर्वाद" ॥ १३३ ॥

मोर माथे—मेरे सिर पर; **पद धरि'**—अपने चरण रखकर; **करह प्रसाद**—मुझे कृपा दीजिये; **निर्विघ्ने**—बिना कठिनाई के; **चैतन्य पाङ**—मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण प्राप्त कर सकूँ; **कर आशीर्वाद**—यह आशीर्वाद दीजिए।

अनुवाद

"आप मेरे सिर पर अपने चरण रखकर मुझे यह आशीर्वाद दें कि मैं बिना कठिनाई के श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण प्राप्त कर सकूँ। मैं आपसे इसी आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करता हूँ।"

শুনি' হাসি' কহে প্রভু সব ভক্ত-গণে ।
''ইহার বিষয়-সুখ——ইন্দ্র-সুখ-সম ॥ ১৩৪॥

শুনি' হাসি' কহে প্রভু সব ভক্ত-গণে ।
"ইহার বিষয়-সুখ——ইন্দ্র-সুখ-সমে ॥ ১৩৪॥

শুনি'—सुनकर; **হাসি'**—मुस्कुराकर; **কহে**—कहते हैं; **প্রভু**—नित्यानन्द प्रभु; **সব ভক্ত-গণে**—सभी भक्तों को; **ইহার**—रघुनाथ दास के; **বিষয় সুখ**—भौतिक सुख; **ইন্দ্র-সুখ**—स्वर्ग के राजा इन्द्र के भौतिक सुखों के; **সম**—समान।

अनुवाद

रघुनाथ दास की यह याचना सुनकर नित्यानन्द प्रभु हँसे और सारे भक्तों से बोले, "रघुनाथ दास के भौतिक सुख का स्तर स्वर्ग के राजा इन्द्र के सुख के तुल्य है।

চৈতন্য-কৃপাতে সেহ নাহি ভায় মনে ।
সবে আশীর্বাদ কর——পাউক চৈতন্য-চরণে ॥ ১৩৫॥

চৈতন্য-কৃপাতে সেহ নাহি ভায় মনে ।
সবে আশীর্বাদ কর——পাউক চৈতন্য-চরণে ॥ ১৩৫॥

চৈতন্য-কৃপাতে—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा द्वारा; **সেহ**—भौतिक सुखों के ऐसे योग को; **নাহি ভায়**—वह मूल्यवान नहीं समझता; **মনে**—मन में; **সবে**—आप सभी; **আশীর্বাদ কর**—आशीर्वाद दीजिए; **পাউক**—इसे मिले; **চৈতন্য-চরণে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु की रघुनाथ दास पर कृपा होने से, इतना भौतिक सुख प्राप्त होने पर भी उसे यह अच्छा नहीं लगता। इसलिए तुम सारे लोग

उस पर कृपालु होकर उसे आशीर्वाद दो कि वह शीघ्र ही श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त करे।

কৃষ্ণ-পাদ-পদ্ম-গন্ধ যেই জন পায় ।
ব্রহ্মলোক-আদি-সুখ তাঁরে নাহি ভায়'' ॥১৩৬॥

कृष्ण-पाद-पद्म-गन्ध ग्रेइ जन पाय ।
ब्रह्मलोक-आदि-सुख ताँरे नाहि भाय" ॥ १३६ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण के; **पाद-पद्म**—चरणकमलों की; **गन्ध**—सुगन्ध; **ग्रेइ जन**—जो कोई भी; **पाय**—प्राप्त करता है; **ब्रह्म-लोक**—ब्रह्मलोक; **आदि**—आदि के; **सुख**—सुख; **ताँरे**—उसे; **नाहि भाय**—अच्छे नहीं लगते।

अनुवाद

"जो व्यक्ति कृष्ण के चरणकमलों की सुगन्ध का अनुभव करता है, वह सर्वोच्च लोक ब्रह्मलोक में प्राप्त सुख को भी कोई महत्त्व प्रदान नहीं करता। तो फिर स्वर्गिक सुख की क्या बात है?

যো দুস্ত্যজান্দার-সুতান্সুহৃদ্রাজ্যং হৃদি-স্পৃশঃ ।
জহৌ যুবৈব মল-বদুত্তম-শ্লোক-লালসঃ ॥১৩৭॥

यो दुस्त्यजान्दार-सुतान्सुहृद्राज्यं हृदि-स्पृशः ।
जहौ युवैव मल-वदुत्तम-श्लोक-लालसः ॥ १३७ ॥

यः—जो (महाराज भरत); **दुस्त्यजान्**—त्यागने में कठिन; **दार-सुतान्**—पत्नी और सन्तान; **सुहृत्**—मित्र; **राज्यम्**—राज्य; **हृदि-स्पृशः**—हृदय की गहराइयों को प्रिय; **जहौ**—त्यागकर; **युवा**—युवा; **एव**—उस अवस्था में; **मल-वत्**—विष्ठा के समान; **उत्तम-श्लोक-लालसः**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के दिव्य गुणों, लीलाओं और संग की लालसा के कारण।

अनुवाद

"'पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण की कृपा प्राप्त करने के इच्छुक लोगों द्वारा उनकी उत्तम स्तुतियाँ की जाती हैं। इसलिये वे उत्तमश्लोक कहलाते हैं। भगवान् कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए अत्यन्त उत्सुक होने के कारण राजा भरत ने युवावस्था में ही अपनी अत्यन्त

आकर्षक पत्नी, स्नेहिल बच्चों, प्रिय मित्रों तथा ऐश्वर्ययुक्त साम्राज्य का उसी तरह परित्याग कर दिया, जिस तरह मल को त्याग दिया जाता है।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (५.१४.४३) से है।

तबे रघुनाथे प्रभु निकटे बोलाइला ।
ताँर माथे पद धरि' कहिते लागिला ॥ १३८॥

तबे रघुनाथे प्रभु निकटे बोलाइला ।
ताँर माथे पद धरि' कहिते लागिला ॥ १३८॥

तबे—फिर; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास को; **प्रभु**—नित्यानन्द प्रभु ने; **निकटे बोलाइला**—पास बुलाकर; **ताँर माथे**—उनके सिर पर; **पद धरि'**—अपने चरण रखकर; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

तब नित्यानन्द प्रभु ने रघुनाथ दास को अपने पास बुलाया, उनके सिर पर अपने चरण रखे और उनसे बोले।

"तुमि ये कराइला एई पुलिन-भोजन ।
तोमाय कृपा करि' गौर कैला आगमन ॥ १३९॥

"तुमि ये कराइला एइ पुलिन-भोजन ।
तोमाय कृपा करि' गौर कैला आगमन ॥ १३९॥

तुमि—तुमने; **ये**—जो; **कराइला**—करवाया; **एइ**—यह; **पुलिन-भोजन**—गंगा के किनारे भोज; **तोमाय**—तुम पर; **कृपा करि'**—कृपा करके; **गौर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैला आगमन**—आ गये।

अनुवाद

"हे रघुनाथ दास, चूँकि तुमने गंगा नदी के तट पर इस भोजन की व्यवस्था की है, इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु तुम पर मात्र अपनी कृपा दिखाने के लिए यहाँ आये।

কৃপা করি' কৈলা চিড়া-দুগ্ধ ভোজন ।
নৃত্য দেখি' রাত্র্যে কৈলা প্রসাদ ভক্ষণ ॥ ১৪০ ॥

কৃপা করি' কৈলা চিড়া-দুগ্ধ ভোজন ।
নৃত্য দেখি' রাত্রে কৈলা প্রসাদ ভক্ষণ ॥ ১৪০ ॥

কৃপা করি'—अपनी अहैतुकी कृपा द्वारा; **কৈলা**—किया; **চিড়া-দুগ্ধ ভোজন**—चिड़ा और दूध का भोजन; **নৃত্য দেখি'**—नृत्य देखकर; **রাত্রে**—रात को; **কৈলা প্রসাদ ভক্ষণ**—प्रसाद ग्रहण किया।

अनुवाद

"अपनी अहैतुकी कृपा से उन्होंने चिउड़ा तथा दूध खाया। तत्पश्चात् रात में भक्तों का नृत्य देखने के बाद उन्होंने भोजन किया।

তোমা উদ্ধারিতে গৌর আইলা আপনে ।
ছুটিল তোমার যত বিঘ্নাদি-বন্ধনে ॥ ১৪১ ॥

তোমা উদ্ধারিতে গৌর আইলা আপনে ।
ছুটিল তোমার যত বিঘ্নাদি-বন্ধনে ॥ ১৪১ ॥

তোমা—तुम्हारा; **উদ্ধারিতে**—उद्धार करने के लिए; **গৌর**—श्री चैतन्य महाप्रभु, गौरहरि; **আইলা আপনে**—स्वयं आ गये; **ছুটিল**—छूट गये; **তোমার**—तुम्हारे; **যত**—सभी प्रकार के; **বিঘ্ন-আদি-বন্ধনে**—बन्धन के विघ्न।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु गौरहरि तुम्हारा उद्धार करने के लिए स्वयं यहाँ आये। अब समझ लो कि तुम्हारे बन्धन के सारे अवरोध दूर हो गये।

স্বরূপের স্থানে তোমা করিবে সমর্পণে ।
'অন্তরঙ্গ' ভৃত্য বলি' রাখিবে চরণে ॥ ১৪২ ॥

স্বরূপের স্থানে তোমা করিবে সমর্পণে ।
'অন্তরঙ্গ' ভৃত্য বলি' রাখিবে চরণে ॥ ১৪২ ॥

স্বরূপের স্থানে—स्वरूप दामोदर को; **তোমা**—तुम्हें; **করিবে সমর্পণে**—वे सौंप देंगे; **অন্তরঙ্গ**—अत्यन्त अन्तरंग; **ভৃত্য**—सेवक; **বলি'**—मानकर; **রাখিবে চরণে**—अपने चरणकमलों में रखेंगे।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु तुम्हें स्वीकार कर लेंगे और अपने सचिव स्वरूप दामोदर के अधीन तुम्हें रख देंगे। इस तरह तुम उनके सर्वश्रेष्ठ विश्वस्त अन्तरंग सेवकों में से एक बन जाओगे और श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त करोगे।

निश्चिन्त हञा याह आपन-भवन ।
अचिरे निर्विघ्ने पावे चैतन्य-चरण'' ॥ १४३॥

निश्चिन्त हञा याह आपन-भवन ।
अचिरे निर्विघ्ने पाबे चैतन्य-चरण" ॥ १४३॥

निश्चिन्त—चिन्तामुक्त; **हञा**—होकर; **याह**—जाओ; **आपन-भवन**—अपने घर; **अचिरे**—अति शीघ्र; **निर्विघ्ने**—बिना विघ्न के; **पाबे**—तुम प्राप्त कर लोगे; **चैतन्य-चरण**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

"इस तरह आश्वस्त होकर तुम अपने घर लौट जाओ। तुम शीघ्र ही, बिना किसी अवरोध के श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण प्राप्त करोगे।"

सब भक्त-द्वारे তাঁরে আশীর্বাদ করাইলা ।
তাঁ-সবার চরণ রঘুনাথ বন্দিলা ॥ ১৪৪॥

সব ভক্ত-দ্বারে তাঁরে আশীর্বাদ করাইলা ।
তাঁ-সবার চরণ রঘুনাথ বন্দিলা ॥ ১৪৪॥

सब—सभी; **भक्त-द्वारे**—भक्तों द्वारा; **ताँरे आशीर्वाद कराइला**—उन्हें आशीर्वाद दिलवाया; **ताँ-सबार**—उन सभी के; **चरण**—चरणकमलों में; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **वन्दिला**—वन्दना की।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने समस्त भक्तों से रघुनाथ दास को आशीर्वाद दिलवाया और रघुनाथ दास ने उन सबके चरणकमलों की सादर वन्दना की।

প্রভু-আজ্ঞা লঞা বৈষ্ণবের আজ্ঞা লইলা ।
রাঘব-সহিতে নিভৃতে যুক্তি করিলা ॥ ১৪৫ ॥

প্রভু-আজ্ঞা লঞা বৈষ্ণবের আজ্ঞা লইলা ।
রাঘব-সহিতে নিভৃতে যুক্তি করিলা ॥ ১৪৫ ॥

প্রভু-আজ্ঞা—नित्यानन्द प्रभु की आज्ञा; **लञा**—लेकर; **वैष्णवेर आज्ञा**—सभी वैष्णवों की आज्ञा; **लइला**—उन्होंने ली; **राघव-सहिते**—राघव पण्डित के साथ; **निभृते**—एकान्त स्थान में; **युक्ति करिला**—उन्होंने विचार-विमर्श किया।

अनुवाद

नित्यानन्द प्रभु से तथा उसके बाद अन्य सारे वैष्णवों से आज्ञा लेकर रघुनाथ दास ने राघव पण्डित से गुप्त मन्त्रणा की।

যুক্তি করি' শত মুদ্রা, সোণা তোলা-সাতে ।
নিভৃতে দিলা প্রভুর ভাণ্ডারীর হাতে ॥ ১৪৬ ॥

যুক্তি করি' শত মুদ্রা, সোণা তোলা-সাতে ।
নিভৃতে দিলা প্রভুর ভাণ্ডারীর হাতে ॥ ১৪৬ ॥

युक्ति करि'—विचार-विमर्श करके; **शत मुद्रा**—एक सौ मुद्राएँ; **सोणा**—सोने की; **तोला-साते**—सात तौले के (लगभग ढाई औंस); **निभृते**—गुप्त रूप से; **दिला**—दे दी; **प्रभुर**—नित्यानन्द प्रभु के; **भाण्डारीर**—खजांची के; **हाते**—हाथ में।

अनुवाद

राघव पण्डित से परामर्श लेकर उन्होंने चुपके से नित्यानन्द प्रभु के खजांची के हाथ में एक सौ स्वर्णमुद्राएँ तथा लगभग सात तोला सोना दे दिया।

তাঁরে নিষেধিলা,—"প্রভুরে এবে না কহিবা ।
নিজ-ঘরে যাবেন যবে তবে নিবেদিবা" ॥ ১৪৭ ॥

তাঁরে নিষেধিলা,—"প্রভুরে এবে না কহিবা ।
নিজ-ঘরে যাবেন যবে তবে নিবেদিবা" ॥ ১৪৭ ॥

তাঁরে—उसे; **निषेधिला**—मना किया; **प्रभुरे**—नित्यानन्द प्रभु को; **एबे**—अभी; **ना कहिबा**—मत बताना; **निज-घरे**—अपने घर; **याबेन**—लौट जायेंगे; **यबे**—जब; **तबे**—तब; **निवेदिबा**—कृपया उन्हें बताइएगा।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने खजांची को मना कर दिया कि इसके विषय में अभी नित्यानन्द प्रभु से मत कहना, किन्तु जब वे अपने घर चले जाएँ, तब इस भेंट के बारे में उन्हें बता देना।

তবে রাঘব-পণ্ডিত তাঁরে ঘরে লঞা গেলা ।
ঠাকুর দর্শন করাঞা মালা-চন্দন দিলা ॥১৪৮॥

तबे राघव-पण्डित ताँरे घरे लञा गेला ।
ठाकुर दर्शन कराञा माला-चन्दन दिला ॥ १४८ ॥

तबे—फिर; **राघव-पण्डित**—राघव पण्डित; **ताँरे**—उन्हें; **घरे लञा गेला**—अपने घर ले गये; **ठाकुर दर्शन कराञा**—उन्हें श्री विग्रह के दर्शन करवाकर; **माला-चन्दन**—माला और चन्दन लेप; **दिला**—दिया।

अनुवाद

तत्पश्चात् राघव पण्डित रघुनाथ दास को अपने घर ले गये। उन्हें अर्चाविग्रह का दर्शन कराने के बाद उन्होंने रघुनाथ दास को एक माला तथा कुछ चन्दन लेप दिया।

অনেক 'প্রসাদ' দিলা পথে খাইবারে ।
তবে পুনঃ রঘুনাথ কহে পণ্ডিতেরে ॥১৪৯॥

अनेक 'प्रसाद' दिला पथे खाइबारे ।
तबे पुनः रघुनाथ कहे पण्डितेरे ॥ १४९ ॥

अनेक प्रसाद—बहुत प्रसाद; **दिला**—दिया; **पथे खाइबारे**—मार्ग में खाने के लिए; **तबे**—तब; **पुनः**—फिर; **रघुनाथ कहे**—रघुनाथ दास ने कहा; **पण्डितेरे**—राघव पण्डित से।

अनुवाद

उन्होंने रघुनाथ दास को रास्ते में खाने के लिए बहुत सारा प्रसाद दिया। तब रघुनाथ दास ने पुनः राघव पण्डित से कहा।

"প্রভুর সঙ্গে যত মহান্ত, ভৃত্য, আশ্রিত জন ।
পূজিতে চাহিয়ে আমি সবার চরণ ॥১৫০॥

"प्रभुर सङ्गे यत महान्त, भृत्य, आश्रित जन ।
पूजिते चाहिये आमि सबार चरण ॥ १५० ॥

प्रभुर सङ्गे—नित्यानन्द प्रभु के साथ; **यत**—सभी; **महान्त**—महान् भक्त; **भृत्य**—सेवक; **आश्रित जन**—आश्रित लोग; **पूजिते**—पूजना; **चाहिए**—चाहता हूँ; **आमि**—मैं; **सबार चरण**—उन सभी के चरणकमलों को।

अनुवाद

"मैं नित्यानन्द प्रभु के समस्त महान् भक्तों, सेवकों तथा आश्रित जनों की पूजा के रूप में उनको कुछ धन देना चाहता हूँ।

विंश, पञ्च-दश, बार, दश, पञ्च हय ।
मुद्रा देह' विचारि' यार यत योग्य हय ॥ १५१ ॥
बिंश, पञ्च-दश, बार, दश, पञ्च हय ।
मुद्रा देह' विचारि' यार यत योग्य हय ॥ १५१ ॥

बिंश—बीस; **पञ्च-दश**—पंद्रह; **बार**—बारह; **दश**—दस; **पञ्च**—पाँच; **हय**—हैं; **मुद्रा**—मुद्राएँ; **देह'**—दीजिए; **विचारि'**—विचार कर; **यार**—जिसके लिए; **यत**—जितनी; **योग्य हय**—योग्य हो।

अनुवाद

"आप जिसे जिस योग्य समझो, उनमें से हर एक को बीस, पन्द्रह, बारह, दस या पाँच मुद्राएँ दे दो।"

सब लेखा करिया राघव-पाश दिला ।
याँर नामे यत राघव चिठि लेखाइला ॥ १५२ ॥
सब लेखा करिया राघव-पाश दिला ।
याँर नामे यत राघव चिठि लेखाइला ॥ १५२ ॥

सब—सब; **लेखा करिया**—लिखकर; **राघव-पाश दिला**—राघव पण्डित सौंप दिया; **याँर नामे**—किसके नाम पर; **यत**—कितना; **राघव**—राघव पण्डित ने; **चिठि**—सूची; **लेखाइला**—लिखी।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने दी जाने वाली राशि का विवरण प्रस्तुत किया और

उसे राघव पण्डित को दे दिया, जिसने एक सूची बनाई कि प्रत्येक भक्त को कितनी कितनी राशि दी जानी है।

এক-শত মুদ্রা আর সোণা তোলা-দ্বয় ।
পণ্ডিতের আগে দিল করিয়া বিনয় ॥ ১৫৩ ॥

एक-शत मुद्रा आर सोणा तोला-द्वय ।
पण्डितेर आगे दिल करिया विनय ॥ १५३ ॥

एक-शत मुद्रा—एक सौ मुद्राएँ; **आर**—और; **सोणा**—सोना; **तोला-द्वय**—दो तोला; **पण्डितेर आगे**—राघव पण्डित के समक्ष; **दिल**—रख दिया; **करिया विनय**—अत्यन्त विनम्रतापूर्वक।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने अत्यन्त विनयपूर्वक राघव पण्डित के समक्ष अन्य सारे भक्तों को देने के लिए एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ तथा लगभग दो तोला सोना रख दिया।

তাঁর পদ-ধূলি লঞা স্বগৃহে আইলা ।
নিত্যানন্দ-কৃপা পাঞা কৃতার্থ মানিলা ॥ ১৫৪ ॥

তাঁর পদ-ধূলি লঞা স্বগৃহে আইলা ।
নিত্যানন্দ-কৃপা পাঞা কৃতার্থ মানিলা ॥ ১৫৪ ॥

তাঁর—उनके; **পদ-ধূলি**—चरणों की धूल; **লঞা**—लेकर; **স্ব-গৃহে আইলা**—अपने घर लौट आये; **নিত্যানন্দ-কৃপা**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु की कृपा; **পাঞা**—प्राप्त कर; **কৃতার্থ মানিলা**—उन्होंने अत्यन्त कृतार्थ अनुभव किया।

अनुवाद

राघव पण्डित के चरणों की धूल लेने के बाद रघुनाथ दास अपने घर लौट आये और नित्यानन्द प्रभु के प्रति अतीव कृतज्ञता प्रकट की कि उन्होंने अपना कृपापूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया है।

সেই হৈতে অভ্যন্তরে না করেন গমন ।
বাহিরে দুর্গা-মণ্ডপে যাঞা করেন শয়ন ॥ ১৫৫ ॥

सेइ हैते अभ्यन्तरे ना करेन गमन ।
बाहिरे दुर्गा-मण्डपे ग्राञा करेन शयन ॥ १५५ ॥

सेइ हैते—उन दिन से; **अभ्यन्तरे**—आन्तरिक कक्षों में; **ना करेन गमन**—नहीं गये; **बाहिरे**—बाहर; **दुर्गा-मण्डपे**—जिस स्थान पर दुर्गा देवी की पूजा की जाती थी; **ग्राञा**—जाकर; **करेन शयन**—वह सोते।

अनुवाद

उसी दिन से वे घर के भीतरी भाग में नहीं गये। उल्टे वे दुर्गामण्डप में सोने लगे।

তাঁহা জাগি' রহে সব রক্ষক-গণ ।
পলাইতে করেন নানা উপায় চিন্তন ॥ ১৫৬ ॥

তাঁহা জাগি' রহে সব রক্ষক-গণ ।
পলাইতে করেন নানা উপায় চিন্তন ॥ ১৫৬ ॥

তাঁহা—वहाँ; **জাগি'**—जागते; **রহে**—रहते; **সব**—सभी; **রক্ষক-গণ**—पहरेदार; **পলাইতে**—भागने के लिए; **করেন**—करते; **নানা**—अनेक; **উপায়**—उपाय; **চিন্তন**—विचार।

अनुवाद

किन्तु रखवाले उनकी पूरी चौकसी रखते थे। रघुनाथ दास अनेक उपाय सोचते जिससे वे उनकी निगरानी से भाग निकलें।

হেন-কালে গৌড়-দেশের সব ভক্ত-গণ ।
প্রভুরে দেখিতে নীলাচলে করিলা গমন ॥ ১৫৭ ॥

হেন-কালে গৌড়-দেশের সব ভক্ত-গণ ।
প্রভুরে দেখিতে নীলাচলে করিলা গমন ॥ ১৫৭ ॥

হেন-কালে—उस समय; **গৌড়-দেশের**—बंगाल के; **সব**—सभी; **ভক্ত-গণ**—भक्त; **প্রভুরে**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के; **দেখিতে**—दर्शन के लिए; **নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी; **করিলা গমন**—गये।

अनुवाद

उसी समय बंगाल के सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने जगन्नाथ पुरी जा रहे थे।

তাঁ-সবার সঙ্গে রঘুনাথ যাইতে না পারে ।
প্রসিদ্ধ প্রকট সঙ্গ, তবহিঁ ধরা পড়ে ॥ ১৫৮ ॥

তাঁ-সবার সঙ্গে রঘুনাথ য়াইতে না পারে ।
প্রসিদ্ধ প্রকট সঙ্গ, তবহিঁ ধরা পড়ে ॥ ১৫৮ ॥

তাঁ-সবার—उन सबके; **সঙ্গে**—साथ; **রঘুনাথ**—रघुनाथ दास; **য়াইতে না পারে**—नहीं जा सके; **প্রসিদ্ধ**—विख्यात; **প্রকট**—ज्ञात; **সঙ্গ**—संघ; **তবহিঁ**—तुरन्त; **ধরা পড়ে**—वे पकड़े जाते।

अनुवाद

रघुनाथ दास उनके साथ नहीं जा सकते थे, क्योंकि वे इतने प्रसिद्ध थे कि यदि वह उनके साथ जाते तो पकड़ लिए जाते।

এই-মত চিন্তিতে দৈবে এক-দিনে ।
বাহিরে দেবী-মণ্ডপে করিয়াছেন শয়নে ॥ ১৫৯ ॥
দণ্ড-চারি রাত্রি যবে আছে অবশেষ ।
যদুনন্দন-আচার্য তবে করিলা প্রবেশ ॥ ১৬০ ॥

এই-মত চিন্তিতে দৈবে এক-দিনে ।
বাহিরে দেবী-মণ্ডপে করিয়াছেন শয়নে ॥ ১৫৯ ॥
দণ্ড-চারি রাত্রি য়বে আছে অবশেষ ।
য়দুনন্দন-আচার্য্য তবে করিলা প্রবেশ ॥ ১৬০ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **চিন্তিতে**—विचार करते हुए; **দৈবে**—भाग्य से; **এক দিনে**—एक दिन; **বাহিরে**—घर के बाहर; **দেবী-মণ্ডপে**—दुर्गा मण्डप पर; **করিয়াছেন শয়নে**—सो रहे थे; **দণ্ড-চারি**—चार दण्ड (९६ मिनट); **রাত্রি**—रात; **য়বে**—जब; **আছে অবশেষ**—रह गये; **য়দুনন্দন-আচার্য্য**—यदुनन्दन आचार्य नामक पुजारी; **তবে**—तब; **করিলা প্রবেশ**—प्रवेश किया।

अनुवाद

इस प्रकार रघुनाथ दास ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया कि किस तरह भाग निकला जाए और एक रात जब वह दुर्गामण्डप में सो रहे थे, तो पुरोहित यदुनन्दन आचार्य घर के भीतर गये। तब केवल चार दण्ड रात्रि शेष थी।

বাসুদেব-দত্তের তেঁহ হয় 'অনুগৃহীত' ।
রঘুনাথের 'গুরু' তেঁহো হয় 'পুরোহিত' ॥ ১৬১ ॥

वासुदेव-दत्तेर तेंह हय 'अनुगृहीत' ।
रघुनाथेर 'गुरु' तेंहो हय 'पुरोहित' ॥ १६१ ॥

वासुदेव-दत्तेर—वासुदेव दत्त की; **तेंह**—उन्हें; **हय अनुगृहीत**—कृपा प्राप्त थी; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास के; **गुरु**—आध्यात्मिक गुरु; **तेंहो**—वे; **हय**—थे; **पुरोहित**—पुजारी।

अनुवाद

यदुनन्दन आचार्य रघुनाथ दास के पुरोहित और गुरु थे। यद्यपि वे ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न थे, किन्तु उन्होंने वासुदेव दत्त की कृपा स्वीकार की थी।

অদ্বৈত-আচার্যের তেঁহ 'শিষ্য অন্তরঙ্গ' ।
আচার্য-আজ্ঞাতে মানে—চৈতন্য 'প্রাণ-ধন' ॥ ১৬২ ॥

अद्वैत-आचार्य्येर तेंह 'शिष्य अन्तरङ्ग' ।
आचार्य्य-आज्ञाते माने—चैतन्य 'प्राण-धन' ॥ १६२ ॥

अद्वैत-आचार्य्येर—अद्वैत आचार्य के; **तेंह**—यदुनन्दन आचार्य; **शिष्य**—शिष्य; **अन्तरङ्ग**—अति अन्तरंग; **आचार्य्य-आज्ञाते**—अद्वैत आचार्य के आदेश पर; **माने**—उन्होंने मान लिया; **चैतन्य प्राण-धन**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने प्राण और आत्मा के रूप में।

अनुवाद

यदुनन्दन आचार्य ने प्रामाणिक रूप से अद्वैत आचार्य से दीक्षा ली थी। इस तरह वे श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने जीवन और प्राण मानते थे।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि यद्यपि श्री अद्वैत आचार्य के आदेश का पालन न करने वाले नास्तिक भी अपने आपको अद्वैत आचार्य का अनुयायी कहते हैं, किन्तु वे श्री चैतन्य महाप्रभु को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण के रूप में स्वीकार नहीं करते। यदुनन्दन आचार्य श्री चैतन्य महाप्रभु के सर्वाधिक अन्तरंग अनुयायियों में से एक थे और अद्वैत आचार्य के दीक्षित शिष्य थे। वे वैष्णवों को जन्म के अनुसार वर्गीकरण करने की भावुक

प्रथा से ग्रस्त नहीं थे। इसलिए यदुनन्दन आचार्य ने भी वासुदेव दत्त को अपना गुरु मान लिया था, यद्यपि वे ब्राह्मण परिवार में नहीं जन्मे थे।

অঙ্গনে আসিয়া তেঁহো যবে দাণ্ডাইলা ।
রঘুনাথ আসি' তবে দণ্ডবৎকৈলা ॥ ১৬৩ ॥

অঙ্গনে আসিয়া তেঁহো য়বে দাণ্ডাইলা ।
রঘুনাথ আসি' তবে দণ্ডবৎ কৈলা ॥ ১৬৩ ॥

अङ्गने—आँगन में; **आसिया**—प्रवेश करके; **तेंहो**—यदुनन्दन आचार्य; **य्रबे**—जब; **दाण्डाइला**—खड़े हो गये; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **आसि'**—आकर; **तबे**—उस समय; **दण्डवत् कैला**—दण्डवत् प्रणाम किया।

अनुवाद

जब यदुनन्दन आचार्य रघुनाथदास के घर में जाकर आँगन में खड़े हुए, तो रघुनाथ दास वहाँ गये और उन्होंने उनके चरणों में गिरकर नमस्कार किया।

তাঁর এক শিষ্য তাঁর ঠাকুরের সেবা করে ।
সেবা ছাড়িয়াছে, তারে সাধিবার তরে ॥ ১৬৪ ॥

তাঁর এক শিষ্য তাঁর ঠাকুরের সেবা করে ।
সেবা ছাড়িয়াছে, তারে সাধিবার তরে ॥ ১৬৪ ॥

ताँर—उनका; **एक**—एक; **शिष्य**—शिष्य; **ताँर**—उनके; **ठाकुरेर**—विग्रह की; **सेवा**—सेवा; **करे**—करता; **सेवा छाड़ियाछे**—उसने वह सेवा छोड़ दी; **तारे**—उसे; **साधिबार तरे**—प्रेरित करने के लिए।

अनुवाद

यदुनन्दन आचार्य का एक शिष्य अर्चाविग्रह की पूजा करता आ रहा था, किन्तु उसने वह सेवा छोड़ दी थी। यदुनन्दन आचार्य चाहते थे कि रघुनाथ दास उसे वही सेवा पुनः करने के लिए प्रेरित करें।

রঘুনাথে কহে,—"তারে করহ সাধন ।
সেবা যেন করে, আর নাহিক ব্রাহ্মণ" ॥ ১৬৫ ॥

रघुनाथे कहे,—"तारे करह साधन ।
सेवा ग्रेन करे, आर नाहिक ब्राह्मण" ॥ १६५ ॥

रघुनाथे कहे—उन्होंने रघुनाथ दास से कहा; **तारे**—उसे; **करह साधन**—सेवा जारी रखने के लिए प्रेरित करना; **सेवा**—सेवा; **ग्रेन**—वह; **करे**—वह करे; **आर**—अन्य; **नाहिक**—नहीं है; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण।

अनुवाद

यदुनन्दन आचार्य ने रघुनाथ दास से अनुरोध किया, "तुम उस ब्राह्मण को फिर से सेवा करने के लिए प्रेरित करके लाओ, क्योंकि सेवा करने के लिए अन्य कोई ब्राह्मण नहीं है।"

एत कहि' रघुनाथे लञा चलिला ।
रक्षक सब शेष-रात्रे निद्राय पड़िला ॥ १६६ ॥
एत कहि' रघुनाथे लञा चलिला ।
रक्षक सब शेष-रात्रे निद्राय पड़िला ॥ १६६ ॥

एत कहि'—यह कहकर; **रघुनाथे लञा**—रघुनाथ दास को लेकर; **चलिला**—वे चले गये; **रक्षक सब**—सारे पहरेदार; **शेष-रात्रे**—रात के अन्त में; **निद्राय पड़िला**—सो गये।

अनुवाद

यह कहकर यदुनन्दन आचार्य ने रघुनाथ दास को अपने साथ ले लिया और दोनों बाहर चले गये। उस समय तक सारे पहरेदार गहरी नींद में सोये हुए थे, क्योंकि रात का अन्तिम प्रहर था।

आचार्यर घर इहार पूर्व-दिशाते ।
कहिते शुनिते दुँहे चले सेइ पथे ॥ १६७ ॥
आचार्यर घर इहार पूर्व-दिशाते ।
कहिते शुनिते दुँहे चले सेइ पथे ॥ १६७ ॥

आचार्यर घर—यदुनन्दन आचार्य का घर; **इहार**—इससे; **पूर्व-दिशाते**—पूर्व दिशा में; **कहिते**—कहते हुए; **शुनिते**—सुनते हुए; **दुँहे**—वे दोनों; **चले**—गये; **सेइ पथे**—उस मार्ग पर।

अनुवाद

रघुनाथ दास के घर से पूर्व की ओर यदुनन्दन आचार्य का घर था। वे दोनों घर की ओर जाते हुए एक दूसरे से बातें करते गये।

अर्ध-पथे रघुनाथ कहे गुरुर चरणे ।
''आमि सेइ विप्रे साधि' पाठाइमु तोमा स्थाने ॥ १६८॥

अर्ध-पथे रघुनाथ कहे गुरुर चरणे ।
"आमि सेइ विप्रे साधि' पाठाइमु तोमा स्थाने ॥ १६८॥

अर्ध-पथे—आधे रास्ते में; **रघुनाथ कहे**—रघुनाथ दास ने कहा; **गुरुर चरणे**—अपने गुरुदेव के चरणकमलों में; **आमि**—मैं; **सेइ**—उस; **विप्रे**—ब्राह्मण को; **साधि'**—मनाकर; **पाठाइमु**—भेज दूँगा; **तोमा स्थाने**—आपके घर।

अनुवाद

आधी दूर जाकर रघुनाथ दास ने अपने गुरु के चरणों में निवेदन किया, "मैं उस ब्राह्मण के घर जाऊँगा, उसे लौट आने के लिए प्रेरित करूँगा तथा उसे आपके घर भेज दूँगा।

तुमि सुखे घरे याह——मोरे आज्ञा हय'' ।
एइ छले आज्ञा मागि' करिला निश्चय ॥ १६९॥

तुमि सुखे घरे याह——मोरे आज्ञा हय" ।
एइ छले आज्ञा मागि' करिला निश्चय ॥ १६९॥

तुमि—आप; **सुखे**—सुखपूर्वक; **घरे याह**—अपने घर जाइये; **मोरे**—मुझे; **आज्ञा**—आज्ञा; **हय**—है; **एइ छले**—इस बहाने; **आज्ञा मागि'**—आज्ञा माँगकर; **करिला निश्चय**—निश्चय किया।

अनुवाद

"आप निश्चिन्त होकर घर जा सकते हैं। आपकी आज्ञानुसार मैं उस ब्राह्मण को मना लाऊँगा।" इस निवेदन के साथ उनकी अनुमति लेकर रघुनाथ दास ने चले जाने का निश्चय किया।

"सेवक रक्षक आर केह नाहि सङ्गे ।
पलाइते आमार भाल एइत प्रसङ्गे" ॥ १७०॥

"सेवक रक्षक आर केह नाहि सङ्गे ।
पलाइते आमार भाल एइत प्रसङ्गे" ॥ १७०॥

सेवक—सेवक; **रक्षक**—पहरेदार; **आर**—और; **केह नाहि**—कोई नहीं है; **सङ्गे**—साथ; **पलाइते**—भागने के लिए; **आमार**—मेरे; **भाल**—अच्छा; **एइत**—यह; **प्रसङ्गे**—अवसर।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने सोचा, "भाग जाने का यह सबसे अच्छा अवसर है, क्योंकि इस समय मेरे साथ न तो कोई नौकर है, न ही पहरेदार।"

एत चिन्ति' पूर्व-मुखे करिला गमन ।
उलटिया चाहे पाछे,—नाहि कोन जन ॥ १७१॥

एत चिन्ति' पूर्व-मुखे करिला गमन ।
उलटिया चाहे पाछे,—नाहि कोन जन ॥ १७१॥

एत चिन्ति'—यह सोचकर; **पूर्व-मुखे**—पूर्व की ओर; **करिला गमन**—आगे बढ़ने लगे; **उलटिया**—मुड़कर; **चाहे**—देखते; **पाछे**—पीछे; **नाहि कोन जन**—वहाँ कोई नहीं था।

अनुवाद

इस तरह सोचते हुए वे पूर्व की दिशा में तेजी से बढ़ते गये। कभी-कभी वे घूमकर पीछे देख लेते, किन्तु कोई उनका पीछा नहीं कर रहा था।

श्री-चैतन्य-नित्यानन्द-चरण चिन्तिया ।
पथ छाड़ि' उपपथे याय़েन धाञा ॥ १७२॥

श्री-चैतन्य-नित्यानन्द-चरण चिन्तिया ।
पथ छाड़ि' उपपथे य़ायेन धाञा ॥ १७२॥

श्री-चैतन्य—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **नित्यानन्द**—भगवान् नित्यानन्द प्रभु के; **चरण**—चरणकमलों का; **चिन्तिया**—चिन्तन करते हुए; **पथ छाड़ि'**—साधारण मार्ग छोड़कर; **उपपथे**—उस मार्ग से जिसका सामान्यत: प्रयोग नहीं होता; **य़ायेन धाञा**—वे अत्यन्त तेजी से गये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु तथा नित्यानन्द प्रभु के चरणकमलों का ध्यान करते हुए उन्होंने आम रास्ता छोड़ दिया और गौण रास्ते से होकर, जो सामान्यतः उपयोग में नहीं लिया जाता था, शीघ्रता से आगे बढ़ने लगे।

গ্রামে-গ্রামের পথ ছাড়ি' যায় বনে বনে ।
কায়-মনো-বাক্যে চিন্তে চৈতন্য-চরণে ॥ ১৭৩ ॥

গ্রামে-গ্রামের পথ ছাড়ি' য়ায় বনে বনে ।
কায়-মনো-বাক্যে চিন্তে চৈতন্য-চরণে ॥ ১৭৩ ॥

ग्रामे-ग्रामेर—गाँव गाँव के; **पथ**—सामान्य मार्ग; **छाड़ि'**—छोड़कर; **य्राय**—जाते; **वने वने**—जंगलों से; **काय-मनः-वाक्ये**—शरीर, मन तथा वचनों से; **चिन्ते**—ध्यान करते; **चैतन्य चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

वे एक गाँव से दूसरे गाँव के आम रास्ते को छोड़ते हुए अपने प्राणों तथा मन से श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का ध्यान करते हुए जंगलों से होते हुए आगे चलते गये।

পঞ্চ-দশ-ক্রোশ-পথ চলি' গেলা এক-দিনে ।
সন্ধ্যা-কালে রহিলা এক গোপের বাথানে ॥ ১৭৪ ॥

পঞ্চ-দশ-ক্রোশ-পথ চলি' গেলা এক-দিনে ।
সন্ধ্যা-কালে রহিলা এক গোপের বাথানে ॥ ১৭৪ ॥

पञ्च-दश-क्रोश—लगभग तीस मील; **पथ चलि'**—मार्ग पर चलकर; **गेला**—गये; **एक-दिने**—एक दिन में; **सन्ध्या-काले**—शाम को; **रहिला**—रूके; **एक गोपेर**—एक ग्वाले की; **बाथाने**—गोशाला में।

अनुवाद

वे एक दिन में लगभग तीस मील चले और शाम को उन्होंने एक ग्वाले की गोशाला में विश्राम किया।

উপবাসী দেখি' গোপ দুগ্ধ আনি' দিলা ।
সেই দুগ্ধ পান করি' পড়িয়া রহিলা ॥ ১৭৫ ॥
उपवासी देखि' गोप दुग्ध आनि' दिला ।
सेइ दुग्ध पान करि' पड़िया रहिला ॥ १७५ ॥

उपवासी—उपवास करते; **देखि'**—देखकर; **गोप**—ग्वाले ने; **दुग्ध**—दूध; **आनि'**—लाकर; **दिला**—दिया; **सेइ दुग्ध**—वह दूध; **पान करि'**—पीकर; **पड़िया**—लेटकर; **रहिला**—रह गये।

अनुवाद

जब उस ग्वाले ने देखा कि रघुनाथ दास उपवास कर रहे हैं, तो उसने उन्हें कुछ दूध दिया। रघुनाथ दास ने वह दूध पिया और रात भर विश्राम करने के लिए वहाँ लेट गये।

এথা তাঁর সেবক রক্ষক তাঁরে না দেখিয়া ।
তাঁর গুরু-পাশে বার্তা পুছিলেন গিয়া ॥ ১৭৬ ॥
एथा ताँर सेवक रक्षक ताँरे ना देखिया ।
ताँर गुरु-पाशे वार्ता पुछिलेन गिया ॥ १७६ ॥

एथा—यहाँ, उनके घर पर; **ताँर**—उनके; **सेवक**—सेवक; **रक्षक**—पहरेदार; **ताँरे**—उन्हें; **ना देखिया**—न देखकर; **ताँर गुरु-पाशे**—उनके गुरु के पास; **वार्ता**—खबर; **पुछिलेन**—पूछने के लिए; **गिया**—गये।

अनुवाद

रघुनाथ दास के घर में जब नौकर तथा पहरेदार ने उन्हें नहीं देखा, तो तुरन्त ही वे उनके गुरु यदुनन्दन आचार्य के पास उनके विषय में पूछने गये।

তেঁহ কহে, 'আজ্ঞা মাগি' গেলা নিজ-ঘর' ।
'পলাইল রঘুনাথ'—উঠিল কোলাহল ॥ ১৭৭ ॥
तेंह कहे, 'आज्ञा मागि' गेला निज-घर' ।
'पलाइल रघुनाथ'—उठिल कोलाहल ॥ १७७ ॥

तेंह कहे—उन्होंने कहा; **आज्ञा मागि'**—मुझसे आज्ञा लेकर; **गेला**—गया है; **निज घर**—अपने घर; **पलाइल रघुनाथ**—रघुनाथ भाग गया; **उठिल**—गूँज उठी; **कोलाहल**—उच्च ध्वनि।

अनुवाद

यदुनन्दन आचार्य ने कहा, "वह मुझसे आज्ञा माँगकर घर लौट गया।" इस तरह वहाँ कोलाहल उठने लगा, क्योंकि हर व्यक्ति चिल्ला रहा था कि, "अब रघुनाथ भाग गया है!"

তাঁর পিতা কহে,—"গৌড়ের সব ভক্ত-গণ ।
প্রভু-স্থানে নীলাচলে করিলা গমন ॥ ১৭৮॥
তাঁর পিতা কহে,—"গৌড়ের সব ভক্ত-গণ ।
প্রভু-স্থানে নীলাচলে করিলা গমন ॥ ১৭৮॥

তাঁর—उनके; **पिता**—पिता ने; **कहे**—कहा; **गौड़ेर**—बंगाल के; **सब**—सभी; **भक्त गण**—भक्तगण; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **करिला गमन**—गये हैं।

अनुवाद

रघुनाथ दास के पिता ने कहा, "अब बंगाल के सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने जगन्नाथपुरी गये हैं।

সেই-সঙ্গে রঘুনাথ গেল পলাঞা ।
দশ জন যাহ, তারে আনহ ধরিয়া" ॥ ১৭৯॥
সেই-সঙ্গে রঘুনাথ গেল পলাঞা ।
দশ জন যাহ, তারে আনহ ধরিয়া" ॥ ১৭৯॥

সেই-সঙ্গে—उनके साथ; **রঘুনাথ**—रघुनाथ दास; **গেল পলাঞা**—भाग गया; **দশ জন**—दस लोग; **যাহ**—जाकर; **তারে**—उसे; **আনহ**—लाओ; **ধরিয়া**—पकड़कर।

अनुवाद

"रघुनाथ दास उन्हीं के साथ भाग गया है। दस व्यक्ति तुरन्त उसे पकड़ने के लिए जायें और उसे लौटा ले आयें।"

শিবানন্দে পত্রী দিল বিনয় করিয়া ।
'আমার পুত্রেরে তুমি দিবা বাহুড়িয়া' ॥ ১৮০ ॥

শিবানন্দে পত্রী দিল বিনয় করিয়া ।
'আমার পুত্রেরে তুমি দিবা বাহুড়িয়া' ॥ ১৮০ ॥

শিবানন্দে—शिवानन्द सेन को; **পত্রী**—एक पत्र; **দিল**—भेजा; **বিনয় করিয়**—निवेदनपूर्वक; **আমার পুত্রেরে**—मेरे पुत्र को; **তুমি**—आप; **দিবা**—कृपया दे दीजिए; **বাহুড়িয়া**—वापस।

अनुवाद

रघुनाथ दास के पिता ने शिवानन्द सेन के नाम एक चिट्ठी लिखी और उनसे अत्यन्त विनयपूर्वक अनुरोध किया, "कृपया मेरे पुत्र को लौटाकर भेज दें।"

ঝাঙ্করা পর্যন্ত গেল সেই দশ জনে ।
ঝাঙ্করাতে পাইল গিয়া বৈষ্ণবের গণে ॥ ১৮১ ॥

ঝাঙ্করা পর্য্যন্ত গেল সেই দশ জনে ।
ঝাঙ্করাতে পাইল গিয়া বৈষ্ণবের গণে ॥ ১৮১ ॥

ঝাঙ্করা পর্য্যন্ত—झाँकरा नामक स्थान तक; **গেল**—गये; **সেই দশ জনে**—वे दस लोग; **ঝাঙ্করাতে**—झाँकरा में; **পাইল**—मिले; **গিয়া**—जाकर; **বৈষ্ণবের গণে**—वैष्णवों के एक समूह से।

अनुवाद

झाँकरा में दसों व्यक्ति वैष्णवों की एक टोली के साथ हो गये, जो नीलाचल जा रही थी।

পত্রী দিয়া শিবানন্দে বার্তা পুছিল ।
শিবানন্দ কহে,—'তেঁহ এথা না আইল' ॥ ১৮২ ॥

পত্রী দিয়া শিবানন্দে বার্তা পুছিল ।
শিবানন্দ কহে,—'তেঁহ এথা না আইল' ॥ ১৮২ ॥

পত্রী—पत्र; **দিয়া**—दिया; **শিবানন্দে**—शिवानन्द सेन को; **বার্তা**—खबर; **পুছিল**—पूछे; **শিবানন্দ কহে**—शिवानन्द सेन ने कहा; **তেঁহ**—वह; **এথা**—यहाँ; **না আইল**—नहीं आया।

अनुवाद

उन लोगों ने वह चिट्ठी देकर शिवानन्द सेन से रघुनाथ दास के विषय में पूछा, किन्तु शिवानन्द सेन ने उत्तर दिया कि, "वह यहाँ नहीं आया।"

বাহুড়িয়া সেই দশ জন আইল ঘর ।
তাঁর মাতা-পিতা হইল চিন্তিত অন্তর ॥ ১৮৩ ॥

বাহুড়িয়া সেই দশ জন আইল ঘর ।
তাঁর মাতা-পিতা হইল চিন্তিত অন্তর ॥ ১৮৩ ॥

বাহুড়িয়া—लौटकर; **সেই**—वे; **দশ জন**—दस लोग; **আইল ঘর**—घर वापस आ गये; **তাঁর**—उनके; **মাতা-পিতা**—माता पिता; **হইল**—हो गये; **চিন্তিত**—चिन्ताग्रस्त; **অন্তর**—अपने मन में।

अनुवाद

दसों लोग घर लौट आये। रघुनाथ दास के माता-पिता अत्यधिक चिन्तित हो उठे।

এথা রঘুনাথ-দাস প্রভাতে উঠিয়া ।
পূর্ব-মুখ ছাড়ি' চলে দক্ষিণ-মুখ হঞা ॥ ১৮৪ ॥

এথা রঘুনাথ-দাস প্রভাতে উঠিয়া ।
পূর্ব-মুখ ছাড়ি' চলে দক্ষিণ-মুখ হঞা ॥ ১৮৪ ॥

এথা—यहाँ; **রঘুনাথ-দাস**—रघुनाथ दास; **প্রভাতে**—प्रातः काल में; **উঠিয়া**—उठकर; **পূর্ব-মুখ**—पूर्व दिशा; **ছাড়ি'**—छोड़कर; **চলে**—चलने लगे; **দক্ষিণ-মুখ**—दक्षिण दिशा को; **হঞা**—होकर।

अनुवाद

रघुनाथ दास, जो ग्वाले के घर में विश्राम कर रहे थे, प्रातःकाल जल्दी जगे और पूर्व दिशा में जाने के स्थान पर उन्होंने अपना मुँह दक्षिण की ओर मोड़ा और आगे बढ़ने लगे।

ছত্রভোগ পার হঞা ছাড়িয়া সরাণ ।
কুগ্রাম দিয়া দিয়া করিল প্রয়াণ ॥ ১৮৫ ॥

छत्रभोग पार हञा छाड़िया सराण ।
कुग्राम दिया दिया करिल प्रयाण ॥ १८५॥

छत्र-भोग—छत्रभोग नामक स्थान; **पार हञा**—पार करके; **छाड़िया**—छोड़कर; **सराण**—राजमार्ग; **कुग्राम दिया दिया**—गाँव के मार्गों से होते हुए; **करिल प्रयाण**—आगे बढ़ते रहे।

अनुवाद

छत्रभोग पार करने के बाद वे आम रास्ते से न जाकर ऐसे रास्ते से गये, जो एक गाँव से दूसरे गाँव होकर जाता था।

तात्पर्य

छत्रभोग अब छाड़खाड़ि कहलाता है और पश्चिम बंगाल के चौबीस परगना जिले में है। यह सुविख्यात गाँव जयनगर मजिलपुर के निकट स्थित है। पहले इस भाग से होकर गंगा नदी या इसकी कुछ शाखाएँ बहती थीं। कभी-कभी भूल से छत्रभोग को बेनापोल में काँसाइ-नदी पर स्थित गाँव के रूप में मान लिया जाता है।

ভক্ষণ অপেক্ষা নাহি, সমস্ত দিবস গমন ।
ক্ষুধা নাহি বাধে, চৈতন্য-চরণ-প্রাপ্ত্যে মন ॥ ১৮৬॥

ভক্ষণ অপেক্ষা নাহি, সমস্ত দিবস গমন ।
ক্ষুধা নাহি বাধে, চৈতন্য-চরণ-প্রাপ্ত্যে মন ॥ ১৮৬॥

भक्षण अपेक्षा नाहि—खाने की परवाह नहीं की; **समस्त दिवस**—पूरा दिन; **गमन**—यात्रा करते; **क्षुधा**—भूख; **नाहि बाधे**—बाधा नहीं बनी; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को; **प्राप्त्ये**—प्राप्त करने का; **मन**—मन।

अनुवाद

भोजन की परवाह न करके वे सारा दिन चलते रहते। भूख बाधक न थी, क्योंकि उनका मन श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण पाने पर केन्द्रित था।

কভু চর্বণ, কভু রন্ধন, কভু দুগ্ধ-পান ।
যবে যেই মিলে, তাহে রাখে নিজ প্রাণ ॥ ১৮৭॥

कभु चर्वण, कभु रन्धन, कभु दुग्ध-पान ।
ग्रबे ग्रेइ मिले, ताहे राखे निज प्राण ॥ १८७॥

कभु चर्वण—कभी चबाकर; **कभु रन्धन**—कभी पकाकर; **कभु दुग्ध-पान**—कभी दूध पीकर; **ग्रबे**—जब; **ग्रेइ**—जो कुछ; **मिले**—मिलता; **ताहे**—उस प्रकार; **राखे**—रखते; **निज प्राण**—अपने प्राण।

अनुवाद

कभी वे चबैना चबाते, कभी वे भोजन पकाते और कभी दूध पी लेते। इस तरह जहाँ वे जाते, उन्हें जो कुछ भी मिल जाता उसी से प्राणों की रक्षा करते।

বার দিনে চলি' গেলা শ্রী-পুরুষোত্তম ।
পথে তিন-দিন মাত্র করিলা ভোজন ॥১৮৮॥
बार दिने चलि' गेला श्री-पुरुषोत्तम ।
पथे तिन-दिन मात्र करिला भोजन ॥ १८८॥

बार दिने—बारह दिन तक; **चलि'**—यात्रा करके; **गेला**—पहुँचे; **श्री-पुरुषोत्तम**—जगन्नाथ पुरी या पुरुषोत्तम क्षेत्र, नीलाचल; **पथे**—मार्ग में; **तिन-दिन**—तीन दिन; **मात्र**—केवल; **करिला भोजन**—उन्होंने भोजन किया।

अनुवाद

वे बारह दिनों में जगन्नाथपुरी पहुँचे, किन्तु रास्ते में उन्होंने तीन दिन ही भोजन किया।

স্বরূপাদি-সহ গোসাঞি আছেন বসিয়া ।
হেন-কালে রঘুনাথ মিলিল আসিয়া ॥১৮৯॥
स्वरूपादि-सह गोसाञि आछेन वसिया ।
हेन-काले रघुनाथ मिलिल आसिया ॥ १८९॥

स्वरूप-आदि-सह—स्वरूप दामोदर आदि भक्तों के संग में; **गोसाञि**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **आछेन वसिया**—बैठे हुए थे; **हेन-काले**—इस समय; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **मिलिल**—मिले; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले, तब महाप्रभु स्वरूप दामोदर इत्यादि अपने संगियों के साथ बैठे हुए थे।

অঙ্গনেতে দূরে রহি' করেন প্রণিপাত ।
মুকুন্দ-দত্ত কহে,—'এই আইল রঘুনাথ' ॥১৯০॥

अङ्गनेते दूरे रहि' करेन प्रणिपात ।
मुकुन्द-दत्त कहे,—'एइ आइल रघुनाथ' ॥ १९० ॥

अङ्गनेते—आँगन में; **दूरे रहि'**—स्वयं को दूर रखते हुए; **करेन प्रणिपात**—प्रणाम किया; **मुकुन्द-दत्त कहे**—मुकुन्द दत्त ने कहा; **एइ**—यह; **आइल**—आ गया; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास।

अनुवाद

आँगन में कुछ दूर रुककर उन्होंने दण्डवत् प्रणाम् किया। तब मुकुन्द दत्त ने कहा, "यह रघुनाथ आ गया।"

প্রভু কহেন,—'আইস', তেঁহো ধরিলা চরণ ।
উঠি' প্রভু কৃপায় তাঁরে কৈলা আলিঙ্গন ॥১৯১॥

प्रभु कहेन,—'आइस', तेंहो धरिला चरण ।
उठि' प्रभु कृपाय ताँरे कैला आलिङ्गन ॥ १९१ ॥

प्रभु कहेन—महाप्रभु ने कहा; **आइस**—इधर आओ; **तेंहो**—उन्होंने (रघुनाथ ने); **धरिला चरण**—उनके चरणकमल पकड़ लिए; **उठि'**—उठकर; **प्रभु**—महाप्रभु ने; **कृपाय**—कृपापूर्वक; **ताँरे**—उन्हें; **कैला आलिङ्गन**—गले से लगा लिया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने ये शब्द सुनते ही तुरन्त रघुनाथ दास का स्वागत किया। उन्होंने कहा, "यहाँ आओ।" तब रघुनाथ दास ने उनके चरणकमल पकड़ लिए, किन्तु महाप्रभु खड़े हो गये और अपनी अहैतुकी कृपा से उनका आलिंगन कर लिया।

স্বরূপাদি সব ভক্তের চরণ বন্দিলা ।
প্রভু-কৃপা দেখি' সবে আলিঙ্গন কৈলা ॥১৯২॥

स्वरूपादि सब भक्तेर चरण वन्दिला ।
प्रभु-कृपा देखि' सबे आलिङ्गन कैला ॥ १९२॥

स्वरूप-आदि—स्वरूप दामोदर आदि; **सब भक्तेर**—सभी भक्तों के; **चरण वन्दिला**—चरणकमलों में प्रार्थनाएँ की; **प्रभु-कृपा**—चैतन्य महाप्रभु की कृपा; **देखि'**—देखकर; **सबे**—उन सबने; **आलिङ्गन कैला**—आलिंगन किया।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्तों के चरणकमलों की वन्दना की। उन्होंने भी, यह देखकर कि रघुनाथ दास पर महाप्रभु ने विशेष कृपा की है, उनका आलिंगन किया।

প্রভু কহে,—"কৃষ্ণ-কৃপা বলিষ্ঠ সবা হৈতে ।
তোমারে কাড়িল বিষয়-বিষ্ঠা-গর্ত হৈতে" ॥১৯৩॥

प्रभु कहे,—"कृष्ण-कृपा बलिष्ठ सबा हैते ।
तोमारे काड़िल विषय-विष्ठा-गर्त हैते" ॥ १९३॥

प्रभु कहे—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **कृष्ण-कृपा**—भगवान् कृष्ण की कृपा; **बलिष्ठ**—अत्यन्त शक्तिशाली; **सबा हैते**—सबसे; **तोमारे**—तुम पर; **काड़िल**—उन्होंने निकाल दिया; **विषय**—भौतिक आनन्द; **विष्ठा**—विष्ठा; **गर्त**—नाली; **हैते**—से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "भगवान् कृष्ण की कृपा सबसे प्रबल होती है। इसलिए भगवान् ने तुम्हें भौतिकतावादी जीवन की खाई से उबार लिया है, जो उस छेद के समान है, जिसमें लोग मल त्याग करते हैं।"

तात्पर्य

कर्म के नियम के अनुसार हर व्यक्ति को किसी भौतिक मानदण्ड के अनुसार दुःख या सुख भोगना पड़ता है, किन्तु भगवान् कृष्ण की कृपा इतनी प्रबल है कि मनुष्य के सारे विगत कर्मफलों को बदल सकती है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण-कृपा की ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया। यह कृपा

अन्य किसी वस्तु से अधिक प्रबल है, क्योंकि इसने रघुनाथ दास को भौतिकतावादी जीवन के प्रबल बन्धन से बचाया, जिसकी तुलना महाप्रभु ने उस छेद से की है, जहाँ लोग मल त्याग करते हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह निर्णय दिया कि जो लोग भौतिकतावादी जीवन में लिप्त रहते हैं, वे मल में रहने वाले उन कीड़ों के समान हैं, जो उसे त्याग नहीं सकते। एक *गृहव्रत* जिसने सुविधापूर्ण घर, जो वास्तव में दुःख से भरा होता है, उसमें रहने का दृढ़ संकल्प किया है, वह गर्हित अवस्था में रहता है। केवल कृष्ण की कृपा ही उसे ऐसे कष्ट से बचा सकती है। कृष्ण की कृपा के बिना घृणित भव-पाश से निकल पाना सम्भव नहीं है। बेचारा जीव अपनी इच्छा से भौतिकतावादी स्थिति को त्याग नहीं पाता। जब कृष्ण की विशेष कृपा होती है, तभी वह उसे त्याग पाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु भलीभाँति जानते थे कि रघुनाथ दास पहले ही मुक्त हो चुका है, फिर भी उन्होंने जोर देकर कहा कि धनी पिता का पुत्र होने के कारण रघुनाथ दास का विलासपूर्ण जीवन, जिसमें सुन्दर पत्नी तथा अनेक नौकर हैं, मल की खाई के तुल्य है। इस तरह महाप्रभु ने विशेष रूप से इंगित किया कि भौतिक सुविधाओं तथा पारिवारिक जीवन से अत्यन्त सुखी सामान्य लोग मल के कीटों से किसी तरह भी श्रेष्ठ नहीं हैं।

रघुनाथ मने कहे,—'कृष्ण नाहि जानि ।
तव कृपा काड़िल आमा,—एइ आमि मानि' ॥ १९४॥

रघुनाथ मने कहे,—'कृष्ण नाहि जानि ।
तव कृपा काड़िल आमा,—एइ आमि मानि' ॥ १९४॥

रघुनाथ—रघुनाथ दास ने; **मने कहे**—अपने मन में उत्तर दिया; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **नाहि जानि**—मैं नहीं जानता; **तव**—आपकी; **कृपा**—कृपा ने; **काड़िल**—निकाला है; **आमा**—मुझे; **एइ**—यह; **आमि मानि**—मैं मानता हूँ।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने अपने मन में उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि कृष्ण कौन हैं। हे प्रभु, मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि आपकी कृपा ने मुझे पारिवारिक जीवन से बचा लिया है।"

प्रभु कहेन,—"तोमार पिता-ज्येठा दुइ जने ।
चक्रवर्ती-सम्बन्धे हाम 'आजा' करि' माने ॥ १९५ ॥

प्रभु कहेन,—"तोमार पिता-ज्येठा दुइ जने ।
चक्रवर्ती-सम्बन्धे हाम 'आजा' करि' माने ॥ १९५ ॥

प्रभु कहेन—भगवान् चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **तोमार**—तुम्हारे; **पिता-ज्येठा**—पिता और उनके बड़े भाई; **दुइ जने**—वे दोनों; **चक्रवर्ती-सम्बन्धे**—नीलाम्बर चक्रवर्ती से सम्बन्ध के कारण; **हाम**—मैं; **आजा करि'**—अपने नाना के समान; **माने**—मानता हूँ।

अनुवाद

महाप्रभु ने आगे कहा, "तुम्हारे पिता तथा ताऊ दोनों ही मेरे नाना (मातामह) नीलाम्बर चक्रवर्ती के भाई जैसे हैं। अतएव मैं उन्हें अपना नाना (आजा) मानता हूँ।

तात्पर्य

नीलाम्बर चक्रवर्ती श्री चैतन्य महाप्रभु के मातामह (नाना) थे और वे रघुनाथ दास के पिता तथा ताऊ से घनिष्ठतापूर्वक सम्बन्धित थे। नीलाम्बर चक्रवर्ती उन्हें अपना छोटा भाई कहकर पुकारते थे, क्योंकि वे दोनों ब्राह्मणों को अत्यधिक समर्पित और सम्मानित जन थे। इसी तरह वे लोग भी उन्हें दादा चक्रवर्ती कहकर पुकारते थे। किन्तु रघुनाथ दास भगभग श्री चैतन्य महाप्रभु की ही उम्र के थे। सामान्य रूप से नाती अपने नाना से परिहास कर सकता है। इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने नाना और रघुनाथ के पिता तथा ताऊ के बीच सम्बन्ध का लाभ उठाया और वे इस तरह परिहास कर रहे थे।

चक्रवर्तीर दुहे हय भ्रातृ-रूप दास ।
अतएव तारे आमि करि परिहास ॥ १९६ ॥

चक्रवर्तीर दुहे हय भ्रातृ-रूप दास ।
अतएव तारे आमि करि परिहास ॥ १९६ ॥

चक्रवर्तीर—नीलाम्बर चक्रवर्ती के; **दुहे**—दोनों; **हय**—हैं; **भ्रातृ-रूप दास**—छोटे भाई के रूप में सेवक; **अतएव**—इसलिए; **तारे**—उन्हें; **आमि**—मैं; **करि परिहास**—परिहासपूर्वक कुछ कहता हूँ।

अनुवाद

"चूँकि तुम्हारे पिता तथा ताऊ नीलाम्बर चक्रवर्ती के छोटे भाई हैं, अतएव मैं इस तरह से परिहास कर सकता हूँ।

तोमार बाप-ज्येठा—विषय-विष्ठा-गर्तेर कीड़ा ।
सुख करि' माने विषय-विषेर महा-पीड़ा ॥ १९७॥

तोमार बाप-ज्येठा—विषय-विष्ठा-गर्तेर कीड़ा ।
सुख करि' माने विषय-विषेर महा-पीड़ा ॥ १९७॥

तोमार—तुम्हारा; **बाप**—पिता; **ज्येठा**—उसका बड़ा भाई; **विषय**—भौतिक सुख के; **विष्ठा**—मल के; **गर्तेर**—गड्ढे के; **कीड़ा**—कीड़े; **सुख करि'**—सुख रूप में; **माने**—वे मानते हैं; **विषय**—भौतिक सुख के; **विषेर**—विष की; **महा-पीड़ा**—महान् पीड़ा को।

अनुवाद

"हे रघुनाथ दास, तुम्हारे पिता तथा ताऊ भौतिक भोग रूपी नाली के मल-कीटों के तुल्य हैं, क्योंकि जिसे वे सुख मानते हैं, वह भौतिक भोग के विष का महान् रोग है।

तात्पर्य

जब मनुष्य भौतिक भोग में आसक्त रहता है, तो उसे अनेक कष्ट भी घेरे रहते हैं, फिर भी वह अपनी अधम स्थिति को सुख की स्थिति मानता है। ऐसे व्यक्ति के लिए इन्द्रिय भोग इतना प्रबल होता है कि वह उसे त्याग नहीं पाता, ठीक उसी तरह जिस तरह मल का कीड़ा मल को त्याग नहीं पाता। आध्यात्मिक दृष्टि में जब मनुष्य भौतिक भोग में अत्यधिक लिप्त रहता है, तब वह मल के कीड़े के समान ही होता है। यद्यपि यह स्थिति मुक्तात्माओं की दृष्टि में अत्यन्त दयनीय होती है, किन्तु भौतिकतावादी भोक्ता इसमें अत्यधिक आसक्त रहता है।

यद्यपि ब्रह्मण्य करे ब्राह्मणेर सहाय ।
'शुद्ध-वैष्णव' नहे, हये 'वैष्णवेर प्राय' ॥ १९८॥

यद्यपि ब्रह्मण्य करे ब्राह्मणेर सहाय ।
'शुद्ध-वैष्णव' नहे, हये 'वैष्णवेर प्राय' ॥ १९८॥

यद्यपि—यद्यपि; **ब्रह्मण्य करे**—ब्राह्मणों को दान देते हैं; **ब्राह्मणेर सहाय**—ब्राह्मणों के महान् सहायक; **शुद्ध-वैष्णव**—शुद्ध वैष्णव; **नहे**—नहीं हैं; **हये**—वे; **वैष्णवेर प्राय**—प्रायः वैष्णव जैसे।

अनुवाद

"यद्यपि तुम्हारे पिता तथा ताऊ ब्राह्मणों को दान देते हैं और उनकी बहुत सहायता करते हैं, किन्तु तो भी वे शुद्ध वैष्णव नहीं हैं। हाँ, वे प्रायः वैष्णवों जैसे हैं।

तात्पर्य

जैसाकि श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत प्रवाह भाष्य* में कहा है कुछ लोग, जो सामान्यतया धनी होते हैं, वे वैष्णवों जैसे वस्त्र पहनते हैं और ब्राह्मणों को दान देते हैं। वे अर्चाविग्रह पूजा के प्रति भी अनुरक्त रहते हैं, किन्तु भौतिक भोग के प्रति आसक्ति के कारण वे शुद्ध वैष्णव नहीं हो सकते। *अन्याभिलाषिता शून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।* शुद्ध वैष्णव में भौतिक भोग की इच्छा नहीं रहती। शुद्ध वैष्णव की यह मूलभूत योग्यता है। सामान्यतया धनी लोग नियमित रूप से अर्चाविग्रह की पूजा करते हैं, ब्राह्मणों को दान देते हैं और सभी तरह से पुण्यशाली होते हैं, किन्तु वे शुद्ध वैष्णव नहीं हो सकते। अपनी वैष्णवता तथा दान के बाहरी दिखावे के बावजूद, उनकी आन्तरिक इच्छा भौतिक जीवन के उच्चतर स्तर के भोग की होती है। रघुनाथ दास के पिता गोवर्धन तथा ताऊ हिरण्यदास दोनों ब्राह्मणों को काफी दान देते थे। गौड़ीय जिले के सारे ब्राह्मण एक तरह से उन पर आश्रित थे। इस तरह उन्हें अत्यन्त पवित्र भद्र पुरुष माना जाता था। इस तरह वे सामान्य जनता के समक्ष अपने आपको वैष्णव के रूप में प्रस्तुत करते थे, जबकि शुद्ध आध्यात्मिक दृष्टि से वे सामान्य मनुष्य थे, शुद्ध वैष्णव नहीं। वास्तविक वैष्णव उन्हें लगभग वैष्णव जैसे मानते थे, शुद्ध वैष्णव नहीं। दूसरे शब्दों में, वे *कनिष्ठ अधिकारी* थे, क्योंकि वे उच्च वैष्णव सिद्धान्तों से अनजान थे। फिर भी वे *विषयी* नहीं कहे जा सकते थे।

तथापि विषयेर स्वभाव—करे महा-अन्ध ।
सेई कर्म कराय, याते हय भव-बन्ध ॥ १९९॥

तथापि विषयेर स्वभाव—करे महा-अन्ध ।
सेइ कर्म कराय, याते हय भव-बन्ध ॥ १९९ ॥

तथापि—फिर भी; **विषयेर स्वभाव**—भौतिक विषयों का स्वभाव; **करे महा-अन्ध**—पूर्ण रूप से अन्धा बना देता है; **सेइ कर्म कराय**—उसे उस प्रकार कर्म करने में विवश करता है; **याते**—जिसके द्वारा; **हय**—हो जाता है; **भव-बन्ध**—जन्म और मृत्यु का बन्धन।

अनुवाद

"जो लोग भौतिकतावादी जीवन के प्रति आसक्त होते हैं और आध्यात्मिक जीवन के प्रति अन्धे बने रहते हैं, वे इस तरह कर्म करते हैं कि अपने कर्मों की क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जन्म-मृत्यु के चक्र में बँध जाते हैं।"

तात्पर्य

भगवद्गीता (३.९) में स्पष्ट कहा गया है—*यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः*—यदि कोई शुद्ध भक्त की तरह कर्म नहीं करता, तो वह जो भी कर्म करेगा उससे कर्मबन्धन का फल उत्पन्न होगा। *श्रीमद्भागवत* (५.५.४) में कहा गया है :

नूनं प्रमत्तः कुरुते विकर्म
यदिन्द्रियप्रीतय आपृणोति।
न साधु मन्ये यत आत्मनोऽयम्
असन्नपि क्लेशद आस देहः ॥

"इन्द्रिय भोग के कार्यों में बुरी तरह लगा हुआ भौतिकतावादी व्यक्ति यह नहीं जान पाता कि वह अपने आपको जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसा रहा है और उसका यह क्षणिक शरीर क्लेशों से भरा है।" *विषयी* व्यक्ति सदैव जन्म-मृत्यु के चक्र में फँसा रहता है। ऐसा व्यक्ति यह नहीं जान सकता कि भक्ति कैसे की जाए; इसलिए वह कर्मी, ज्ञानी, योगी या अन्य रूप में अपनी इच्छानुसार कर्म करता है। किन्तु वह यह नहीं जानता कि कर्म, ज्ञान तथा योग के कार्यकलाप उसे जन्म-मृत्यु के चक्र में बाँधने वाले हैं।

হেন 'বিষয়' হৈতে কৃষ্ণ উদ্ধারিলা তোমা' ।
কহন না যায় কৃষ্ণ-কৃপার মহিমা'' ॥২০০॥

হেন 'বিষয়' হৈতে কৃষ্ণ উদ্ধারিলা তোমা' ।
কহন না য়ায় কৃষ্ণ-কৃপার মহিমা" ॥ ২০০॥

হেন বিষয়—भौतिक सुख की ऐसी पतित अवस्था; **হৈতে**—से; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण ने; **উদ্ধারিলা তোমা'**—तुम्हें निकाल दिया; **কহন না য়ায়**—वर्णन नहीं किया जा सकता; **কৃষ্ণ-কৃপার**—भगवान् कृष्ण की कृपा की; **মহিমা**—महिमा का।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण ने तुम्हें स्वेच्छा से ऐसे गर्हित भौतिकतावादी जीवन से उबार लिया है। इसलिए भगवान् कृष्ण की अहैतुकी कृपा को व्यक्त नहीं किया जा सकता।"

तात्पर्य

ब्रह्म-संहिता (५.५४) में कहा गया है *कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजाम्।* भगवान् कृष्ण इतने दयालु हैं कि वे अपने भक्तों के कर्मफल को रोक सकते हैं। इन्द्रगोप जैसे क्षुद्र कीट से लेकर स्वर्ग के राजा इन्द्र तक हर कोई सकाम कर्मों के फलों से बद्ध है।

यस्त्विन्द्रगोपमथवेन्द्रमहो स्वकर्म-
बन्धानुरूपफलभाजनमातनोति।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां
गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि॥

हर प्राणी चाहे वह एक कीड़ा हो या स्वर्ग का राजा, अपने कर्म तथा उसके फल के द्वारा बँधा हुआ है। किन्तु जब वह शुद्ध भक्त बन जाता है अर्थात् भौतिक इच्छाओं से तथा कर्म, ज्ञान और योग के बन्धन से मुक्त होता है, तब वह कृष्ण की अहैतुकी कृपा से कर्ममुक्त हो जाता है। भौतिकतावादी जीवन शैली से छुटकारा दिलाए जाने के लिए मनुष्य कृष्ण के प्रति यथेष्ठ कृतज्ञता व्यक्त नहीं कर सकता।

রঘুনাথের ক্ষীণতা-মালিন্য দেখিয়া ।
স্বরূপেরে কহেন প্রভু কৃপার্দ্র-চিত্ত হঞা ॥২০১॥

रघुनाथेर क्षीणता-मालिन्य देखिया ।
स्वरूपेरे कहेन प्रभु कृपार्द्र-चित्त हञा ॥ २०१ ॥

रघुनाथेर—रघुनाथ दास का; **क्षीणता**—दुबलापन; **मालिन्य**—शरीर की अस्वच्छता; **देखिया**—देखकर; **स्वरूपेरे कहेन**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से कहा; **प्रभु**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु ने; **कृपा**—कृपापूर्वक; **आर्द्र**—द्रवित; **चित्त**—हृदय; **हञा**—होकर।

अनुवाद

रघुनाथ दास को दुर्बल तथा मैला कुचैला देखकर, क्योंकि उन्होंने बारह दिनों तक यात्रा की थी और उपवास रखा था, श्री चैतन्य महाप्रभु का हृदय अहैतुकी कृपा से द्रवित हो उठा और उन्होंने स्वरूप दामोदर से कहा।

''एइ रघुनाथे आमि सँपिनु तोमारे ।
पुत्र-भृत्य-रूपे तुमि कर अङ्गीकारे ॥२०२॥
"एइ रघुनाथे आमि सँपिनु तोमारे ।
पुत्र-भृत्य-रूपे तुमि कर अङ्गीकारे ॥ २०२ ॥

एइ रघुनाथे—इस रघुनाथ दास को; **आमि**—मैं; **सँपिनु तोमारे**—तुम्हें सौंप रहा हूँ; **पुत्र**—पुत्र; **भृत्य**—सेवक; **रूपे**—जैसे; **तुमि**—तुम (स्वरूप दामोदर गोस्वामी); **कर अङ्गीकारे**—कृपया स्वीकार करो।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे प्रिय स्वरूप, मैं इस रघुनाध दास को तुम्हें सौंपता हूँ। तुम इसे कृपया अपने पुत्र अथवा दास के रूप में स्वीकार करो।"

तिन 'रघुनाथ'-नाम हय आमार गणे ।
'स्वरूपेर रघु'—आजि हैते इहार नामे'' ॥२०३॥
तिन 'रघुनाथ'-नाम हय आमार गणे ।
'स्वरूपेर रघु'—आजि हैते इहार नामे" ॥ २०३ ॥

तिन रघुनाथ—तीन रघुनाथ; **नाम**—नामक; **हय**—हैं; **आमार गणे**—मेरे संगियों में; **स्वरूपेर रघु**—स्वरूप दामोदर का रघुनाथ; **आजि हैते**—आज से; **इहार**—इसका; **नामे**—नाम।

अनुवाद

"अब मेरे संगियों में तीन रघुनाथ हैं। आज से यह रघुनाथ, *स्वरूपेर* रघु (स्वरूप दामोदर का रघु) कहलाएगा।"

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु के संगियों में तीन रघु थे—वैद्य रघुनाथ (देखें आदिलीला ११.२२), भट्ट रघुनाथ तथा दास रघुनाथ। दास रघुनाथ *स्वरूपेर रघु* (स्वरूप के रघुनाथ) नाम से विख्यात हुए।

এত কহি' রঘুনাথের হস্ত ধরিলা ।
স্বরূপের হস্তে তাঁরে সমর্পণ কৈলা ॥২০৪॥

एत कहि' रघुनाथेर हस्त धरिला ।
स्वरूपेर हस्ते ताँरे समर्पण कैला ॥ २०४॥

एत कहि'—यह कहकर; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास का; **हस्त धरिला**—हाथ पकड़ लिया; **स्वरूपेर हस्ते**—स्वरूप दामोदर के हाथ में; **ताँरे**—उन्हें; **समर्पण कैला**—अर्पित कर दिया।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास का हाथ पकड़ लिया और उसे स्वरूप दामोदर गोस्वामी के हाथों में सौंप दिया।

স্বরূপ কহে,—'মহাপ্রভুর যে আজ্ঞা হৈল' ।
এত কহি' রঘুনাথে পুনঃ আলিঙ্গিল ॥২০৫॥

स्वरूप कहे,—'महाप्रभुर ये आज्ञा हैल' ।
एत कहि' रघुनाथे पुनः आलिङ्गिल ॥ २०५॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **ये**—जो भी; **आज्ञा**—आज्ञा; **हैल**—है; **एत कहि'**—यह कहकर; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास को; **पुनः**—दोबारा; **आलिङ्गिल**—उन्होंने आलिंगन किया।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने यह कहते हुए रघुनाथ दास को स्वीकार

किया कि, "हे प्रभु, आपकी जो भी आज्ञा हो वह स्वीकार्य है।" तब उन्होंने रघुनाथ दास का फिर से आलिंगन किया।

চৈতন্যের ভক্ত-বাৎসল্য কহিতে না পারি ।
গোবিন্দেরে কহে রঘুনাথে দয়া করি' ॥২০৬॥

चैतन्येर भक्त-वात्सल्य कहिते ना पारि ।
गोविन्देरे कहे रघुनाथे दया करि' ॥ २०६ ॥

चैतन्येर—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का; **भक्त-वात्सल्य**—भक्तों के प्रति स्नेह; **कहिते ना पारि**—मैं योग्य रूप से वर्णन नहीं कर सकता; **गोविन्देरे**—गोविन्द से; **कहे**—उन्होंने कहा; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास पर; **दया करि'**—अत्यन्त कृपालु होकर।

अनुवाद

मैं श्री चैतन्य महाप्रभु के अपने भक्तों के प्रति वात्सल्य को ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। रघुनाथ दास के ऊपर दयालु होकर महाप्रभु ने गोविन्द से इस प्रकार कहा।

"পথে ইঁহ করিয়াছে বহুত লঙ্ঘন ।
কত-দিন কর ইহার ভাল সন্তর্পণ" ॥২০৭॥

"पथे इँह करियाछे बहुत लङ्घन ।
कत-दिन कर इहार भाल सन्तर्पण" ॥ २०७ ॥

पथे—मार्ग में; **इँह**—रघुनाथ दास ने; **करियाछे**—किया है; **बहुत**—बहुत; **लङ्घन**—उपवास तथा कठिन प्रयत्न; **कत-दिन**—कुछ दिन तक; **कर**—करो; **इहार**—इसका; **भाल**—अच्छा; **सन्तर्पण**—ध्यान।

अनुवाद

"रघुनाथ दास ने रास्ते में कई दिनों तक उपवास किया है और अनेक कष्ट उठाये हैं। इसलिए कुछ दिनों तक इसकी ठीक से देखभाल करो, जिससे वह जी भरकर खा सके।"

রঘুনাথে কহে—"যাঞা, কর সিন্ধু-স্নান ।
জগন্নাথ দেখি' আসি' করহ ভোজন" ॥২০৮॥

रघुनाथे कहे—"याञा, कर सिन्धु-स्नान ।
जगन्नाथ देखि' आसि' करह भोजन" ॥ २०८ ॥

रघुनाथे कहे—उन्होंने रघुनाथ दास से कहा; **याञा**—जाकर; **कर सिन्धु-स्नान**—समुद्र स्नान करो; **जगन्नाथ देखि'**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करके; **आसि'**—आने के बाद; **करह भोजन**—अपना भोजन करो।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास से कहा, "जाकर समुद्र में स्नान करो। उसके बाद मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करो और फिर यहाँ आकर भोजन करो।"

এত বলি' প্রভু মধ্যাহ্ন করিতে উঠিলা ।
রঘুনাথ-দাস সব ভক্তেরে মিলিলা ॥ ২০৯ ॥
এত বলি' প্রভু মধ্যাহ্ন করিতে উঠিলা ।
রঘুনাথ-দাস সব ভক্তেরে মিলিলা ॥ ২০৯ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मध्याह्न करिते**—अपने दोपहर के नित्यकर्म करने के लिए; **उठिला**—उठ गये; **रघुनाथ-दास**—रघुनाथ दास; **सब**—सभी; **भक्तेरे**—भक्तों से; **मिलिला**—मिले।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु उठे और अपना दोपहर का कृत्य करने चले गये। रघुनाथ वहाँ पर उपस्थित सारे भक्तों से मिले।

রঘুনাথে প্রভুর কৃপা দেখি, ভক্ত-গণ ।
বিস্মিত হঞা করে তাঁর ভাগ্য-প্রশংসন ॥ ২১০ ॥
রঘুনাথে প্রভুর কৃপা দেখি, ভক্ত-গণ ।
বিস্মিত হঞা করে তাঁর ভাগ্য-প্রশংসন ॥ ২১০ ॥

रघुनाथे—रघुनाथ दास के प्रति; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **देखि**—देखकर; **भक्त-गण**—सभी भक्त; **विस्मित**—आश्चर्यचकित; **हञा**—होकर; **करे**—करने लगे; **ताँर**—उनके; **भाग्य**—सौभाग्य की; **प्रशंसन**—प्रशंसा।

अनुवाद

रघुनाथ दास पर श्री चैतन्य महाप्रभु की अहैतुकी कृपा देखकर सारे भक्त आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने उनके सौभाग्य की प्रशंसा की।

रघुनाथ समुद्रे याञा स्नान करिला ।
जगन्नाथ देखि' पुनः गोविन्द-पाश आइला ॥२११॥

रघुनाथ समुद्रे याञा स्नान करिला ।
जगन्नाथ देखि' पुनः गोविन्द-पाश आइला ॥ २११ ॥

रघुनाथ—रघुनाथ दास ने; **समुद्रे**—समुद्र में; **याञा**—जाकर; **स्नान करिला**—स्नान किया; **जगन्नाथ देखि'**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करके; **पुनः**—फिर; **गोविन्द-पाश आइला**—गोविन्द के पास आये।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने समुद्र में स्नान किया और जगन्नाथजी के दर्शन किये। तब वे श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी सेवक गोविन्द के पास लौट आये।

प्रभुर अवशिष्ट पात्र गोविन्द ताँरे दिला ।
आनन्दित हञा रघुनाथ प्रसाद पाइला ॥२१२॥

प्रभुर अवशिष्ट पात्र गोविन्द ताँरे दिला ।
आनन्दित हञा रघुनाथ प्रसाद पाइला ॥ २१२ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **अवशिष्ट पात्र**—शेष प्रसाद का एक पात्र; **गोविन्द**—महाप्रभु के सेवक, गोविन्द ने; **ताँरे**—उन्हें; **दिला**—दिया; **आनन्दित हञा**—अत्यन्त प्रसन्न होकर; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **प्रसाद पाइला**—प्रसाद ग्रहण किया।

अनुवाद

गोविन्द ने रघुनाथ को श्री चैतन्य महाप्रभु की पत्तल में बचा शेष खाने को दिया, जिन्होंने उस प्रसाद को परम सुखपूर्वक ग्रहण किया।

एइ-मत रहे तेँह स्वरूप-चरणे ।
गोविन्द प्रसाद ताँरे दिल पञ्च दिने ॥२१३॥

एइ-मत रहे तेंह स्वरूप-चरणे ।
गोविन्द प्रसाद ताँरे दिल पञ्च दिने ॥ २१३ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **रहे**—रहे; **तेंह**—वे; **स्वरूप-चरणे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी की शरण में; **गोविन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सेवक, गोविन्द; **प्रसाद**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भोजन के शेष; **ताँरे**—उन्हें; **दिल**—दिये; **पञ्च दिने**—पाँच दिन तक।

अनुवाद

रघुनाथ दास स्वरूप दामोदर गोस्वामी की देखभाल में रहे और गोविन्द पाँच दिनों तक उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु का शेष देता रहा।

আর দিন হৈতে 'পুষ্প-অঞ্জলি' দেখিয়া ।
সিংহ-দ্বারে খাড়া রহে ভিক্ষার লাগিয়া ॥ ২১৪ ॥

आर दिन हैते 'पुष्प-अञ्जलि' देखिया ।
सिंह-द्वारे खाड़ा रहे भिक्षार लागिया ॥ २१४ ॥

आर दिन—अगले दिन; **हैते**—से; **पुष्प-अञ्जलि**—भगवान् को फूल अर्पित करने का उत्सव; **देखिया**—देखने के बाद; **सिंह-द्वारे**—सिंह द्वार पर; **खाड़ा रहे**—खड़े हो गये; **भिक्षार लागिया**—कुछ भिक्षा माँगने के लिए।

अनुवाद

छठे दिन से रघुनाथ दास सिंह द्वार पर खड़े होकर पुष्प-अंजलि उत्सव के बाद, जिसमें भगवान् को फूल अर्पित किये जाते हैं, भिक्षा मांगना शुरू किया।

জগন্নাথের সেবক যত—'বিষয়ীর গণ' ।
সেবা সারি' রাত্র্যে করে গৃহেতে গমন ॥ ২১৫ ॥

जगन्नाथेर सेवक यत—'विषयीर गण' ।
सेवा सारि' रात्र्ये करे गृहेते गमन ॥ २१५ ॥

जगन्नाथेर—भगवान् जगन्नाथ के; **सेवक**—सेवक; **यत**—सभी; **विषयीर गण**—सामान्यतया विषयी नाम से प्रसिद्ध; **सेवा सारि'**—अपनी सेवा समाप्त कर; **रात्र्ये**—रात को; **करे**—करते; **गृहेते गमन**—घर वापसी।

अनुवाद

जगन्नाथ जी के अनेक सेवक, जो विषयी कहलाते हैं, अपना नियत कार्य पूरा होने के बाद रात में अपने घर लौटते हैं।

सिंह-द्वारे अन्नार्थी वैष्णवे देखिया ।
पसारिर ठाञि अन्न देन कृपा त' करिया ॥२१६॥

सिंह-द्वारे अन्नार्थी वैष्णवे देखिया ।
पसारिर ठाञि अन्न देन कृपा त' करिया ॥ २१६ ॥

सिंह-द्वारे—सिंह द्वार पर; **अन्न-अर्थी**—अन्न की आवश्यकता में; **वैष्णवे**—वैष्णवों को; **देखिया**—देखकर; **पसारिर ठाञि**—दुकानदारों से; **अन्न देन**—कुछ अन्न दिलवाते; **कृपा त' करिया**—दयावश।

अनुवाद

यदि वे किसी वैष्णव को सिंह द्वार पर खड़े होकर भिक्षा माँगते देखते हैं, तो कृपा करके उसे कुछ खाने के लिए दुकानदार से दिलाने की व्यवस्था करा देते हैं।

एइ-मत सर्व-काल आछे व्यवहार ।
निष्किञ्चन भक्त खाड़ा हय सिंह-द्वार ॥२१७॥

एइ-मत सर्व-काल आछे व्यवहार ।
निष्किञ्चन भक्त खाड़ा हय सिंह-द्वार ॥ २१७ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सर्व-काल**—सब समय के लिए; **आछे**—है; **व्यवहार**—व्यवहार; **निष्किञ्चन भक्त**—एक भक्त जिसका कोई अन्य आश्रय नहीं है; **खाड़ा हय**—खड़ा होता है; **सिंह-द्वार**—सिंह द्वार नामक द्वार पर।

अनुवाद

इस तरह यह सदा से रीति है कि जिस भक्त के पास कोई दूसरा सहारा नहीं होता, वह सेवकों से भिक्षा पाने के लिए सिंहद्वार पर खड़ा रहता है।

सर्व-दिन करेन वैष्णव नाम-सङ्कीर्तन ।
स्वच्छन्दे करेन जगन्नाथ दरशन ॥२१८॥

सर्व-दिन करेन वैष्णव नाम-सङ्कीर्तन ।
स्वच्छन्दे करेन जगन्नाथ दरशन ॥ २१८ ॥

सर्व-दिन—सम्पूर्ण दिन; **करेन**—करता है; **वैष्णव**—एक वैष्णव; **नाम-सङ्कीर्तन**—भगवान् के पवित्र नाम का संकीर्तन; **स्वच्छन्दे**—पूर्ण स्वतन्त्रतापूर्वक; **करेन**—करता है; **जगन्नाथ दरशन**—जगन्नाथ भगवान् के दर्शन।

अनुवाद

इस तरह एक पूर्णरूपेण आश्रित वैष्णव सारा दिन भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करता है और पूर्ण स्वतन्त्र होकर जगन्नाथजी के दर्शन करता है।

केह छत्रे मागि' खाय, येवा किछु पाय ।
केह रात्रे भिक्षा लागि' सिंह-द्वारे रय ॥२१९॥
केह छत्रे मागि' खाय, येबा किछु पाय ।
केह रात्रे भिक्षा लागि' सिंह-द्वारे रय ॥ २१९ ॥

केह—कुछ; **छत्रे**—भिक्षास्थली पर; **मागि'**—भिक्षा माँगकर; **खाय**—खाते; **येब**—जो कुछ भी; **किछु**—थोड़ा; **पाय**—वे प्राप्त करते; **केह**—कुछ; **रात्रे**—रात को; **भिक्षा लागि'**—भिक्षा माँगने के लिए; **सिंह-द्वारे रय**—सिंहद्वार नामक द्वार पर खड़े रहते।

अनुवाद

यह प्रथा है कि कुछ वैष्णव दानशालाओं (छत्रों, लंगरों) से भिक्षा माँगकर जो भी मिलता है खाते हैं, जबकि अन्य लोग सिंहद्वार पर रात्रि के समय खड़े होकर सेवकों से भिक्षा माँगते हैं।

महाप्रभुर भक्त-गणेर वैराग्य प्रधान ।
याहा देखि' प्रीत हन गौर-भगवान् ॥२२०॥
महाप्रभुर भक्त-गणेर वैराग्य प्रधान ।
याहा देखि' प्रीत हन गौर-भगवान् ॥ २२० ॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गणेर**—भक्तों की; **वैराग्य**—विरक्ति; **प्रधान**—मुख्य सिद्धान्त; **याहा देखि'**—जिसे देखकर; **प्रीत हन**—प्रसन्न होते हैं; **गौर-भगवान्**—भगवान् गौरहरि, श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

वैराग्य ही मूलभूत सिद्धान्त है, जो श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों का जीवनाधार है। यह वैराग्य देखकर पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य अत्यधिक तुष्ट होते हैं।

तात्पर्य

चाहे सामान्य भौतिकतावादी व्यक्ति हो या शुद्ध भक्त, यदि वह ध्यानपूर्वक अध्ययन करे, तो श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों के व्यवहार को समझ सकता है। इस तरह वह देखेगा कि श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्त किसी प्रकार के भौतिक भोग में रंचमात्र भी आसक्त नहीं होते। वे इन्द्रिय भोग का पूरी तरह तिरस्कार करके भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में लगे रहते हैं और बिना किसी भौतिक इच्छा के कृष्ण की सेवा में अपना तन-मन अर्पित कर देते हैं। उनकी भक्ति भौतिक इच्छाओं से रहित होती है, इसलिए भौतिक परिस्थितियाँ इसमें बाधक नहीं बनती। यद्यपि सामान्य लोगों को भक्तों की इस प्रवृत्ति को समझने में कठिनाई होती है, किन्तु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

প্রভুরে গোবিন্দ কহে,—"রঘুনাথ 'প্রসাদ' না লয়।
রাত্র্যে সিংহ-দ্বারে খাড়া হঞা মাগি' খায়" ॥২২১॥

**प्रभुरे गोविन्द कहे,—"रघुनाथ 'प्रसाद' ना लय।
रात्र्ये सिंह-द्वारे खाड़ा हञा मागि' खाय" ॥ २२१ ॥**

प्रभुरे—श्री चैतन्य महाप्रभु से; **गोविन्द कहे**—गोविन्द ने कहा; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **प्रसाद ना लय**—प्रसाद नहीं लेता; **रात्र्ये**—रात को; **सिंह-द्वारे**—सिंह द्वार पर; **खाड़ा हञा**—खड़ा होकर; **मागि'**—भिक्षा माँगकर; **खाय**—खाता है।

अनुवाद

गोविन्द ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा, "अब रघुनाथ यहाँ से प्रसाद नहीं लेता। अब वह सिंहद्वार पर खड़ा रहता है, जहाँ खाने के लिए वह भिक्षा माँग लेता है।"

শুনি' তুষ্ট হঞা প্রভু কহিতে লাগিল ।
"ভাল কৈল, বৈরাগীর ধর্ম আচরিল ॥২২২॥

शुनि' तुष्ट हञा प्रभु कहिते लागिल ।
"भाल कैल, वैरागीर धर्म आचरिल ॥ २२२॥

शुनि'—सुनकर; **तुष्ट हञा**—अत्यन्त सन्तुष्ट होकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहिते लागिल**—कहने लगे; **भाल कैल**—उसने अच्छा किया; **वैरागीर**—संन्यास आश्रम में स्थित व्यक्ति के; **धर्म**—कर्तव्यों का; **आचरिल**—आचरण किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह सुना, तो वे अत्यधिक तुष्ट हुए। उन्होंने कहा, "रघुनाथ दास ने बहुत अच्छा किया है। उसने वैरागी के लिए उपयुक्त कर्म किया है।

বৈরাগী করিবে সদা নাম-সঙ্কীর্তন ।
মাগিয়া খাঞা করে জীবন রক্ষণ ॥২২৩॥

वैरागी करिबे सदा नाम-सङ्कीर्तन ।
मागिया खाञा करे जीवन रक्षण ॥ २२३॥

वैरागी—संन्यास अवस्था में स्थित व्यक्ति को; **करिबे**—करना चाहिए; **सदा**—सदैव; **नाम-सङ्कीर्तन**—भगवान् के पवित्र नाम का संकीर्तन; **मागिया**—भिक्षा माँगकर; **खाञा**—खाकर; **करे जीवन रक्षण**—वह अपनी प्राण रक्षा करता है।

अनुवाद

"वैरागी को सदैव भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करना चाहिए। उसे भिक्षा माँगकर खाना चाहिए और इस तरह अपना जीवन-निर्वाह करना चाहिए।

तात्पर्य

हरि भक्ति विलास के बीसवें विलास के अन्त (३६६, ३७९, ३८२) में कहा गया है :

कृत्यान्येतानि तु प्रायो गृहिणां धनिनां सताम्।
लिखितानि न तु त्यक्तपरिग्रहमहात्मनाम्॥

प्रभाते चार्धरात्रे च मध्याह्ने दिवस-क्षये।
कीर्तयन्ति हरिं ये वै ते तरन्ति भवार्णवम्॥
एवमेकान्तिनां प्रायः कीर्तनं स्मरणं प्रभोः।
कुर्वतां परमप्रीत्या कृत्यमन्यन्न रोचते॥

धनवान गृहस्थ वैष्णव उस वैरागी के समान नहीं रह सकता, जो शुद्ध नाम की पूर्ण शरण ग्रहण करता है। ऐसे गृहस्थ को प्रातः, दोपहर तथा संध्या समय कृष्ण नाम का कीर्तन करना चाहिए। तभी वह अविद्या को पार कर सकेगा। किन्तु संन्यास आश्रम में स्थित शुद्ध भक्तों को, जो कि कृष्ण के चरणकमलों के पूर्ण शरणागत हैं, कृष्ण के चरणकमलों का सदैव चिन्तन करते हुए अतीव श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक पवित्र भगवन्नाम का कीर्तन करना चाहिए। उनके पास भगवान् के पवित्र नाम कीर्तन के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं होना चाहिए। *भक्ति सन्दर्भ* (२८३) में श्रील जीव गोस्वामी कहते हैं :

यद्यपि श्रीभागवतमते पञ्चरात्रादिवदर्चनमार्गस्यावश्यकत्वं नास्ति, तद् विनापि शरणापत्त्यादीनाम् एकतरेणापि पुरुषार्थसिद्धेरभिहितत्वात्।

"*श्रीमद्भागवत* का मत है कि अर्चाविग्रह की पूजा की प्रक्रिया वास्तव में आवश्यक नहीं है, जिस तरह पँचरात्र तथा अन्य शास्त्रों के विशेष सिद्धान्तों का पालन अनिवार्य नहीं है। *भागवत* का आदेश है कि अर्चाविग्रह की पूजा किये बिना भी मनुष्य अन्य किसी आध्यात्मिक विधि से मानव जीवन की पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है, जैसे कि भगवान् से संरक्षण पाने हेतु उनके चरणों में पूर्ण आत्म-समर्पण करना।"

বৈরাগী হঞা যেবা করে পরাপেক্ষা ।
কার্য-সিদ্ধি নহে, কৃষ্ণ করেন উপেক্ষা ॥২২৪॥
वैरागी हञा येबा करे परापेक्षा ।
कार्य-सिद्धि नहे, कृष्ण करेन उपेक्षा ॥ २२४॥

वैरागी हञा—त्यागी होकर; **येबा**—जो कोई भी; **करे**—करता है; **पर-अपेक्षा**—दूसरों का आश्रय; **कार्य-सिद्धि नहे**—वह सफल नहीं होता; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करेन उपेक्षा**—उपेक्षा करते हैं।

अनुवाद

"वैरागी (संन्यासी) को अन्यों पर आश्रित नहीं रहना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है, तो वह असफल होगा और कृष्ण द्वारा उपेक्षित होगा।

वैरागी हञा करे जिह्वार लालस ।
परमार्थ याय, आर हय रसेर वश ॥२२५॥

वैरागी हञा करे जिह्वार लालस ।
परमार्थ याय, आर हय रसेर वश ॥ २२५ ॥

वैरागी हञा—त्यागी होकर; **करे**—करता है; **जिह्वार**—जीभ का; **लालस**—लालच; **परम-अर्थ**—जीवन का लक्ष्य; **याय**—चला जाता है; **आर**—तथा; **हय**—हो जाता है; **रसेर वश**—स्वाद का गुलाम।

अनुवाद

"यदि वैरागी अपनी जीभ के लिए विभिन्न प्रकार का भोजन चखने के लिए उत्सुक रहता है, तो उसका आध्यात्मिक जीवन समाप्त हो जायेगा और वह अपनी जीभ के स्वाद का गुलाम बन जायेगा।

वैरागीर कृत्य——सदा नाम-सङ्कीर्तन ।
शाक-पत्र-फल-मूले उदर-भरण ॥२२६॥

वैरागीर कृत्य——सदा नाम-सङ्कीर्तन ।
शाक-पत्र-फल-मूले उदर-भरण ॥ २२६ ॥

वैरागीर—त्यागी का; **कृत्य**—कर्तव्य; **सदा**—सदैव; **नाम-सङ्कीर्तन**—भगवान् के पवित्र नाम का संकीर्तन; **शाक**—सब्जियाँ; **पत्र**—पत्ते; **फल**—फल; **मूले**—मूल द्वारा; **उदर-भरण**—पेट भरना।

अनुवाद

"वैरागी का कर्तव्य है कि वह सदैव हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करे। उसे शाक, पत्ती, फल तथा कन्द जो भी मिल जाये, उसी से वह अपने उदर की तृप्ति करे।

জিহ্বার লালসে যেই ইতি-উতি ধায় ।
শিশ্নোদর-পরায়ণ কৃষ্ণ নাহি পায়'' ॥২২৭॥

जिह्वार लालसे येइ इति-उति धाय ।
शिश्नोदर-परायण कृष्ण नाहि पाय" ॥ २२७॥

जिह्वार—जीभ के; **लालसे**—लालच के कारण; **येइ**—जो कोई भी; **इति-उति**—यहाँ-वहाँ; **धाय**—जाता है; **शिश्न**—जननेन्द्रियों के; **उदर**—पेट के; **परायण**—फेर में; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **नाहि पाय**—प्राप्त नहीं करता।

अनुवाद

"जो अपनी जीभ का दास है और जो इस प्रकार इधर-उधर घूमता रहता है एवं अपने जननांग तथा पेट के प्रति समर्पित होता है, वह कृष्ण को नहीं पा सकता।"

আর দিন রঘুনাথ স্বরূপ-চরণে ।
আপনার কৃত্য লাগি' কৈলা নিবেদনে ॥২২৮॥

आर दिन रघुनाथ स्वरूप-चरणे ।
आपनार कृत्य लागि' कैला निवेदने ॥ २२८॥

आर दिन—अगले दिन; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **स्वरूप-चरणे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी के चरणकमलों में; **आपनार**—अपने; **कृत्य**—कर्तव्य; **लागि'**—के लिए; **कैला निवेदने**—निवेदन किया।

अनुवाद

अगले दिन रघुनाथ दास ने अपने कर्तव्य के विषय में स्वरूप दामोदर के चरणकमलों में निवेदन किया।

''কি লাগি' ছাড়াইলা ঘর, না জানি উদ্দেশ ।
কি মোর কর্তব্য, প্রভু কর উপদেশ'' ॥২২৯॥

"कि लागि' छाड़ाइला घर, ना जानि उद्देश ।
कि मोर कर्तव्य, प्रभु कर उपदेश" ॥ २२९॥

कि लागि'—किस कारण से; **छाड़ाइला घर**—मैंने अपना घर-परिवार त्यागा है; **ना**

जानि—मैं नहीं जानता; **उद्देश**—उद्देश्य; **कि**—क्या; **मोर कर्तव्य**—मेरा कर्तव्य; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **कर उपदेश**—कृपया मुझे उपदेश दीजिए।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "मैं नहीं जानता कि मैंने गृहस्थ जीवन क्यों छोड़ा है? मेरा कर्तव्य क्या है? कृपया मुझे उपदेश दें।"

প্রভুর আগে কথা-মাত্র না কহে রঘুনাথ ।
স্বরূপ-গোবিন্দ-দ্বারা কহায় নিজ-বাৎ ॥২৩০॥
प्रभुर आगे कथा-मात्र ना कहे रघुनाथ ।
स्वरूप-गोविन्द-द्वारा कहाय निज-बात् ॥ २३० ॥

प्रभुर आगे—श्री चैतन्य महाप्रभु के समक्ष; **कथा-मात्र**—कोई बात; **ना कहे**—नहीं कहते; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **स्वरूप-गोविन्द-द्वारा**—गोविन्द और स्वरूप दामोदर के माध्यम से; **कहाय**—कहलवाते; **निज-बात्**—अपने मनोभाव।

अनुवाद

रघुनाथ दास कभी भी महाप्रभु के समक्ष एक शब्द भी नहीं कहते। अपितु, वे स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा गोविन्द के माध्यम से महाप्रभु को अपनी इच्छाएँ सूचित करते।

প্রভুর আগে স্বরূপ নিবেদিলা আর দিনে ।
রঘুনাথ নিবেদয় প্রভুর চরণে ॥২৩১॥
प्रभुर आगे स्वरूप निवेदिला आर दिने ।
रघुनाथ निवेदय प्रभुर चरणे ॥ २३१ ॥

प्रभुर आगे—श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने; **निवेदिला**—विनति की; **आर दिने**—अगले दिन; **रघुनाथ निवेदय**—रघुनाथ दास की विनती है; **प्रभुर चरणे**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों में।

अनुवाद

अगले दिन स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु से निवेदन किया, "रघुनाथ दास को आपके चरणों में यह कहना है कि :

"कि मोर कर्तव्य, मुञि ना जानि उद्देश ।
आपनि श्री-मुखे मोरे कर उपदेश" ॥२७२॥

"कि मोर कर्तव्य, मुञि ना जानि उद्देश ।
आपनि श्री-मुखे मोरे कर उपदेश" ॥ २३२ ॥

कि—क्या; **मोर कर्तव्य**—मेरा कर्तव्य; **मुञि**—मैं; **ना जानि**—नहीं जानता; **उद्देश**—अपने जीवन का लक्ष्य; **आपनि**—अपने; **श्री-मुखे**—दिव्य मुख से; **मोरे**—मुझे; **कर उपदेश**—उपदेश दीजिए।

अनुवाद

"'मैं अपना कर्तव्य अथवा जीवन-लक्ष्य नहीं जानता। इसलिए आप कृपया अपने दिव्य मुख से मुझे उपदेश दें।"

हासि' महाप्रभु रघुनाथेरे कहिल ।
"तोमार उपदेष्टा करि' स्वरूपेरे दिल ॥२७३॥

हासि' महाप्रभु रघुनाथेरे कहिल ।
"तोमार उपदेष्टा करि' स्वरूपेरे दिल ॥ २३३ ॥

हासि'—हँसकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **रघुनाथेरे**—रघुनाथ दास से; **कहिल**—कहा; **तोमार**—तुम्हारा; **उपदेष्टा**—उपदेशकर्ता; **करि'**—रूप में; **स्वरूपेरे दिल**—मैंने स्वरूप दामोदर गोस्वामी को बनाया है।

अनुवाद

हँसते हुए महाप्रभु ने रघुनाथ दास से कहा, "मैंने पहले ही स्वरूप दामोदर गोस्वामी को तुम्हारे उपदेशक के रूप में नियुक्त कर दिया है।

'साध्य'-'साधन'-तत्त्व शिख ईँहार स्थाने ।
आमि तत नाहि जानि, ईँहो यत जाने ॥२७४॥

'साध्य'-'साधन'-तत्त्व शिख इँहार स्थाने ।
आमि तत नाहि जानि, इँहो यत जाने ॥ २३४ ॥

साध्य—कर्तव्य; **साधन**—उसे किस प्रकार करें; **तत्त्व**—सत्य; **शिख**—सीखो; **इँहार स्थाने**—इनसे; **आमि**—मैं; **तत**—इतना अधिक; **नाहि जानि**—नहीं जानता; **इँहो**—यह; **यत**—जितना; **जाने**—जानते हैं।

अनुवाद

"तुम उनसे अपने कर्तव्य तथा उसे सम्पन्न करने की विधि सीख सकते हो। मैं उनके जितना नहीं जानता।

तथापि आमार आज्ञाय श्रद्धा यदि हय ।
आमार एই বাক্যে তবে করিহ নিশ্চয় ॥২৩৫॥

तथापि आमार आज्ञाय श्रद्धा यदि हय ।
आमार एइ वाक्ये तबे करिह निश्चय ॥ २३५ ॥

तथापि—फिर भी; **आमार आज्ञाय**—मेरे आदेश में; **श्रद्धा**—श्रद्धा; **यदि**—यदि; **हय**—है; **आमार**—मेरे; **एइ**—इन; **वाक्ये**—वचनों द्वारा; **तबे**—तब; **करिह निश्चय**—तुम निश्चय कर सकते हो।

अनुवाद

"फिर भी यदि तुम श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक मुझसे उपदेश लेना चाहते हो, तो तुम निम्नलिखित शब्दों से अपने कर्तव्य निश्चित कर सकते हो।

গ্রাম্য-কথা না শুনিবে, গ্রাম্য-বার্তা না কহিবে ।
ভাল না খাইবে আর ভাল না পরিবে ॥২৩৬॥

ग्राम्य-कथा ना शुनिबे, ग्राम्य-वार्ता ना कहिबे ।
भाल ना खाइबे आर भाल ना परिबे ॥ २३६ ॥

ग्राम्य-कथा—सामान्य लोगों की सांसारिक बातें; **ना शुनिबे**—कभी मत सुनो; **ग्राम्य-वार्ता**—सांसारिक बातें; **ना कहिबे**—मत कहो; **भाल**—अच्छा; **ना खाइबे**—मत खाओ; **आर**—और; **भाल**—आकर्षक; **ना परिबे**—वस्त्र मत पहनो।

अनुवाद

"न तो सामान्य लोगों की तरह बोलो और न वे जो कहें उसे सुनो। तुम न तो स्वादिष्ट भोजन करो, न ही सुन्दर वस्त्र पहनो।

অমানী মানদ হঞা কৃষ্ণ-নাম সদা ল'বে ।
ব্রজে রাধা-কৃষ্ণ-সেবা মানসে করিবে ॥২৩৭॥

अमानी मानद हञा कृष्ण-नाम सदा ल'बे ।
व्रजे राधा-कृष्ण-सेवा मानसे करिबे ॥ २३७॥

अमानी—सम्मान प्राप्ति की अभिलाषा न करके; **मान-द**—सभी को सम्मान देना; **हञा**—ऐसा बनकर; **कृष्ण-नाम**—भगवान् का पवित्र नाम; **सदा**—सदैव; **ल'बे**—तुम्हें उच्चारण करना चाहिए; **व्रजे**—वृन्दावन में; **राधा-कृष्ण-सेवा**—राधा और कृष्ण की सेवा; **मानसे**—मन में; **करिबे**—तुम्हें करनी चाहिए।

अनुवाद

कभी सम्मान की आशा मत करो, किन्तु अन्यों को सम्मान दो। सदैव भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम का जप करो और अपने मन में वृन्दावन-वासी राधा तथा कृष्ण की सेवा करो।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में कहते हैं कि जब स्त्री-पुरुष विवाहित हो जाते हैं, तो बच्चे उत्पन्न होते हैं और इस तरह वे पारिवारिक जीवन में बँध जाते हैं। ऐसे पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित बातें *ग्राम्य कथा* है। विरक्त व्यक्ति न तो ऐसी बातें सुनता है, न कहता है। उसे स्वादिष्ट भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि विरक्त व्यक्ति के लिए ऐसा भोजन अनुपयुक्त होता है। उसे अन्यों का सम्मान करना चाहिए, किन्तु अपने लिए सम्मान की आशा नहीं रखनी चाहिए। इस तरह उसे भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन करना चाहिए तथा उसे यही सोचना चाहिए कि वृन्दावन में राधा तथा कृष्ण की सेवा किस तरह की जाए।

এই ত' সঙ্ক্ষেপে আমি কৈলুঁ উপদেশ ।
স্বরূপের ঠাঞি ইহার পাইবে বিশেষ ॥২৩৮॥
एइ त' सङ्क्षेपे आमि कैलुँ उपदेश ।
स्वरूपेर ठाञि इहार पाइबे विशेष ॥ २३८॥

एइ—यह; **त'**—निश्चित रूप से; **सङ्क्षेपे**—संक्षेप में; **आमि**—मैंने; **कैलुँ उपदेश**—उपदेश दिया है; **स्वरूपेर ठाञि**—स्वरूप दामोदर से; **इहार**—उस उपदेश का; **पाइबे**—तुम्हें मिलेगा; **विशेष**—विस्तार।

अनुवाद

"मैंने संक्षेप में तुम्हें अपना उपदेश दे दिया है। अब तुम इनके विषय में स्वरूप दामोदर से विस्तार में जान सकोगे।

तृणादपि सु-नीचेन तरोरिव सहिष्णुना ।
अमानिना मान-देन कीर्तनीयः सदा हरिः'' ॥२३९॥

तृणादपि सु-नीचेन तरोरिव सहिष्णुना ।
अमानिना मान-देन कीर्तनीयः सदा हरिः" ॥ २३९ ॥

तृणाद् अपि—मार्ग पर पड़े तिनके की अपेक्षा (से अधिक); **सु-नीचेन**—विनम्र होकर; **तरोः**—एक वृक्ष के; **इव**—समान; **सहिष्णुना**—सहनशीलता द्वारा; **अमानिना**—मिथ्या अभिमान से गर्वित हुए बिना; **मान-देन**—सभी को सम्मान देकर; **कीर्तनीयः**—जप किया जा सकता है; **सदा**—सदैव; **हरिः**—भगवान् का पवित्र नाम।

अनुवाद

"जो अपने आपको घास से भी तुच्छ समझता है, जो वृक्ष से भी अधिक सहिष्णु है और जो निजी सम्मान की आशा नहीं रखता, बल्कि अन्यों को सम्मान देने के लिए उद्यत रहता है, वह सदैव सरलतापूर्वक भगवान् के पवित्र नाम का कीर्तन कर सकता है।"

এত শুনি' রঘুনাথ বন্দিলা চরণ ।
মহাপ্রভু কৈলা তাঁরে কৃপা-আলিঙ্গন ॥২৪০॥

এত শুনি' রঘুনাথ বন্দিলা চরণ ।
মহাপ্রভু কৈলা তাঁরে কৃপা-আলিঙ্গন ॥ ২৪০ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **রঘুনাথ**—रघुनाथ दास ने; **বন্দিলা চরণ**—चरणकमलों की वन्दना की; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **কৈলা**—किया; **তাঁরে**—उन्हें; **কৃপা-আলিঙ্গন**—कृपावश आलिंगन।

अनुवाद

यह सुनकर रघुनाथ दास ने श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की वन्दना की और महाप्रभु ने कृपापूर्वक उनका आलिंगन किया।

পুনঃ সমর্পিলা তাঁরে স্বরূপের স্থানে ।
'অন্তরঙ্গ-সেবা' করে স্বরূপের সনে ॥২৪১॥

পুনঃ সমর্পিলা তাঁরে স্বরূপের স্থানে ।
'অন্তরঙ্গ-সেবা' করে স্বরূপের সনে ॥ ২৪১ ॥

পুনঃ—फिर से; **সমর্পিলা**—समर्पित कर दिया; **তাঁরে**—उन्हें; **স্বরূপের স্থানে**—स्वरूप दामोदर को; **অন্তরঙ্গ-সেবা**—अत्यन्त गुह्य सेवा; **করে**—वे करते; **স্বরূপের সনে**—स्वरूप दामोदर के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पुनः उन्हें स्वरूप दामोदर को सौंप दिया। इस प्रकार रघुनाथ दास स्वरूप दामोदर गोस्वामी के साथ अत्यन्त गुह्य सेवा करने लगे।

तात्पर्य

अन्तरंग सेवा का अर्थ है अपने आध्यात्मिक शरीर में की गई सेवा। स्वरूप दामोदर गोस्वामी पहले ललिता देवी थे। रघुनाथ दास गोस्वामी ने भी, जो उनके सहायकों में से थे, अब अपने मन में राधा तथा कृष्ण की सेवा करनी प्रारम्भ कर दी।

হেন-কালে আইলা সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
পূর্ববত্প্রভু সবায় করিলা মিলন ॥২৪২॥

হেন-কালে আইলা সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
পূর্ববত্ প্রভু সবায় করিলা মিলন ॥ ২৪২ ॥

হেন-কালে—इस समय; **আইলা**—आ गये; **সব**—सभी; **গৌড়ের ভক্ত-গণ**—बंगाल से भक्त; **পূর্ব-বত্**—पहले की तरह; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **সবায়**—उन सभी से; **করিলা মিলন**—मिले।

अनुवाद

इस बार बंगाल से सारे भक्त आये और पहले ही की तरह श्री चैतन्य महाप्रभु उन सबसे प्रेमपूर्वक मिले।

সবা লঞা কৈলা প্রভু গুণ্ডিচা-মার্জন ।
সবা লঞা কৈলা প্রভু বন্য-ভোজন ॥২৪৩॥

सबा लञा कैला प्रभु गुण्डिचा-मार्जन ।
सबा लञा कैला प्रभु वन्य-भोजन ॥ २४३ ॥

सबा लञा—उन सब को लेकर; **कैला**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **गुण्डिचा-मार्जन**—गुंडिचा मन्दिर की सफाई; **सबा लञा**—उन सबके साथ; **कैला**—किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **वन्य-भोजन**—बगीचे में भोजन।

अनुवाद

पहले की ही तरह उन्होंने भक्तों के साथ मिलकर गुण्डिचा मन्दिर की सफाई की और बगीचे में वन भोज किया।

রথ-যাত্রায় সবা লঞা করিলা নর্তন ।
দেখি' রঘুনাথের চমত্কার হৈল মন ॥২৪৪॥

রথ-য়াত্রায় সবা লঞা করিলা নর্তন ।
দেখি' রঘুনাথের চমত্কার হৈল মন ॥ ২৪৪॥

রথ-য়াত্রায়—রথयात्रा के अवसर पर; **সবা লঞা**—उन सबको लेकर; **করিলা নর্তন**—नृत्य किया; **দেখি'**—देखकर; **রঘুনাথের**—रघुनाथ दास का; **চমত্কার**—आश्चर्यचकित; **হৈল**—हो गया; **মন**—मन।

अनुवाद

महाप्रभु ने पुनः रथयात्रा उत्सव के समय भक्तों के साथ नृत्य किया। यह देखकर रघुनाथ दास आश्चर्यचकित हो गये।

রঘুনাথ-দাস যবে সবারে মিলিলা ।
অদ্বৈত-আচার্য তাঁরে বহু কৃপা কৈলা ॥২৪৫॥

রঘুনাথ-দাস য়বে সবারে মিলিলা ।
অদ্বৈত-আচার্য়্য তাঁরে বহু কৃপা কৈলা ॥ ২৪৫॥

রঘুনাথ-দাস—रघुनाथ दास; **য়বে**—जब; **সবারে মিলিলা**—सभी भक्तों से मिले; **অদ্বৈত-আচার্য়্য**—अद्वैत आचार्य ने; **তাঁরে**—उन्हें; **বহু**—अत्यन्त; **কৃপা**—कृपा; **কৈলা**—दी।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास सभी भक्तों से मिले, तो अद्वैत आचार्य ने उन पर महती कृपा प्रदर्शित की।

शिवानन्द-सेन ताँरे कहेन विवरण ।
तोमा लैते तोमार पिता पाठाइल दश जन ॥२४६॥

शिवानन्द-सेन ताँरे कहेन विवरण ।
तोमा लैते तोमार पिता पाठाइल दश जन ॥ २४६ ॥

शिवानन्द-सेन—शिवानन्द सेन ने; **ताँरे**—उन्हें; **कहेन**—कही; **विवरण**—सूचना; **तोमा लैते**—तुम्हें लाने के लिए; **तोमार पिता**—तुम्हारे पिता ने; **पाठाइल**—भेजे; **दश जन**—दस लोग।

अनुवाद

वे शिवानन्द सेन से भी मिले, जिन्होंने उन्हें बताया कि, "तुम्हारे पिता ने तुम्हें लेने के लिए दस व्यक्ति भेजे थे।

तोमारे पाठाइते पत्री पाठाइल मोरे ।
झाङ्करा हइते तोमा ना पाञा गेल घरे ॥२४७॥

तोमारे पाठाइते पत्री पाठाइल मोरे ।
झाङ्करा हइते तोमा ना पाञा गेल घरे ॥ २४७ ॥

तोमारे—तुम्हें; **पाठाइते**—वापस भेजने के लिए; **पत्री**—पत्र; **पाठाइल मोरे**—मुझे भेजा; **झाङ्करा हइते**—झाँकरा से; **तोमा**—तुम्हें; **ना पाञा**—न पाकर; **गेल घरे**—घर लौट गये।

अनुवाद

"उन्होंने मुझे एक चिट्ठी लिखी कि मैं तुम्हें लौटा दूँ, किन्तु जब उन दस व्यक्तियों को तुम्हारे विषय में कोई सूचना नहीं मिली, तो वे झाँकरा से घर लौट गये।"

चारि मास रहि' भक्त-गण गौड़े गेला ।
शुनि' रघुनाथेर पिता मनुष्य पाठाइला ॥२४८॥

चारि मास रहि' भक्त-गण गौड़े गेला ।
शुनि' रघुनाथेर पिता मनुष्य पाठाइला ॥ २४८ ॥

चारि मास—चार मास तक; **रहि'**—रहकर; **भक्त-गण**—सभी भक्त; **गौड़े गेला**—बंगाल लौट गये; **शुनि'**—सुनकर; **रघुनाथेर पिता**—रघुनाथ दास के पिता ने; **मनुष्य**—एक व्यक्ति; **पाठाइला**—भेजा।

अनुवाद

जब बंगाल के सारे भक्त जगन्नाथपुरी में चार मास रुककर घर लौटे, तो रघुनाथ दास के पिता ने उनके आगमन के विषय में सुना। इसलिए उन्होंने शिवानन्द सेन के पास एक व्यक्ति को भेजा।

সে মনুষ্য শিবানন্দ-সেনেরে পুছিল ।
"মহাপ্রভুর স্থানে এক 'বৈরাগী' দেখিল ॥২৪৯॥

से मनुष्य शिवानन्द-सेनेरे पुछिल ।
"महाप्रभुर स्थाने एक 'वैरागी' देखिल ॥ २४९ ॥

से मनुष्य—वह व्यक्ति; **शिवानन्द-सेनेरे**—शिवानन्द सेन से; **पुछिल**—पूछा; **महाप्रभुर स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान पर; **एक वैरागी**—एक वैरागी व्यक्ति; **देखिल**—क्या आपने देखा।

अनुवाद

उस आदमी ने शिवानन्द सेन से पूछा, "क्या आपने श्री चैतन्य महाप्रभु के निवासस्थान पर किसी वैरागी को देखा है?

গোবর্ধনের পুত্র তেঁহো, নাম—'রঘুনাথ' ।
নীলাচলে পরিচয় আছে তোমার সাথ?" ॥২৫০॥

गोवर्धनेर पुत्र तेंहो, नाम—'रघुनाथ' ।
नीलाचले परिचय आछे तोमार साथ?" ॥ २५० ॥

गोवर्धनेर—गोवर्धन का; **पुत्र**—बेटा; **तेंहो**—वह; **नाम**—नाम; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **नीलाचले**—नीलाचल में; **परिचय आछे**—क्या भेंट हुई; **तोमार साथ**—आपके साथ।

अनुवाद

"वह व्यक्ति गोवर्धन मजुमदार का पुत्र रघुनाथ दास है। क्या नीलाचल में उससे आपकी भेंट हुई?"

শিবানন্দ কহে,—"তেঁহো হয় প্রভুর স্থানে ।
পরম বিখ্যাত তেঁহো, কেবা নাহি জানে ॥২৫১॥

शिवानन्द कहे,—"तेंहो हय प्रभुर स्थाने ।
परम विख्यात तेंहो, केबा नाहि जाने ॥ २५१ ॥

शिवानन्द कहे—शिवानन्द सेन ने उत्तर दिया; **तेंहो**—वह; **हय**—है; **प्रभुर स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **परम विख्यात**—अत्यन्त विख्यात; **तेंहो**—वह; **केबा**—कौन; **नाहि जाने**—नहीं जानता।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने उत्तर दिया, "हाँ, महोदय, रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ है और अत्यन्त विख्यात व्यक्ति है। उसे कौन नहीं जानता?

स्वरूपेर स्थाने तारे करियाछेन समर्पण ।
प्रभुर भक्त-गणेर तेंहो हय प्राण-सम ॥ २५२ ॥

स्वरूपेर स्थाने—स्वरूप दामोदर को; **तारे**—उसे; **करियाछेन समर्पण**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने सौंप दिया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गणेर**—सभी भक्तों में से; **तेंहो**—वह; **हय**—है; **प्राण**—प्राण; **सम**—समान।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसे स्वरूप दामोदर के संरक्षण में रख दिया है। रघुनाथ दास तो महाप्रभु के सभी भक्तों का प्राण बन चुका है।

रात्रि-दिन करे तेंहो नाम-सङ्कीर्तन ।
क्षण-मात्र नाहि छाड़े प्रभुर चरण ॥ २५३ ॥

रात्रि-दिन—दिन-रात; **करे**—करता है; **तेंहो**—वह; **नाम-सङ्कीर्तन**—हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन; **क्षण-मात्र**—एक क्षण के लिए भी; **नाहि छाड़े**—नहीं छोड़ता; **प्रभुर चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

"वह दिन-रात हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करता है। वह क्षण भर के लिए भी श्री चैतन्य महाप्रभु की शरण नहीं छोड़ता।

পরম বৈরাগ্য তার, নাহি ভক্ষ্য-পরিধান ।
যৈছে তৈছে আহার করি' রাখয়ে পরাণ ॥২৫৪॥

परम वैराग्य तार, नाहि भक्ष्य-परिधान ।
ग्रैछे तैछे आहार करि' राखये पराण ॥२५४॥

परम—सर्वश्रेष्ठ; **वैराग्य**—विरक्ति की भावना; **तार**—उसकी; **नाहि**—नहीं; **भक्ष्य**—खाना; **परिधान**—पहनना; **ग्रैछे तैछे**—किसी भी तरह; **आहार करि'**—खाकर; **राखये पराण**—प्राण रक्षा करता है।

अनुवाद

"वह सर्वोपरि संन्यास आश्रम में है। वह खाने या पहनने की परवाह नहीं करता। वह जैसे-कैसे भोजन करता है और अपना जीवन यापन करता है।

দশ-দণ্ড রাত্রি গেলে 'পুষ্পাঞ্জলি' দেখিয়া ।
সিংহ-দ্বারে খাড়া হয় আহার লাগিয়া ॥২৫৫॥

दश-दण्ड रात्रि गेले 'पुष्पाञ्जलि' देखिया ।
सिंह-द्वारे खाड़ा हय आहार लागिया ॥२५५॥

दश-दण्ड—दस दंड (२४० मिनट); **रात्रि**—रात; **गेले**—होने पर; **पुष्पाञ्जलि**—पुष्पांजलि; **देखिया**—देखकर; **सिंह-द्वारे**—सिंहद्वार पर; **खाड़ा हय**—खड़ा होता है; **आहार लागिया**—खाने के लिए कुछ भिक्षा प्राप्त करने के लिए।

अनुवाद

"वह दस दण्ड (चार घण्टे) रात बीत जाने पर पुष्पांजलि देख लेने के बाद सिंहद्वार पर खड़ा होकर खाने के लिए भिक्षा माँगता है।

কেহ যদি দেয়, তবে করয়ে ভক্ষণ ।
কভু উপবাস, কভু করয়ে চর্বণ'' ॥২৫৬॥

केह ग्रदि देय, तबे करये भक्षण ।
कभु उपवास, कभु करये चर्वण" ॥ २५६ ॥

केह—कोई; **ग्रदि**—यदि; **देय**—देता है; **तबे**—तो; **करये भक्षण**—वह खाता है; **कभु**—कभी; **उपवास**—उपवास; **कभु**—कभी; **करये चर्वण**—वह चबाता है।

अनुवाद

"यदि कोई कुछ दे देता है, तो वह खा लेता है। कभी-कभी वह उपवास करता है और कभी वह चबैना चबाकर रह जाता है।"

एत शुनि' सेइ मनुष्य गोवर्धन-स्थाने ।
कहिल गिया सब रघुनाथ-विवरणे ॥ २५७ ॥

एत शुनि' सेइ मनुष्य गोवर्धन-स्थाने ।
कहिल गिया सब रघुनाथ-विवरणे ॥ २५७ ॥

एत शुनि'—यह सुनकर; **सेइ मनुष्य**—वह सन्देशवाहक; **गोवर्धन-स्थाने**—गोवर्धन मजुमदार के पास; **कहिल**—बताया; **गिया**—जाकर; **सब**—सब कुछ; **रघुनाथ-विवरणे**—रघुनाथ दास का विवरण।

अनुवाद

यह सुनकर वह सन्देशवाहक गोवर्धन मजुमदार के पास लौट गया और उसने रघुनाथ दास के बारे में उसे सब कुछ बतला दिया।

शुनि' ताँर माता पिता दुःखित हइल ।
पुत्र-ठाञि द्रव्य-मनुष्य पाठाइते मन कैल ॥ २५८ ॥

शुनि' ताँर माता पिता दुःखित हइल ।
पुत्र-ठाञि द्रव्य-मनुष्य पाठाइते मन कैल ॥ २५८ ॥

शुनि'—सुनकर; **ताँर**—उनके; **माता पिता**—माता-पिता; **दुःखित हइल**—अत्यन्त दुःखी हुए; **पुत्र-ठाञि**—अपने पुत्र के पास; **द्रव्य-मनुष्य**—सम्पत्ति और सेवक; **पाठाइते**—भेजने की; **मन कैल**—इच्छा करने लगे।

अनुवाद

संन्यास आश्रम में रघुनाथ दास के व्यवहार का वर्णन सुनकर उसके

माता-पिता अत्यन्त दुःखी थे। इसलिए उन्होंने उसकी सुविधा के लिए कुछ सामान देकर कुछ आदमी भेजने का निश्चय किया।

चारि-शत मुद्रा, दुई भृत्य, एक ब्राह्मण ।
शिवानन्देर ठाञि पाठाइल तत-क्षण ॥२५९॥

चारि-शत मुद्रा, दुइ भृत्य, एक ब्राह्मण ।
शिवानन्देर ठाञि पाठाइल तत-क्षण ॥ २५९ ॥

चारि-शत मुद्रा—चार सौ मुद्राएँ; **दुइ भृत्य**—दो नौकर; **एक ब्राह्मण**—एक ब्राह्मण; **शिवानन्देर ठाञि**—शिवानन्द सेन के पास; **पाठाइल**—भेज दिये; **तत-क्षण**—उसी समय।

अनुवाद

रघुनाथ दास के पिता ने तुरन्त शिवानन्द सेन के पास चार सौ मुद्राएँ, दो नौकर तथा एक ब्राह्मण भेज दिया।

शिवानन्द कहे,—"तुमि सब याइते नारिबा ।
आमि याइ यबे, आमार सङ्गे याइबा ॥२६०॥

शिवानन्द कहे,—"तुमि सब याइते नारिबा ।
आमि याइ यबे, आमार सङ्गे याइबा ॥ २६० ॥

शिवानन्द कहे—शिवानन्द सेन ने कहा; **तुमि**—तुम; **सब**—सब; **याइते नारिबा**—नहीं जा सकते; **आमि याइ**—मैं जाऊँगा; **यबे**—जब; **आमार सङ्गे**—मेरे साथ; **याइबा**—तुम आ सकते हो।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने उन सबसे बतलाया, "तुम लोग सीधे जगन्नाथपुरी नहीं जा सकते। जब मैं वहाँ जाऊँ, तब तुम लोग मेरे साथ चल सकते हो।

एबे घर याह, यबे आमि सब चलिमु ।
तबे तोमा सबाकारे सङ्गे लञा यामु ॥२६१॥

एबे घर याह, यबे आमि सब चलिमु ।
तबे तोमा सबाकारे सङ्गे लञा यामु ॥ २६१ ॥

एबे—अभी; **घर याह**—घर जाओ; **यबे**—जब; **आमि**—हम; **सब**—सब; **चलिमु**—जायेंगे; **तबे**—तब; **तोमा सबाकारे**—तुम सब को; **सङ्गे**—साथ; **लञा**—लेकर; **याभु**—मैं जाऊँगा।

अनुवाद

"अभी घर जाओ। जब हम सभी जायेंगे, तब तुम सबको अपने साथ ले लेंगे।"

एइ त' प्रस्तावे श्री-कवि-कर्णपूर ।
रघुनाथ-महिमा ग्रन्थे लिखिला प्रचुर ॥२६२॥
एइ त' प्रस्तावे श्री-कवि-कर्णपूर ।
रघुनाथ-महिमा ग्रन्थे लिखिला प्रचुर ॥ २६२ ॥

एइ त' प्रस्तावे—इस सन्दर्भ में; **श्री-कवि-कर्णपूर**—कवि कर्णपूर नामक कवि ने; **रघुनाथ-महिमा**—रघुनाथ दास की महिमा; **ग्रन्थे**—अपने ग्रन्थ (*श्री चैतन्य चन्द्रोदय नाटक*) में; **लिखिला**—लिखा; **प्रचुर**—विस्तार से।

अनुवाद

इस घटना का वर्णन करते हुए महान् कवि श्री कविकर्णपूर ने अपने ग्रन्थ 'श्री चैतन्य चन्द्रोदय नाटक' में रघुनाथ दास के महिमामय कार्यों के विषय में विस्तार से लिखा है।

आचार्यो यदुनन्दनः सु-मधुरः श्री-वासुदेव-प्रियस्
तच्छिष्यो रघुनाथ इत्यधिगुणः प्राणाधिको मादृशाम् ।
श्री-चैतन्य-कृपातिरेक-सतत-स्निग्धः स्वरूपानुगो
वैराग्यैक-निधिर्न कस्य विदितो नीलाचले तिष्ठताम् ॥२६३॥
आचार्यो यदुनन्दनः सु-मधुरः श्री-वासुदेव-प्रियस्
तच्छिष्यो रघुनाथ इत्यधिगुणः प्राणाधिको मादृशाम् ।
श्री-चैतन्य-कृपातिरेक-सतत-स्निग्धः स्वरूपानुगो
वैराग्यैक-निधिर्न कस्य विदितो नीलाचले तिष्ठताम् ॥ २६३ ॥

आचार्यः यदुनन्दनः—यदुनन्दन आचार्य; **सु-मधुरः**—अत्यन्त भद्र आचरणशील; **श्री-वासुदेव-प्रियः**—श्री वासुदेव दत्त ठाकुर के अत्यन्त प्रिय; **तत्-शिष्यः**—उनका शिष्य; **रघुनाथः**—रघुनाथ दास; **इति**—अतः; **अधिगुणः**—गुणवान; **प्राण-अधिकः**—प्राणों से

अधिक प्रिय; **मादृशाम्**—मेरे जैसे श्री चैतन्य महाप्रभु के सभी शिष्यों का; **श्री-चैतन्य-कृपा**—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से; **अतिरेक**—अत्यन्त; **सतत-स्निग्धः**—सदैव आनन्ददायक; **स्वरूप-अनुगः**—स्वरूप दामोदर के चरणचिह्नों का अनुसरण करना; **वैराग्य**—वैराग्य का; **एक-निधिः**—समुद्र; **न**—नहीं; **कस्य**—किसके द्वारा; **विदितः**—ज्ञात होता है; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **तिष्ठताम्**—जो रह रहे थे।

अनुवाद

"रघुनाथ दास अत्यन्त विनीत तथा कांचनपल्ली निवासी वासुदेव दत्त को अत्यधिक प्रिय यदुनन्दन आचार्य के शिष्य हैं। अपने दिव्य गुणों के कारण रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु के हम सभी भक्तों को सदैव प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। उन पर श्री चैतन्य महाप्रभु की अत्यधिक कृपा है, इसलिए वे सदैव अत्यन्त प्रिय हैं। वे संन्यास आश्रम के लिए उत्तम आदर्श प्रस्तुत करने वाले हैं और स्वरूप दामोदर गोस्वामी के ये अत्यन्त प्रिय अनुयायी वैराग्य के सागर हैं। नीलाचल (जगन्नाथपुरी) के निवासियों में ऐसा कौन होगा जो उन्हें भलीभाँति न जानता हो?

तात्पर्य

यह श्लोक कवि कर्णपूर कृत *श्री चैतन्य चन्द्रोदय नाटक* (१०.३) में से लिया गया है।

यः सर्व-लोकैक-मनोऽभिरुच्या
सौभाग्य-भूः काचिदकृष्ट-पच्या ।
यत्रायमारोपण-तुल्य-कालं
तत्प्रेम-शाखी फलवानतुल्यः ॥२६४॥

यः सर्व-लोकैक-मनोऽभिरुच्या
सौभाग्य-भूः काचिदकृष्ट-पच्या ।
यत्रायमारोपण-तुल्य-कालं
तत्प्रेम-शाखी फलवानतुल्यः ॥२६४॥

यः—जो; **सर्व-लोक**—पुरी के सभी भक्तों का; **एक**—अग्रणी; **मनः**—मनों का; **अभिरुच्या**—स्नेह द्वारा; **सौभाग्य-भूः**—सौभाग्य का आधार; **काचित्**—अवर्णनीय; **अकृष्ट-पच्या**—बिना जोते ही उत्तम या बिना अभ्यास के ही दक्ष; **यत्र**—जिसमें; **अयम्**—यह;

आरोपण-तुल्य-कालम्—बीज को बोने के समय; **तत्-प्रेम-शाखी**—श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेम का वृक्ष; **फल-वान्**—फलयुक्त; **अतुल्यः**—अतुलनीय।

अनुवाद

"चूँकि वे सारे भक्तों को अत्यन्त मनोहर लगते हैं, इसलिए रघुनाथ दास गोस्वामी आसानी से सौभाग्य की उर्वर भूमि बन गये, जो श्री चैतन्य महाप्रभु का बीज बोने के लिए उपयुक्त थी। उसी समय यह बीज बो दिया गया और यह श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रेम रूपी अद्वितीय वृक्ष के रूप में बढ़कर फल उत्पन्न करने लगा।"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्री चैतन्य चन्द्रोदय नाटक* का अगला श्लोक (१०.४) है।

शिवानन्द यैछे सेई मनुष्ये कहिला ।
कर्णपूर सेई-रूपे श्लोक वर्णिला ॥२६५॥

शिवानन्द ग्रैछे सेइ मनुष्ये कहिला ।
कर्णपूर सेइ-रूपे श्लोक वर्णिला ॥ २६५ ॥

शिवानन्द—शिवानन्द सेन ने; **ग्रैछे**—जैसे; **सेइ**—उस; **मनुष्ये**—सन्देशवाहक को; **कहिला**—कहा; **कर्णपूर**—महान् कवि कर्णपूर ने; **सेइ रूपे**—उसी प्रकार; **श्लोक वर्णिला**—श्लोक रचे।

अनुवाद

इन श्लोकों में महाकवि कवि-कर्णपूर वही जानकारी देते हैं, जो शिवानन्द सेन ने रघुनाथ दास के पिता के सन्देशवाहक को दी थी।

वर्षान्तरे शिवानन्द चलेन नीलाचले ।
रघुनाथेर सेवक, विप्र ताँर सङ्गे चले ॥२६६॥

वर्षान्तरे शिवानन्द चले नीलाचले ।
रघुनाथेर सेवक, विप्र ताँर सङ्गे चले ॥ २६६ ॥

वर्ष-अन्तरे—अगले वर्ष; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **चले नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी जाने लगे; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास के; **सेवक**—सेवक; **विप्र**—तथा ब्राह्मण; **ताँर सङ्गे**—उनके साथ; **चले**—चल दिये।

अनुवाद

अगले वर्ष जब शिवानन्द सेन हमेशा की तरह जगन्नाथपुरी जाने लगे, तो रघुनाथ के नौकर तथा उनका रसोइया ब्राह्मण उनके साथ चल पड़े।

सेइ विप्र भृत्य, चारि-शत मुद्रा लञा ।
नीलाचले रघुनाथे मिलिला आसिया ॥२६७॥

सेइ विप्र भृत्य, चारि-शत मुद्रा लञा ।
नीलाचले रघुनाथे मिलिला आसिया ॥ २६७॥

सेइ विप्र—वह ब्राह्मण; **भृत्य**—सेवक; **चारि-शत मुद्रा**—चार सौ मुद्राएँ; **लञा**—लाकर; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **रघुनाथे**—रघुनाथ दास से; **मिलिला**—मिले; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

वे सेवक तथा वह ब्राह्मण अपने साथ चार सौ मुद्रा जगन्नाथपुरी ले आये और वहाँ रघुनाथ दास से मिले।

रघुनाथ-दास अङ्गीकार ना करिल ।
द्रव्य लञा दुइ-जन ताहाञि रहिल ॥२६८॥

रघुनाथ-दास अङ्गीकार ना करिल ।
द्रव्य लञा दुइ-जन ताहाञि रहिल ॥ २६८॥

रघुनाथ-दास—रघुनाथ दास ने; **अङ्गीकार ना करिल**—स्वीकार नहीं किये; **द्रव्य लञा**—धन लेकर; **दुइ-जन**—दो लोग; **ताहाञि रहिल**—वहीं रहे।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने अपने पिता द्वारा भेजा गया धन तथा आदमी स्वीकार नहीं किये। इसलिए एक नौकर तथा वह ब्राह्मण दोनों ही धन लेकर वहीं रुके रहे।

तबे रघुनाथ करि' अनेक यतन ।
मासे दुइ-दिन कैला प्रभुर निमन्त्रण ॥२६९॥

तबे रघुनाथ करि' अनेक यतन ।
मासे दुइ-दिन कैला प्रभुर निमन्त्रण ॥ २६९ ॥

तबे—उस समय; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **करि' अनेक यतन**—अत्यन्त सावधानीपूर्वक; **मासे**—प्रत्येक मास; **दुइ-दिन**—दो दिन; **कैला**—किया; **प्रभुर निमन्त्रण**—श्री चैतन्य महाप्रभु को निमंत्रित।

अनुवाद

उसी समय रघुनाथ दास ने प्रतिमास दो दिन अपने घर पर श्री चैतन्य महाप्रभु को बड़े ध्यान से निमन्त्रित करना शुरू किया।

दुइ निमन्त्रणे लागे कौड़ि अष्ट-पण ।
ब्राह्मण-भृत्य-ठाञि करेन एतेक ग्रहण ॥ २७० ॥

दुइ निमन्त्रणे लागे कौड़ि अष्ट-पण ।
ब्राह्मण-भृत्य-ठाञि करेन एतेक ग्रहण ॥ २७० ॥

दुइ निमन्त्रणे—इन दो निमन्त्रणों में; **लागे**—खर्च; **कौड़ि अष्ट-पण**—६४० कोड़ियाँ; **ब्राह्मण-भृत्य-ठाञि**—ब्राह्मण और सेवक से; **करेन**—किया; **एतेक**—इतना ही; **ग्रहण**—स्वीकार।

अनुवाद

इन दोनों अवसरों पर ६४० कौड़ियाँ खर्च होतीं। इसलिए वे उस नौकर तथा ब्राह्मण से इतनी ही राशि लेते।

एइ-मत निमन्त्रण वर्ष दुइ कैला ।
पाछे रघुनाथ निमन्त्रण छाड़ि' दिला ॥ २७१ ॥

एइ-मत निमन्त्रण वर्ष दुइ कैला ।
पाछे रघुनाथ निमन्त्रण छाड़ि' दिला ॥ २७१ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **वर्ष दुइ**—दो वर्ष तक; **कैला**—लगातार; **पाछे**—अन्त में; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **छाड़ि' दिला**—बन्द कर दिया।

अनुवाद

इस तरह रघुनाथ दास श्री चैतन्य महाप्रभु को दो वर्षों तक आमन्त्रित करते रहे, किन्तु दूसरे वर्ष के अन्त में उन्होंने यह बन्द कर दिया।

मास-दुई यबे रघुनाथ ना करे निमन्त्रण ।
स्वरूपे पुछिला तबे शचीर नन्दन ॥२७२॥

मास-दुइ यबे रघुनाथ ना करे निमन्त्रण ।
स्वरूपे पुछिला तबे शचीर नन्दन ॥ २७२ ॥

मास-दुइ—दो मास तक; **यबे**—जब; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **ना करे निमन्त्रण**—निमन्त्रण नहीं देते; **स्वरूपे पुछिला**—स्वरूप दामोदर से पूछते हैं; **तबे**—उस समय; **शचीर नन्दन**—शची माता के पुत्र, श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास ने लगातार दो मास तक महाप्रभु को आमन्त्रित नहीं किया, तो शचीपुत्र महाप्रभु ने स्वरूप दामोदर से पूछा।

'रघू केने आमाय निमन्त्रण छाड़ि' दिल?' ।
स्वरूप कहे,—"मने किछु विचार करिल ॥२७३॥

'रघु केने आमाय निमन्त्रण छाड़ि' दिल?' ।
स्वरूप कहे,—"मने किछु विचार करिल ॥ २७३ ॥

रघु—रघुनाथ दास ने; **केने**—क्यों; **आमाय**—मुझे; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण देना; **छाड़ि' दिल**—छोड़ दिया; **स्वरूप कहे**—स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया; **मने**—उसके मन में; **किछु**—कुछ; **विचार करिल**—उसने विचार किया है।

अनुवाद

महाप्रभु ने पूछा, "रघुनाथ दास ने मुझे निमन्त्रण देना क्यों बन्द कर दिया है?" स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "उसने मन में फिर से कुछ सोचा होगा।

विषयीर द्रव्य लञा करि निमन्त्रण ।
प्रसन्न ना हय ईहाय जानि प्रभुर मन ॥२७४॥

विषयीर द्रव्य लञा करि निमन्त्रण ।
प्रसन्न ना हय इहाय जानि प्रभुर मन ॥ २७४ ॥

विषयीर द्रव्य—भौतिकतावादी लोगों द्वारा प्रदान की गई वस्तुएँ; **लञा**—लेकर; **करि**

निमन्त्रण—मैं निमंत्रित करता हूँ; **प्रसन्न**—सन्तुष्ट; **ना हय**—नही हैं; **इहाय**—इस कारण से; **जानि**—मैं समझ सकता हूँ; **प्रभुर मन**—श्री चैतन्य महाप्रभु का मन।

अनुवाद

"'मैं भौतिकतावादी व्यक्तियों से सामग्री लेकर श्री चैतन्य महाप्रभु को आमन्त्रित करता हूँ। मैं जानता हूँ कि इससे महाप्रभु का मन प्रसन्न नहीं होता।

मोर चित्त द्रव्य लइते ना हय निर्मल ।
एइ निमन्त्रणे देखि,—'प्रतिष्ठा'-मात्र फल ॥२७५॥

मोर चित्त द्रव्य लइते ना हय निर्मल ।
एइ निमन्त्रणे देखि,—'प्रतिष्ठा'-मात्र फल ॥ २७५ ॥

मोर चित्त—मेरी चेतना; **द्रव्य लइते**—सम्पत्ति लेने के कारण; **ना हय**—नहीं है; **निर्मल**—शुद्ध; **एइ निमन्त्रणे**—इस निमन्त्रण द्वारा; **देखि**—मैं देखता हूँ; **प्रतिष्ठा**—सम्मान; **मात्र**—केवल; **फल**—परिणाम।

अनुवाद

"'मेरा मन मलिन है, क्योंकि मैं यह सारा सामान उन लोगों से लेता हूँ जो केवल धन में रुचि रखने वाले हैं। इसलिए ऐसे निमन्त्रण से मैं कुछ भौतिक यश ही प्राप्त करता हूँ।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टिप्पणी है कि देहात्मबुद्धि में फँसे लोग भौतिकतावादी कहलाते हैं। यदि हम ऐसे लोगों की भेंटे स्वीकार करके उन्हें भगवान् के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तथा वैष्णवों को प्रसाद ग्रहण करने के लिए आमन्त्रित करते हैं, तो उससे हमें केवल भौतिक ख्याति मिल सकेगी, शुद्ध वैष्णव की सेवा के लिए कोई वास्तविक लाभ नहीं होगा। इसलिए मनुष्य को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के चरणों में पूर्णतया समर्पित होकर भगवान् की सेवा करनी चाहिए। यदि ईमानदारी से कमाये गये धन को भगवान् की सेवा में लगाया जाता है, तो वह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की, गुरु की तथा वैष्णवों की वास्तविक सेवा है।

উপরোধে প্রভু মোর মানেন নিমন্ত্রণ ।
না মানিলে দুঃখী হইবেক মূর্খ জন ॥২৭৬॥

उपरोधे प्रभु मोर मानेन निमन्त्रण ।
ना मानिले दुःखी हइबेक मूर्ख जन ॥ २७६ ॥

उपरोधे—विनति पर; **प्रभु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **मोर**—मेरा; **मानेन**—स्वीकार करते हैं; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **ना मानिले**—यदि वे नहीं स्वीकार करते; **दुःखी**—अप्रसन्न; **हइबेक**—हो जायेगा; **मूर्ख जन**—मूर्ख व्यक्ति।

अनुवाद

"'मेरे अनुरोध पर श्री चैतन्य महाप्रभु निमन्त्रण स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि यदि वे निमन्त्रण स्वीकार नहीं करते, तो मुझ जैसा मूर्ख व्यक्ति दुःखी होगा।'

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर कहते हैं कि जो लोग विद्वान हैं, किन्तु भौतिक भोग के प्रति आसक्त रहते हैं, जो भौतिक सम्पत्ति, कुलीन जन्म तथा विद्या के कारण गर्वित रहते हैं, वे अर्चाविग्रह की दिखावटी भक्ति कर सकते हैं और वैष्णवों को प्रसाद भी दे सकते हैं। किन्तु अपने अज्ञान के कारण वे यह समझ नहीं सकते कि चूँकि उनके मन भौतिकता से दूषित हैं, इसलिए न तो पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण, न ही वैष्णव जन उनकी भेंटे स्वीकार करते हैं। यदि कोई ऐसे भौतिकतावादी लोगों से अर्चाविग्रह तथा वैष्णवों को भोजन भेंट करने के लिए धन लेता है, तो शुद्ध वैष्णव इसे स्वीकार नहीं करता। इससे भौतिकतावादियों को दुःख होता है, क्योंकि वे देहात्मबुद्धि में मग्न रहते हैं। इसलिए वे कभी-कभी वैष्णवों के विरुद्ध हो जाते हैं।

এত বিচারিয়া নিমন্ত্রণ ছাড়ি' দিল'' ।
শুনি' মহাপ্রভু হাসি' বলিতে লাগিল ॥২৭৭॥

एत विचारिया निमन्त्रण छाड़ि' दिल" ।
शुनि' महाप्रभु हासि' बलिते लागिल ॥ २७७ ॥

एत विचारिया—यह सोचकर; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **छाड़ि' दिल**—छोड़ दिया;

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हासि'**—हँसकर; **बलिते लागिल**—कहने लगे।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने यह कहकर समाप्त किया कि, "इन सारी बातों पर विचार करके उसने आपको आमन्त्रित करना बन्द कर दिया है।" यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु हँसे और कहने लगे।

"विषयीर अन्न खाइले मलिन हय मन ।
मलिन मन हैले नहे कृष्णेर स्मरण ॥ २७८॥

"विषयीर अन्न खाइले मलिन हय मन ।
मलिन मन हैले नहे कृष्णेर स्मरण ॥ २७८॥

विषयीर—विषयी लोगों का; **अन्न**—अन्न; **खाइले**—यदि कोई खाता है; **मलिन**—दूषित; **हय मन**—मन हो जाता है; **मलिन**—दूषित; **मन हैले**—जब मन हो जाए; **नहे**—नहीं होता; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **स्मरण**—स्मरण।

अनुवाद

"जब कोई किसी भौतिकतावादी द्वारा भेंट किया हुआ भोजन खाता है, तो उसका मन कलुषित हो जाता है और जब मन कलुषित हो जाता है, तो मनुष्य ठीक से कृष्ण का चिन्तन नहीं कर पाता।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर का सुझाव है कि भौतिक रूप से आसक्त लोग और तथाकथित सहजिया वैष्णव, दोनों ही *विषयी* अर्थात् भौतिकतावादी हैं, जो सभी बातों को गम्भीरता से नहीं लेते। इनके द्वारा दिया हुआ भोजन खाने से कल्मष उत्पन्न होता है और ऐसे कल्मष से गम्भीर से गम्भीर भक्त भी भौतिकतावादी की तरह बन जाता है। संगति छः प्रकार की होती है—दान देना, दान लेना, भोजन ग्रहण करना, भोजन देना, एकान्त में बातें करना और गुप्त रूप से प्रश्न पूछना। सहजियों जो कभी-कभी वैष्णव कहे जाते हैं तथा अवैष्णवों—इन दोनों की संगति करने से बचना चाहिए। इनकी संगति दिव्य कृष्ण भक्ति को इन्द्रियतृप्ति में बदल देती है और जब इन्द्रियतृप्ति

भक्त के मन में प्रवेश कर जाती है, तो वह कलुषित हो जाता है। जो भौतिकतावादी व्यक्ति इन्द्रियतृप्ति के लिए लालायित रहता है, वह कृष्ण के विषय में ठीक से नहीं सोच पाता।

विषयीर अन्न हय 'राजस' निमन्त्रण ।
दाता, भोक्ता—दुँहार मलिन हय मन ॥ २७९॥

विषयीर अन्न हय 'राजस' निमन्त्रण ।
दाता, भोक्ता—दुँहार मलिन हय मन ॥ २७९॥

विषयीर—भौतिकतावादी व्यक्ति द्वारा दिया हुआ; **अन्न**—अन्न; **हय**—है; **राजस**—रजोगुण में; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **दाता**—जो देता है; **भोक्ता**—जो व्यक्ति ऐसा दान ग्रहण करता है; **दुँहार**—उन दोनों का; **मलिन**—दूषित; **हय मन**—मन हो जाता है।

अनुवाद

"जब कोई व्यक्ति रजोगुण से दूषित किसी व्यक्ति का आमन्त्रण स्वीकार कर लेता है, तो भोजन देने वाला तथा उस भोजन को स्वीकार करने वाला दोनों ही मानसिक रूप से कलुषित हो जाते हैं।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कहते हैं कि निमन्त्रण तीन प्रकार के होते हैं—सतोगुणी, रजोगुणी तथा तमोगुणी। शुद्ध भक्त का निमन्त्रण स्वीकार करना सतोगुणी है, और जो व्यक्ति पवित्र है, किन्तु भौतिकता में लिप्त है, उस व्यक्ति का निमन्त्रण स्वीकार करना रजोगुणी है एवं भौतिक दृष्टि से पापी व्यक्ति का निमन्त्रण स्वीकार करना तमोगुणी है।

ইঁহার সঙ্কোচে আমি এত দিন নিল ।
ভাল হৈল—জানিয়া আপনি ছাড়ি দিল'' ॥২৮০॥

ইঁহার সঙ্কোচে আমি এত দিন নিল ।
ভাল হৈল—জানিয়া আপনি ছাড়ি দিল" ॥ ২৮০॥

ইঁহার সঙ্কোচে—उसकी आतुरता के कारण; **आमि**—मैंने; **एत दिन**—इतने दिन तक; **निल**—स्वीकार किया; **भाल हैल**—यह बहुत अच्छा है; **जानिया**—जानकर; **आपनि**—स्वयं ही; **छाड़ि दिल**—उसने छोड़ दिया।

अनुवाद

"रघुनाथ दास की उत्सुकता के कारण मैंने अनेक दिनों तक उसका निमन्त्रण स्वीकार किया। यह अच्छा हुआ कि रघुनाथ दास ने यह जानते हुए अब इस रीति को स्वयं त्याग दिया है।"

कत दिने रघुनाथ सिंह-द्वार छाड़िला ।
छत्रे याइ' मागिया खाइते आरम्भ करिला ॥२८१॥

कत दिने रघुनाथ सिंह-द्वार छाड़िला ।
छत्रे याइ' मागिया खाइते आरम्भ करिला ॥ २८१ ॥

कत दिने—कुछ दिन बाद; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास ने; **सिंह-द्वार छाड़िला**—सिंहद्वार पर खड़ा होना छोड़ दिया; **छत्रे याइ'**—एक भिक्षा स्थल पर जाकर; **मागिया**—भिक्षा माँगकर; **खाइते**—खाना; **आरम्भ करिला**—उन्होंने प्रारम्भ किया।

अनुवाद

कुछ दिनों के बाद रघुनाथ दास ने सिंहद्वार पर खड़े होना बन्द कर दिया और उसके स्थान पर वे अन्नछत्र से भिक्षा माँगकर खाने लगे।

गोविन्द-पाश शुनि' प्रभु पुछेन स्वरूपेरे ।
'रघु भिक्षा लागि' ठाड़ केने नहे सिंह-द्वारे'? ॥२८२॥

गोविन्द-पाश शुनि' प्रभु पुछेन स्वरूपेरे ।
'रघु भिक्षा लागि' ठाड़ केने नहे सिंह-द्वारे'? ॥ २८२ ॥

गोविन्द-पाश—गोविन्द से; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पुछेन स्वरूपेरे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी से पूछे; **रघु**—रघुनाथ दास; **भिक्षा लागि'**—भिक्षा के लिए; **ठाड़ केने नहे**—खड़ा क्यों नहीं होता; **सिंह-द्वारे**—सिंहद्वार पर।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोविन्द से यह समाचार सुना, तो उन्होंने स्वरूप दामोदर से पूछा, "अब भिक्षा माँगने के लिए रघुनाथ दास सिंहद्वार पर क्यों नहीं खड़ा होता?"

স্বরূপ কহে,—"সিংহ-দ্বারে দুঃখ অনুভবিয়া ।
ছত্রে মাগি' খায় মধ্যাহ্ন-কালে গিয়া" ॥২৮৩॥

স্বরূপ কহে,—"সিংহ-দ্বারে দুঃখ অনুভবিয়া ।
ছত্রে মাগি' খায় মধ্যাহ্ন-কালে গিয়া" ॥ ২৮৩ ॥

স্বরূপ কহে—স্বরূপ দামোদর ने कहा; **সিংহ-দ্বারে**—सिंहद्वार पर; **দুঃখ অনুভবিয়া**—दुःखी अनुभव कर; **ছত্রে**—भिक्षा स्थली पर; **মাগি'**—माँगकर; **খায়**—वह खाता है; **মধ্যাহ্ন-কালে**—दिन में; **গিয়া**—जाकर।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने उत्तर दिया, "रघुनाथ दास को सिंहद्वार पर खड़े होने से दुःख होता था। इसलिए वह अब दोपहर के समय अन्नछत्र में भिक्षा माँगने जाता है।"

প্রভু কহে,—"ভাল কৈল, ছাড়িল সিংহ-দ্বার ।
সিংহ-দ্বারে ভিক্ষা-বৃত্তি—বেশ্যার আচার ॥২৮৪॥

প্রভু কহে,—"ভাল কৈল, ছাড়িল সিংহ-দ্বার ।
সিংহ-দ্বারে ভিক্ষা-বৃত্তি—বেশ্যার আচার ॥ ২৮৪ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **ভাল কৈল**—उसने अच्छा किया; **ছাড়িল সিংহ-দ্বার**—सिंहद्वार पर खड़ा होना छोड़ दिया; **সিংহ-দ্বারে ভিক্ষা-বৃত্তি**—सिंहद्वार पर खड़े होकर भिक्षा माँगना; **বেশ্যার আচার**—एक वेश्या का आचरण है।

अनुवाद

यह समाचार सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "उसने बहुत अच्छा किया कि सिंहद्वार पर खड़ा होना बन्द कर दिया। ऐसी भिक्षावृत्ति वेश्या के आचरण के समान है।

তথা হি—কিমর্থময়মাগচ্ছতি, অয়ং দাস্যতি, অনেন
দত্তময়মপরঃ। সমেত্যয়ং দাস্যতি, অনেনাপি ন
দত্তমন্যঃ সমেষ্যতি, স দাস্যতি ইত্যাদি ॥২৮৫॥

तथा हि——किमर्थमयमागच्छति, अयं दास्यति, अनेन
दत्तमयमपरः। समेत्ययं दास्यति, अनेनापि न दत्तमन्यः
समेष्यति, स दास्यति इत्यादि ॥ २८५॥

तथा हि—अतः; **किम् अर्थम्**—क्यों; **अयम्**—यह व्यक्ति; **आगच्छति**—आ रहा है; **अयम्**—यह व्यक्ति; **दास्यति**—देगा; **अनेन**—इस व्यक्ति ने; **दत्तम्**—दिया था; **अयम्**—यह; **अपरः**—दूसरा; **समेति**—पास आ रहा है; **अयम्**—यह व्यक्ति; **दास्यति**—देगा; **अनेन**—इस व्यक्ति ने; **अपि**—भी; **न**—नहीं; **दत्तम्**—दिया; **अन्यः**—दूसरा; **समेष्यति**—पास आयेगा; **सः**—वह; **दास्यति**—देगा; **इति**—अतः; **आदि**—इस प्रकार।

अनुवाद

"यह व्यक्ति आ रहा है। वह मुझे कुछ देगा। इस व्यक्ति ने मुझे पिछली रात में कुछ दिया था। अब एक दूसरा व्यक्ति इधर आ रहा है। वह मुझे कोई वस्तु दे सकता है। अभी जो व्यक्ति इधर से निकला, उसने मुझे कुछ नहीं दिया, किन्तु दूसरा व्यक्ति आयेगा और वह मुझे कुछ देगा।" संन्यास आश्रम में ऐसा व्यक्ति अपनी उदासीनता त्याग देता है और इस या उस व्यक्ति के दान पर आश्रित रहता है। इस तरह सोचते हुए वह वेश्या की वृत्ति ग्रहण कर लेता है।

ছত্রে যাই যথা-লাভ উদর-ভরণ ।
অন্য কথা নাহি, সুখে কৃষ্ণ-সঙ্কীর্তন'' ॥২৮৬॥

छत्रे य़ाइ य़था-लाभ उदर-भरण ।
अन्य कथा नाहि, सुखे कृष्ण-सङ्कीर्तन" ॥ २८६ ॥

छत्रे य़ाइ—मुफ्त प्रसाद वितरण के स्थान पर जाकर; **य़था-लाभ**—जो कुछ भी मिलता है; **उदर-भरण**—पेट भरने के लिए; **अन्य**—अन्य; **कथा**—बात; **नाहि**—नहीं है; **सुखे**—प्रसन्नता से; **कृष्ण-सङ्कीर्तन**—हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन।

अनुवाद

"यदि कोई व्यक्ति निःशुल्क भोजन देने वाले लंगर में जाकर जो भी मिले उससे पेट भरता है, तो अवांछित बातों का अवसर नहीं रह जाता और वह शान्तिपूर्वक हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन कर सकता है।"

এত বলি' তাঁরে পুনঃ প্রসাদ করিলা ।
'গোবর্ধনের শিলা', 'গুঞ্জা-মালা' তাঁরে দিলা ॥২৮৭॥

এত বলি' তাঁরে পুনঃ প্রসাদ করিলা ।
'গোবর্ধনের শিলা', 'গুঞ্জা-মালা' তাঁরে দিলা ॥ ২৮৭॥

এত বলি'—यह कहकर; **তাঁরে**—उन्हें; **পুনঃ**—फिर; **প্রসাদ করিলা**—कृपा रूप कुछ दिया; **গোবর্ধনের শিলা**—गोवर्धन पर्वत की एक शिला; **গুঞ্জা-মালা**—गुंज की एक माला; **তাঁরে দিলা**—उन्हें देकर।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोवर्धन पर्वत की एक शिला तथा गुंजामाला (छोटे शंखों की एक माला) देकर रघुनाथ दास पर पुनः कृपा की।

শঙ্করানন্দ-সরস্বতী বৃন্দাবন হৈতে আইলা ।
তেঁহ সেই শিলা-গুঞ্জা-মালা লঞা গেলা ॥২৮৮॥

শঙ্করানন্দ-সরস্বতী বৃন্দাবন হৈতে আইলা ।
তেঁহ সেই শিলা-গুঞ্জা-মালা লঞা গেলা ॥ ২৮৮॥

শঙ্করানন্দ-সরস্বতী—श्री चैतन्य महाप्रभु का एक भक्त; **বৃন্দাবন হৈতে**—वृन्दावन से; **আইলা**—आया था; **তেঁহ**—वह; **সেই**—वे; **শিলা-গুঞ্জা-মালা**—शिला और गुंज माला; **লঞা**—लेकर; **গেলা**—आया था।

अनुवाद

पिछली बार जब शंकरानन्द सरस्वती वृन्दावन से आये थे, तो अपने साथ गोवर्धन पर्वत से एक शिला तथा गुंजामाला (छोटे-छोटे शंखों की माला) लाये थे।

পার্শ্বে গাঁথা গুঞ্জা-মালা, গোবর্ধন-শিলা ।
দুই বস্তু মহাপ্রভুর আগে আনি' দিলা ॥২৮৯॥

পার্শ্বে গাঁথা গুঞ্জা-মালা, গোবর্ধন-শিলা ।
দুই বস্তু মহাপ্রভুর আগে আনি' দিলা ॥ ২৮৯॥

पार्श्वे—एक ओर; **गाँथा**—बंधी हुई; **गुञ्जा-माला**—गुंजमाला; **गोवर्धन-शिला**—गोवर्धन शिला; **दुइ वस्तु**—दोनों वस्तुएँ; **महाप्रभुर आगे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने; **आनि' दिला**—प्रस्तुत कीं।

अनुवाद

उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को वे दोनों वस्तुएँ—शंखों की माला तथा गोवर्धन पर्वत की शिला—दी थीं।

दुई अपूर्व-वस्तु पाञा प्रभु तुष्ट हैला ।
स्मरणेर काले गले परे गुञ्जा-माला ॥२९०॥

दुइ अपूर्व-वस्तु पाञा प्रभु तुष्ट हैला ।
स्मरणेर काले गले परे गुञ्जा-माला ॥ २९० ॥

दुइ—दो; **अपूर्व-वस्तु**—अद्भुत वस्तुएँ; **पाञा**—प्राप्त कर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तुष्ट हैला**—अत्यन्त प्रसन्न हुए; **स्मरणेर काले**—स्मरण के समय (जब वे हरे कृष्ण जप कर रहे थे); **गले**—गले में; **परे**—पहनते; **गुञ्जा-माला**—छोटे-छोटे शंखों से बनी माला।

अनुवाद

इन दो असामान्य वस्तुओं को पाकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यधिक सुखी थे। वे जप करते समय उस माला को अपने गले में डाल लिया करते थे।

गोवर्धन-शिला प्रभु हृदये-नेत्रे धरे ।
कभु नासाय घ्राण लय, कभु शिरे करे ॥२९१॥

गोवर्धन-शिला प्रभु हृदये-नेत्रे धरे ।
कभु नासाय घ्राण लय, कभु शिरे करे ॥ २९१ ॥

गोवर्धन-शिला—गोवर्धन पर्वत की शिला; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हृदये**—हृदय पर; **नेत्रे**—आँखों पर; **धरे**—रखते; **कभु**—कभी; **नासाय**—नाक से; **घ्राण लय**—सूँघते; **कभु**—कभी; **शिरे करे**—सिर पर रखते।

अनुवाद

महाप्रभु इस शिला को कभी अपने हृदय पर रखते तो कभी अपनी

आँखों से लगाते। कभी वे अपनी नाक से इसे सूँघते और कभी इसे अपने सिर पर रखते।

নেত্র-জলে সেই শিলা ভিজে নিরন্তর ।
শিলারে কহেন প্রভু—'কৃষ্ণ-কলেবর' ॥২৯২॥

নেত্র-জলে সেই শিলা ভিজে নিরন্তর ।
শিলারে কহেন প্রভু—'কৃষ্ণ-কলেবর' ॥ ২৯২॥

নেত্র-জলে—आँखों की आसुओं से; **সেই**—वह; **শিলা**—शिला; **ভিজে**—भीगी रहती; **নিরন্তর**—सदैव; **শিলারে**—शिला को; **কহেন**—कहते; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **কৃষ্ণ-কলেবর**—भगवान् कृष्ण का शरीर।

अनुवाद

गोवर्धन पर्वत की यह शिला महाप्रभु के नेत्रों से निकलने वाले अश्रुओं से सदैव भीगी रहती थी। श्री चैतन्य महाप्रभु कहा करते, "यह शिला साक्षात् कृष्ण का शरीर है।"

এই-মত তিন-বত্সর শিলা-মালা ধরিলা ।
তুষ্ট হঞা শিলা-মালা রঘুনাথে দিলা ॥২৯৩॥

এই-মত তিন-বত্সর শিলা-মালা ধরিলা ।
তুষ্ট হঞা শিলা-মালা রঘুনাথে দিলা ॥ ২৯৩॥

এই-মত—इस प्रकार; **তিন-বত্সর**—तीन वर्ष तक; **শিলা-মালা**—शिला और गुंजमाला; **ধরিলা**—उन्होंने रखी; **তুষ্ট হঞা**—जब वे अत्यन्त सन्तुष्ट हो गये; **শিলা-মালা**—शिला और माला; **রঘুনাথে**—रघुनाथ दास को; **দিলা**—उन्होंने दे दी।

अनुवाद

वे उस शिला तथा माला को तीन वर्षों तक अपने पास रखे रहे। तब रघुनाथ दास के आचरण से अत्यधिक प्रसन्न होकर महाप्रभु ने इन दोनों को उन्हें दे दिया।

প্রভু কহে,—"এই শিলা কৃষ্ণের বিগ্রহ ।
ইঁহার সেবা কর তুমি করিয়া আগ্রহ ॥২৯৪॥

प्रभु कहे,—"एइ शिला कृष्णेर विग्रह ।
इँहार सेवा कर तुमि करिया आग्रह ॥ २९४॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **एइ शिला**—यह शिला; **कृष्णेर विग्रह**—भगवान् कृष्ण का स्वरूप; **इँहार**—इसकी; **सेवा**—उपासना; **कर**—करो; **तुमि**—तुम; **करिया आग्रह**—अत्यधिक उत्साहपूर्वक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास को यह उपदेश दिया, "यह शिला भगवान् कृष्ण का दिव्य स्वरूप है। इस शिला की पूजा अतीव उत्सुकता से करना।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर अपने *अनुभाष्य* में लिखते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु के मतानुसार *गोवर्धन शिला* महाराज नन्द के पुत्र कृष्ण का साक्षात् स्वरूप थी। महाप्रभु ने इस शिला को तीन वर्षों तक धारण की। तब उन्होंने रघुनाथ दास के हृदय में इस शिला के बारे में भक्ति उत्पन्न की। तब महाप्रभु ने वह शिला रघुनाथ दास को अपना सर्वाधिक विश्वासपात्र सेवक स्वीकार करते हुए सौंप दी। किन्तु कुछ ईर्ष्यालु व्यक्ति इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि चूँकि रघुनाथ दास का जन्म किसी ब्राह्मण कुल में नहीं हुआ था, इसलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसे अर्चाविग्रह को सीधे पूजने का अधिकार नहीं दिया, अपितु उन्हें गोवर्धन से एक शिला प्रदान की। ऐसा विचार *नारकी* है। *पद्मपुराण* में कहा गया है—*अर्च्ये विष्णौ शिलाधीर्गुरुषु नरमतिर्वैष्णवे जातिबुद्धिः... यस्य वा नारकी सः*—यदि कोई सोचता है कि पूज्य शालग्राम शिला मात्र पत्थर है, कि गुरु सामान्य मनुष्य है अथवा भक्ति सम्प्रदाय का विश्वभर में प्रचार करने वाला शुद्ध वैष्णव किसी जाति-पाँति का सदस्य है, तो वह *नारकी* अर्थात् नरक जाने का पात्र माना जाता है। जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह उपदेश दिया कि गोवर्धन शिला पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के शरीर से अभिन्न है, तो उन्होंने ऐसे मूर्खों को अप्रत्यक्ष यह उपदेश दिया कि किसी अन्य जाति-पाँति वाले वैष्णव से कभी ईर्ष्या न करें। मनुष्य को स्वीकार करना चाहिए कि वैष्णव दिव्य होता है। इस तरह उसे बचाया जा सकता है, अन्यथा वह निश्चित रूप से नारकीय जीवन को प्राप्त होगा।

এই শিলার কর তুমি সাত্ত্বিক পূজন ।
অচিরাত্পাবে তুমি কৃষ্ণ-প্রেম-ধন ॥২৯৫॥

এइ শিলার কর তুমি সাত্ত্বিক পূজন ।
অচিরাত্ পাবে তুমি কৃষ্ণ-প্রেম-ধন ॥ ২৯৫॥

এइ শিলার—इस शिला का; **কর**—करो; **তুমি**—तुम; **সাত্ত্বিক পূজন**—एक दक्ष ब्राह्मण की भाँति पूजन, अथवा सत्त्वगुण में; **অচিরাত্**—अति शीघ्र; **পাবে তুমি**—तुम प्राप्त करोगे; **কৃষ্ণ-প্রেম**—कृष्ण-प्रेम भाव; **ধন**—सम्पत्ति।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "तुम आदर्श ब्राह्मण की तरह सत्त्वगुणी भाव से इस शिला की पूजा करो, क्योंकि ऐसी पूजा से तुम निश्चय ही अविलम्ब कृष्ण का भावमय प्रेम प्राप्त कर सकोगे।

এক কুঁজা জল আর তুলসী-মঞ্জরী ।
সাত্ত্বিক-সেবা এই—শুদ্ধ-ভাবে করি ॥২৯৬॥

এক কুঁজা জল আর তুলসী-মঞ্জরী ।
সাত্ত্বিক-সেবা এइ—শুদ্ধ-ভাবে করি ॥ ২৯৬॥

এক—एक; **কুঁজা**—पात्र; **জল**—जल; **আর**—और; **তুলসী-মঞ্জরী**—तुलसी की मंजरी; **সাত্ত্বিক-সেবা**—सत्त्वगुण में सेवा; **এइ**—यह; **শুদ্ধ-ভাবে**—पूर्ण शुद्धता से; **করি**—करो।

अनुवाद

"ऐसी पूजा के लिए एक लोटा पानी तथा तुलसी वृक्ष की कुछ मंजरियों की आवश्यकता पड़ती है। यदि परम शुद्धि के साथ इसे सम्पन्न किया जाए, तो यह सत्त्वगुणी पूजा है।

দুই-দিকে দুই-পত্র মধ্যে কোমল মঞ্জরী ।
এই-মত অষ্ট-মঞ্জরী দিবে শ্রদ্ধা করি''' ॥২৯৭॥

দুइ-দিকে দুइ-পত্র মধ্যে কোমল মঞ্জরী ।
এइ-মত অষ্ট-মঞ্জরী দিবে শ্রদ্ধা করি''' ॥ ২৯৭॥

दुइ-दिके—दो तरफ; **दुइ-पत्र**—दो तुलसी के पत्ते; **मध्ये**—बीच में; **कोमल मञ्जरी**—अति कोमल तुलसी मंजरी; **एइ-मत**—इस प्रकार; **अष्ट-मञ्जरी**—आठ मंजरियाँ; **दिबे**—अर्पित करो; **श्रद्धा करि'**—श्रद्धा और प्रेम के साथ।

अनुवाद

"तुम्हें चाहिए कि तुम श्रद्धा तथा प्रेम के साथ तुलसी की आठ कोमल मंजरियाँ भेंट चढ़ाओ। और इन आठों में प्रत्येक ओर दो तुलसी की पत्तियाँ हों।"

श्री-हस्ते शिला दिया एइ आज्ञा दिला ।
आनन्दे रघुनाथ सेवा करिते लागिला ॥ २९८॥

श्री-हस्ते शिला दिया एइ आज्ञा दिला ।
आनन्दे रघुनाथ सेवा करिते लागिला ॥ २९८॥

श्री-हस्ते—अपने दिव्य हाथ से; **शिला**—गोवर्धन शिला; **दिया**—देकर; **एइ आज्ञा**—यह आदेश; **दिला**—उन्होंने दिया; **आनन्दे**—अत्यन्त आनन्द में; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **सेवा करिते लागिला**—सेवा करने लगे।

अनुवाद

इस तरह यह परामर्श देकर कि किस तरह पूजा की जाए, श्री चैतन्य महाप्रभु ने रघुनाथ दास को अपने दिव्य हाथ से गोवर्धन शिला प्रदान की। महाप्रभु की आज्ञा के अनुसार ही रघुनाथ दास परम प्रसन्नतापूर्वक शिला की पूजा करने लगे।

एक-वितस्ति दुई-वस्त्र, पिँड़ा एक-खानि ।
स्वरूप दिलेन कुँजा आनिवारे पानि ॥२९९॥

एक-वितस्ति दुइ-वस्त्र, पिंड़ा एक-खानि ।
स्वरूप दिलेन कुँजा आनिबारे पानि ॥ २९९॥

एक-वितस्ति—लगभग छः इंच लम्बे; **दुइ-वस्त्र**—दो वस्त्र; **पिंड़ा एक-खानि**—एक लकड़ी का मंच; **स्वरूप दिलेन**—स्वरूप दामोदर ने दिया; **कुँजा**—एक पात्र; **आनिबारे पानि**—जल लाने के लिए।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने रघुनाथ दास को लगभग छह-छह इंच लम्बे दो वस्त्र, एक लकड़ी का पीढ़ा तथा जल रखने के लिए एक पात्र दिया।

एই-মত রঘুনাথ করেন পূজন ।
পূজা-কালে দেখে শিলায় 'ব্রজেন্দ্র-নন্দন' ॥৩০০॥

एइ-मत रघुनाथ करेन पूजन ।
पूजा-काले देखे शिलाय 'व्रजेन्द्र-नन्दन' ॥ ३०० ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **करेन पूजन**—पूजा करने लगे; **पूजा-काले**—पूजा करते हुए; **देखे**—वे देखते हैं; **शिलाय**—गोवर्धन शिला में; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—नन्द महाराज के पुत्र को।

अनुवाद

इस तरह रघुनाथ दास ने गोवर्धन शिला को पूजना प्रारम्भ कर दिया और जब वे पूजा करते, तो उस शिला में वे नन्द महाराज के पुत्र साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण का दर्शन करते।

'প্রভুর স্বহস্ত-দত্ত গোবর্ধন-শিলা' ।
এই চিন্তি' রঘুনাথ প্রেমে ভাসি' গেলা ॥৩০১॥

'प्रभुर स्वहस्त-दत्त गोवर्धन-शिला' ।
एइ चिन्ति' रघुनाथ प्रेमे भासि' गेला ॥ ३०१ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **स्व-हस्त**—अपने हाथों से; **दत्त**—दी हुई; **गोवर्धन-शिला**—गोवर्धन शिला; **एइ चिन्ति'**—यह सोचकर; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **प्रेमे**—प्रेमभाव में; **भासि' गेला**—डूब गये।

अनुवाद

यह सोचकर कि यह गोवर्धन शिला उन्हें किस तरह स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु के हाथों से प्राप्त हुई है, रघुनाथ दास सदैव प्रेमावेश से अभिभूत होते रहते।

জল-তুলসীর সেবায় তাঁর যত সুখোদয় ।
ষোড়শোপচার-পূজায় তত সুখ নয় ॥৩০২॥

जल-तुलसीर सेवाय ताँर यत सुखोदय ।
षोड़शोपचार-पूजाय तत सुख नय ॥ ३०२ ॥

जल-तुलसीर सेवाय—जल तथा तुलसी द्वारा पूजा करके; **ताँर**—उनको; **यत**—जितना; **सुख-उदय**—दिव्य सुख का अनुभव होता; **षोड़श-उपचार-पूजाय**—१६ प्रकार की सामग्रियों द्वारा उपासना करने पर; **तत**—उतना; **सुख**—आनन्द; **नय**—नहीं है।

अनुवाद

केवल जल तथा तुलसी अर्पित करने से रघुनाथ दास को जितना दिव्य आनन्द मिला, उतना सोलह प्रकार की पूजा सामग्रियों से भी अर्चाविग्रह की पूजा करके प्राप्त नहीं किया जा सकता।

এই-মত কত দিন করেন পূজন ।
তবে স্বরূপ-গোসাঞি তাঁরে কহিলা বচন ॥৩০৩॥

एइ-मत कत दिन करेन पूजन ।
तबे स्वरूप-गोसाञि ताँरे कहिला वचन ॥ ३०३ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **कत दिन**—कुछ दिनों तक; **करेन पूजन**—उन्होंने पूजा की; **तबे**—उस समय; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **ताँरे**—उनसे; **कहिला वचन**—कुछ वचन कहे।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास कुछ दिनों तक गोवर्धन शिला की पूजा कर चुके, तो एक दिन स्वरूप दामोदर ने उनसे इस प्रकार कहा।

"অষ্ট-কৌড়ির খাজা-সন্দেশ কর সমর্পণ ।
শ্রদ্ধা করি' দিলে, সেই অমৃতের সম" ॥৩০৪॥

"अष्ट-कौड़िर खाजा-सन्देश कर समर्पण ।
श्रद्धा करि' दिले, सेइ अमृतेर सम" ॥ ३०४ ॥

अष्ट-कौड़िर—आठ कौड़ि के; **खाजा-सन्देश**—खाजा और सन्देश (मिठाइयाँ); **कर**

समर्पण—अर्पित करो; **श्रद्धा करि'**—प्रेम तथा श्रद्धा के साथ; **दिले**—यदि तुम भोग लगाओ; **सेइ**—वह; **अमृतेर सम**—अमृत के समान।

अनुवाद

"तुम इस गोवर्धन शिला को आठ कौड़ियों के मूल्य की सर्वोत्तम खाजा तथा सन्देश मिठाइयाँ अर्पित करो। यदि तुम श्रद्धा तथा प्रेम से इन्हें अर्पित करोगे, तो वे अमृत तुल्य बन जायेंगी।"

तबे अष्ट-कौड़ির খাজা করে সমর্পণ ।
স্বরূপ-আজ্ঞায় গোবিন্দ তাহা করে সমাধান ॥৩০৫॥

तबे अष्ट-कौड़िर खाजा करे समर्पण ।
स्वरूप-आज्ञाय गोविन्द ताहा करे समाधान ॥ ३०५ ॥

तबे—तब; **अष्ट-कौड़िर**—आठ कौड़ि मूल्य के; **खाजा**—खाजा नामक मिठाई; **करे समर्पण**—अर्पित करते हैं; **स्वरूप-आज्ञाय**—स्वरूप दामोदर के आदेश पर; **गोविन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु का सेवक; **ताहा**—वह; **करे समाधान**—व्यवस्था करता है।

अनुवाद

तत्पश्चात् रघुनाथ दास खाजा नाम की कीमती मिठाई का भोग लगाने लगे, जिसकी पूर्ति स्वरूप दामोदर की आज्ञा के अनुसार गोविन्द करता था।

রঘুনাথ সেই শিলা-মালা যবে পাইলা ।
গোসাঞির অভিপ্রায় এই ভাবনা করিলা ॥৩০৬॥

रघुनाथ सेइ शिला-माला यबे पाइला ।
गोसाञिर अभिप्राय एइ भावना करिला ॥ ३०६ ॥

रघुनाथ—रघुनाथ दास गोस्वामी ने; **सेइ शिला**—वह शिला; **माला**—माला; **यबे**—जब; **पाइला**—प्राप्त की; **गोसाञिर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **अभिप्राय**—उद्देश्य; **एइ**—यह; **भावना करिला**—उन्होंने सोचा।

अनुवाद

जब रघुनाथ दास को श्री चैतन्य महाप्रभु से शिला तथा शंखों की

माला प्राप्त हुई, तब वे महाप्रभु की आन्तरिक इच्छा समझ गये थे। अतः उन्होंने इस प्रकार सोचा।

"शिला दिया गोसाञि समर्पिला 'गोवर्धने' ।
गुञ्जा-माला दिया दिला 'राधिका-चरणे'" ॥३०७॥

"शिला दिया गोसाञि समर्पिला 'गोवर्धने' ।
गुञ्जा-माला दिया दिला 'राधिका-चरणे'" ॥ ३०७॥

शिला दिया—यह शिला देकर; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **समर्पिला**—दिया; **गोवर्धने**—गोवर्धन के निकट एक स्थान; **गुञ्जा-माला दिया**—गुंजा माला देकर; **दिला**—दिये; **राधिका-चरणे**—श्रीमती राधारानी के चरणकमलों की शरण।

अनुवाद

"श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह गोवर्धन शिला देकर मुझे गोवर्धन पर्वत के निकट स्थान दिया है और शंख की माला देकर उन्होंने मुझे श्रीमती राधारानी के चरणकमलों में शरण दी है।"

आनन्दे रघुनाथेर बाह्य विस्मरण ।
काय-मने सेविलेन गौराङ्ग-चरण ॥३०८॥

आनन्दे रघुनाथेर बाह्य विस्मरण ।
काय-मने सेविलेन गौराङ्ग-चरण ॥ ३०८॥

आनन्दे—दिव्य आनन्द में; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास का; **बाह्य विस्मरण**—सब बाह्य विस्मृति हो गई; **काय-मने**—मन और देह से; **सेविलेन**—सेवा की; **गौराङ्ग-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

रघुनाथ दास के आनन्द की कोई सीमा न थी। वे सारी बाह्य वस्तुएँ भूलकर अपने तन तथा मन से श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की सेवा करने लगे।

अनन्त गुण रघुनाथेर के करिबे लेखा? ।
रघुनाथेर नियम,—यैन पाषाणेर रेखा ॥३०९॥

अनन्त गुण रघुनाथेर के करिबे लेखा? ।
रघुनाथेर नियम,—ग्रेन पाषाणेर रेखा ॥ ३०९ ॥

अनन्त गुण—असीमित दिव्य गुण; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास के; **के**—कौन; **करिबे लेखा**—लिख सकता है; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास के; **नियम**—कठोर नियम; **ग्रेन**—जैसे; **पाषाणेर रेखा**—पत्थर पर रेखा।

अनुवाद

भला रघुनाथ दास के असंख्य दिव्य गुणों की गणना कौन कर सकता है? उनके कठोर नियम पत्थर पर लकीर के समान थे।

तात्पर्य

यहाँ पर *पाषाणेर-रेखा* शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। रघुनाथ दास नियमों का इतनी कड़ाई से पालन करते कि उसकी तुलना पत्थर पर खिंची लकीरों से की जाती। जिस तरह ऐसी लकीरें कभी भी मिटाई नहीं जा सकतीं, उसी तरह रघुनाथ दास गोस्वामी द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों को किसी भी परिस्थिति में बदला नहीं जा सकता था।

साड़े सात प्रहर याय कीर्तन-स्मरणे ।
आहार-निद्रा चारि दण्ड सेह नहे कोन दिने ॥ ३१० ॥

साड़े सात प्रहर—७.५ पहर (१ पहर - ३ घंटे); **याय**—व्यतीत होते; **कीर्तन-स्मरणे**—हरे कृष्ण महामन्त्र के जप तथा कृष्ण के चरणकमलों का स्मरण करने में; **आहार-निद्रा**—खाना और सोना; **चारि दण्ड**—४ दण्ड (१ दण्ड - २४ मिनट); **सेह**—वह भी; **नहे**—नहीं; **कोन दिने**—किसी दिन।

अनुवाद

रघुनाथ दास चौबीस घंटों में से बाईस घंटे से अधिक हरे कृष्ण महामन्त्र का जप करने में तथा भगवान् के चरणकमलों का स्मरण करने में बिताते। वे डेढ़ घंटे से भी कम समय खाने तथा सोने में बिताते और किसी-किसी दिन तो वह भी सम्भव नहीं हो पाता था।

বৈরাগ্যের কথা তাঁর অদ্ভুত-কথন ।
আজন্ম না দিল জিহ্বায় রসের স্পর্শন ॥ ৩১১॥

वैराग्येर कथा ताँर अद्भुत-कथन ।
आजन्म ना दिल जिह्वाय रसेर स्पर्शन ॥ ३११॥

वैराग्येर—वैराग्य की; **कथा**—बातें; **ताँर**—उनकी; **अद्भुत-कथन**—आश्चर्यजनक विषय है; **आ-जन्म**—जन्म से; **ना दिल**—नहीं दिया; **जिह्वाय**—जीभ को; **रसेर स्पर्शन**—स्वाद।

अनुवाद

उनके वैराग्य से सम्बन्धित कथाएँ अद्भुत हैं। उन्होंने जीवन भर अपनी जीभ की तृप्ति नहीं होने दी।

ছিণ্ডা কানি কাঁথা বিনা না পরে বসন ।
সাবধানে প্রভুর কৈলা আজ্ঞার পালন ॥ ৩১২॥

छिण्डा कानि काँथा विना ना परे वसन ।
सावधाने प्रभुर कैला आज्ञार पालन ॥ ३१२॥

छिण्डा कानि—एक छोटा फटा कपड़ा; **काँथा**—कांथा (सिली हुई चद्दर); **विना**—सिवाय; **ना परे**—नहीं पहनते; **वसन**—वस्त्र; **सावधाने**—अत्यन्त सावधानीपूर्वक; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **कैला**—करते; **आज्ञार पालन**—आदेशों का पालन।

अनुवाद

उन्होंने पहनने के लिए एक छोटे से फटे वस्त्र तथा लपेटने के लिए गुदड़ी के अतिरिक्त किसी वस्तु का स्पर्श नहीं किया। इस तरह उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु की आज्ञा का कठोरता के साथ पालन किया।

तात्पर्य

गुरु के आदेश का पालन कठोरतापूर्वक करना चाहिए। गुरु विभिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न आदेश देता है। उदाहरण के रूप में श्री चैतन्य महाप्रभु ने जीव गोस्वामी, रूप गोस्वामी तथा सनातन गोस्वामी को प्रचार करने का आदेश दिया और रघुनाथ दास गोस्वामी को संन्यास आश्रम के विधि-विधानों का कड़ाई से पालन करने का आदेश दिया। छहों गोस्वामी श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों का कड़ाई से पालन करते थे। भक्ति में उन्नति का यही नियम है।

गुरु से आदेश मिलने पर मनुष्य को उसका कड़ाई से पालन करने का प्रयास करना चाहिए। यही सफलता की विधि है।

प्राण-रक्षा लागि' येवा करेन भक्षण ।
ताहा खाञा आपनाके कहे निर्वेद-वचन ॥ ३१३॥

प्राण-रक्षा लागि' ग्रेबा करेन भक्षण ।
ताहा खाञा आपनाके कहे निर्वेद-वचन ॥ ३१३॥

प्राण-रक्षा लागि'—प्राण धारण करने मात्र के लिए; **ग्रेबा**—जितना; **करेन भक्षण**—वे खाते; **ताहा खाञा**—वे खाकर; **आपनाके**—स्वयं को; **कहे**—कहते; **निर्वेद-वचन**—तिरस्कार के वचन।

अनुवाद

वे जो भी खाते, शरीर तथा प्राण की रक्षा मात्र के लिए होता था और जब वे खाने बैठते, तो अपनी भर्त्सना इन शब्दों में करते।

आत्मानं चेद्विजानीयात्परं ज्ञान-धुताशयः ।
किमिच्छन्कस्य वा हेतोर्देहं पुष्णाति लम्पटः ॥ ३१४॥

आत्मानं चेद्विजानीयात्परं ज्ञान-धुताशयः ।
किमिच्छन्कस्य वा हेतोर्देहं पुष्णाति लम्पटः ॥ ३१४॥

आत्मानम्—आत्मा को; **चेत्**—यदि; **विजानीयात्**—कोई समझता है; **परम्**—परम; **ज्ञान**—ज्ञान द्वारा; **धुत**—फेंकी हुई; **आशयः**—भौतिक इच्छाएँ; **किम्**—क्या; **इच्छन्**—इच्छा; **कस्य**—क्या; **वा**—या; **हेतोः**—कारण से; **देहम्**—भौतिक देह; **पुष्णाति**—पोषण करता है; **लम्पटः**—धूर्त।

अनुवाद

"'यदि किसी का हृदय पूर्ण ज्ञान द्वारा शुद्ध हो चुका है और उसने परम ब्रह्म कृष्ण को समझ लिया है, तो उसे हर वस्तु प्राप्त हो जाती है। भला ऐसे व्यक्ति को अपने भौतिक शरीर का अच्छी तरह पोषण करने का प्रयास करते हुए लम्पट की तरह क्यों कार्य करना चाहिए?"

तात्पर्य

यह श्लोक (*श्रीमद्भागवत* ७.१५.४०) नारद ने युधिष्ठिर महाराज से

गृहस्थ की भवबन्धन से मुक्ति के विषय में कहा था। आध्यात्मिक स्तर पर शरीर के लिए व्यर्थ चिन्ता नहीं की जाती। श्रील नरोत्तम दास ठाकुर ने कहा है—*देहस्मृति नाहि यार, संसार बन्धन काहाँ तार।* आध्यात्मिक पद को प्राप्त व्यक्ति यह नहीं सोचता कि वह शरीर है। इसलिए वह संन्यास आश्रम में दिव्य रूप में कठिन तपस्या कर सकता है। ऐसे वैराग्य का सर्वोत्तम उदाहरण रघुनाथ दास गोस्वामी हैं।

प्रसादान्न पसारिर यत ना विकाय ।
दुइ-तिन दिन हैले भात सड़ि' याय ॥ ३१५ ॥

प्रसादान्न पसारिर यत ना विकाय ।
दुइ-तिन दिन हैले भात सड़ि' याय ॥ ३१५ ॥

प्रसाद-अन्न—जगन्नाथ का प्रसाद; **पसारिर**—दुकानदारों का; **यत**—जितना; **ना विकाय**—नहीं बिकता; **दुइ-तिन दिन**—दो या तीन दिन; **हैले**—बाद; **भात**—भात; **सड़ि' याय**—सड़ जाता है।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ का प्रसाद दुकानदारों द्वारा बेचा जाता है। जो नहीं बिक पाता वह दो-तीन दिनों बाद सड़ जाता है।

सिंह-द्वारे गाभी-आगे सेइ भात डारे ।
सड़ा-गन्धे तैलङ्गी-गाई खाइते ना पारे ॥ ३१६ ॥

सिंह-द्वारे गाभी-आगे सेइ भात डारे ।
सड़ा-गन्धे तैलङ्गी-गाइ खाइते ना पारे ॥ ३१६ ॥

सिंह-द्वारे—सिंहद्वार पर; **गाभी-आगे**—गायों के सामने; **सेइ भात**—वह अन्न; **डारे**—वे फेंक देते; **सड़ा-गन्धे**—दुर्गन्ध के कारण; **तैलङ्गी-गाइ**—तैलंगी की गाय; **खाइते ना पारे**—खा नहीं पाती थी।

अनुवाद

सारा सड़ा भोजन सिंहद्वार पर तैलंग गौओं के सामने फेंक दिया जाता है। उसकी सड़न की गन्ध के कारण गौवें तक इसे नहीं खा सकतीं।

सेइ भात रघुनाथ रात्रे घरे आनि' ।
भात पाखालिया फेले घरे दिया बहु पानि ॥ ३१७॥

सेइ भात रघुनाथ रात्रे घरे आनि' ।
भात पाखालिया फेले घरे दिया बहु पानि ॥ ३१७॥

सेइ भात—वही फेंका हुआ भात; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **रात्रे**—रात को; **घरे आनि'**—घर लाकर; **भात**—भात; **पाखालिया**—धोकर; **फेले**—डालते; **घरे**—घर पर; **दिया**—डालकर; **बहु पानि**—बहुत सा पानी।

अनुवाद

रात में रघुनाथ दास सड़ा चावल एकत्र करते और घर लाकर उसे प्रचुर पानी से धोते थे।

भितरेर दृढ़ येई माजि भात पाय ।
लवण दिया रघुनाथ सेई अन्न खाय ॥ ३१८॥

भितरेर दृढ़ येइ माजि भात पाय ।
लवण दिया रघुनाथ सेइ अन्न खाय ॥ ३१८॥

भितरेर—अन्दर से; **दृढ़**—सख्त हिस्सा; **येइ**—जो; **माजि**—भीतरी भाग; **भात**—चावल; **पाय**—वे प्राप्त करते; **लवण दिया**—थोड़े नमक के साथ; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **सेइ अन्न**—वह अन्न; **खाय**—खाते।

अनुवाद

तब वे चावल के कड़े भीतरी भाग को नमक मिलाकर खाते।

एक-दिन स्वरूप ताहा करिते देखिला ।
हासिया ताहार किछु मागिया खाइला ॥ ३१९॥

एक-दिन स्वरूप ताहा करिते देखिला ।
हासिया ताहार किछु मागिया खाइला ॥ ३१९॥

एक-दिन—एक दिन; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **ताहा**—वैसा; **करिते**—करते; **देखिला**—देखकर; **हासिया**—हँसकर; **ताहार**—उसका; **किछु**—कुछ भाग; **मागिया खाइला**—माँगे और खा लिए।

अनुवाद

एक दिन स्वरूप दामोदर ने रघुनाथ दास का यह कृत्य देख लिया,

अत: वे हँसे और उस भोजन में से थोड़ा सा अंश माँगकर स्वयं उन्होंने खाया।

स्वरूप कहे,—"ऐछे अमृत खाओ निति-निति ।
आमा-सबाय नाहि देह',—कि तोमार प्रकृति?" ॥३२०॥

स्वरूप कहे,—"ऐछे अमृत खाओ निति-निति ।
आमा-सबाय नाहि देह',—कि तोमार प्रकृति?" ॥ ३२० ॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **ऐछे**—ऐसा; **अमृत**—अमृत; **खाओ**—तुम खाते हो; **निति-निति**—प्रतिदिन; **आमा-सबाय**—हम सबको; **नाहि देह'**—तुम नहीं देते; **कि**—क्या है; **तोमार**—तुम्हारा; **प्रकृति**—स्वभाव।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा : "तुम प्रतिदिन ऐसा अमृत खाते हो, किन्तु हमें कभी नहीं देते। तुम्हारा स्वभाव कैसा है?"

गोविन्देर मुखे प्रभु से वार्ता शुनिला ।
आर दिन आसि' प्रभु कहिते लागिला ॥३२१॥

गोविन्देर मुखे प्रभु से वार्ता शुनिला ।
आर दिन आसि' प्रभु कहिते लागिला ॥ ३२१ ॥

गोविन्देर मुखे—गोविन्द के मुख से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **से वार्ता**—वह बात; **शुनिला**—सुनी; **आर दिन**—अगले दिन; **आसि'**—आकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस बात का समाचार गोविन्द के मुख से सुना, तो वे अगले दिन वहाँ गये और इस प्रकार बोले।

'काँहा वस्तु खाओ सबे, मोरे ना देह' केने?' ।
एत बलि' एक ग्रास करिला भक्षणे ॥३२२॥

'काँहा वस्तु खाओ सबे, मोरे ना देह' केने?' ।
एत बलि' एक ग्रास करिला भक्षणे ॥ ३२२ ॥

काँहा—क्या; **वस्तु**—वस्तुएँ; **खाओ**—तुम खाते हो; **सबे**—सब; **मोरे**—मुझे; **ना देह' केने**—तुम क्यों नहीं देते; **एत बलि'**—यह कहकर; **एक ग्रास**—एक ग्रास; **करिला भक्षणे**—खा लिया।

अनुवाद

"तुम कौन सी अच्छी वस्तुएँ खा रहे हो? तुम मुझे कोई वस्तु क्यों नहीं देते?" यह कहकर उन्होंने बलपूर्वक एक ग्रास ले लिया और खाने लगे।

आर ग्रास लैते स्वरूप हातेते धरिला ।
'तव योग्य नहे' बलि' बले काड़ि' निला ॥ ३२३ ॥

आर ग्रास लैते स्वरूप हातेते धरिला ।
'तव योग्य नहे' बलि' बले काड़ि' निला ॥ ३२३ ॥

आर—दूसरा; **ग्रास**—ग्रास; **लैते**—लेते हुए; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर; **हातेते**—हाथ; **धरिला**—पकड़ लिए; **तव**—आपके; **योग्य**—योग्य; **नहे**—नहीं है; **बलि'**—कहकर; **बले**—बलपूर्वक; **काड़ि'**—छीनकर; **निला**—उन्होंने ले लिया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु दूसरा ग्रास उठा रहे थे, तब स्वरूप दामोदर ने उनका हाथ पकड़ लिया और बोले, "यह आपके योग्य नहीं है।" इस तरह उन्होंने उस भोजन को बलपूर्वक ले लिया।

प्रभु बले,—"निति-निति नाना प्रसाद खाइ ।
ऐछे स्वाद आर कोन प्रसादे ना पाइ" ॥ ३२४ ॥

प्रभु बले,—"निति-निति नाना प्रसाद खाइ ।
ऐछे स्वाद आर कोन प्रसादे ना पाइ" ॥ ३२४ ॥

प्रभु बले—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **निति-निति**—दिन-प्रतिदिन; **नाना प्रसाद**—अनेक प्रकार के प्रसाद; **खाइ**—मैं खाता हूँ; **ऐछे स्वाद**—ऐसा अच्छा स्वाद; **आर**—अन्य; **कोन**—किसी; **प्रसादे**—जगन्नाथ प्रसाद में; **ना पाइ**—मुझे नहीं मिलता।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "निस्सन्देह, मैं हररोज तरह-तरह के

प्रसाद खाता हूँ, किन्तु मैंने कभी ऐसा उत्तम प्रसाद नहीं खाया, जैसाकि रघुनाथ खा रहा है।"

এই-মত মহাপ্রভু নানা লীলা করে ।
রঘুনাথের বৈরাগ্য দেখি' সন্তোষ অন্তরে ॥৩২৫॥

এइ-মত মহাপ্রভু নানা লীলা করে ।
রঘুনাথের বৈরাগ্য দেখি' সন্তোষ অন্তরে ॥ ৩২৫ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নানা লীলা**—अनेक लीलाएँ; **করে**—करते; **রঘুনাথের**—रघुनाथ दास का; **বৈরাগ্য**—वैराग्य; **দেখি'**—देखकर; **সন্তোষ অন্তরে**—अर्न्तमन में सन्तुष्ट।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगन्नाथपुरी में अनेक लीलाएँ कीं। वे रघुनाथ दास को संन्यास आश्रम में कठिन तपस्या करते देखकर अत्यधिक तुष्ट थे।

আপন-উদ্ধার এই রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে' করিয়াছেন প্রকাশ ॥৩২৬॥

আপন-উদ্ধার এइ রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে' করিয়াछেন প্রকাশ ॥ ৩২৬ ॥

আপন-উদ্ধার—अपना उद्धार; **এइ রঘুনাথ-দাস**—यह रघुनाथ दास; **গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে**—अपनी *गौराङ्ग स्तव कल्पवृक्ष* नामक कविता; **করিয়াछেন প্রকাশ**—वर्णित किया है।

अनुवाद

रघुनाथ दास ने 'गौराङ्गस्तवकल्पवृक्ष' नामक अपनी कविता में अपने उद्धार का वर्णन किया है।

মহা-সম্পদ্দাবাদপি পতিতমুদ্ধৃত্য কৃপয়া
স্বরূপে যঃ স্বীয়ে কুজনমপি মাং ন্যস্য মুদিতঃ ।
উরো-গুঞ্জা-হারং প্রিয়মপি চ গোবর্ধন-শিলাং
দদৌ মে গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥৩২৭॥

महा-सम्पद्दावादपि पतितमुद्धृत्य कृपया
स्वरूपे यः स्वीये कुजनमपि मां न्यस्य मुदितः ।
उरो-गुञ्जा-हारं प्रियमपि च गोवर्धन-शिलां
ददौ मे गौराङ्गो हृदय उदयन्मां मदयति ॥ ३२७॥

महा-सम्पत्—अत्यन्त भौतिक ऐश्वर्य से; **दावात्**—वन की आग से; **अपि**—यद्यपि; **पतितम्**—पतित; **उद्धृत्य**—उद्धार कर; **कृपया**—दया द्वारा; **स्वरूपे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी को; **यः**—वे जो (भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्वीये**—अपने निजी संगी को; **कु-जनम्**—नीच व्यक्ति; **अपि**—यद्यपि; **माम्**—मुझे; **न्यस्य**—सौंपकर; **मुदितः**—प्रसन्न; **उरः**—वक्ष का; **गुञ्जा-हारम्**—गुंजामाला, शंखों का हार; **प्रियम्**—प्रिय; **अपि**—यद्यपि; **च**—तथा; **गोवर्धन-शिलाम्**—गोवर्धन शिला; **ददौ**—प्रदान की; **मे**—मुझे; **गौराङ्गः**—भगवान् गौरांग; **हृदये**—मेरे हृदय में; **उदयन्**—प्रकट होकर; **माम्**—मुझे; **मदयति**—उन्मत्त करते हैं।

अनुवाद

"यद्यपि मैं पतित, अति अधम हूँ, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपनी कृपा से महान् भौतिक ऐश्वर्य की प्रज्वलित दावाग्नि से मुझे उबार लिया है। उन्होंने परम प्रसन्नतापूर्वक मुझे अपने निजी संगी स्वरूप दामोदर को सौंप दिया। महाप्रभु ने मुझे अपने वक्षस्थल पर पड़ी हुई गुंजामाला तथा गोवर्धन शिला दी, यद्यपि ये वस्तुएँ उन्हें अतीव प्रिय थीं। ऐसे श्री चैतन्य महाप्रभु मेरे हृदय के भीतर उदय होकर मुझे उन्मत्त बना देते हैं।"

तात्पर्य

यह श्लोक रघुनाथ दास गोस्वामी कृत *श्री गौराङ्गस्तवकल्पवृक्ष* (११) से लिया गया है।

एइ त' कहिलुँ रघुनाथेर मिलन ।
इहा येइ शुने पाय चैतन्य-चरण ॥३२८॥

एइ त' कहिलुँ रघुनाथेर मिलन ।
इहा येइ शुने पाय चैतन्य-चरण ॥ ३२८॥

एइ—यही; **त'**—तो; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **रघुनाथेर मिलन**—रघुनाथ दास का मिलन; **इहा**—यह; **येइ**—जो कोई भी; **शुने**—सुनता है; **पाय**—प्राप्त करता है; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु से रघुनाथ दास की भेंट का वर्णन किया है। जो कोई इस घटना के विषय में सुनता है, वह श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों को प्राप्त करता है।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥३२९॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे ग्यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥३२९॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमलों में; **ग्यार**—जिनकी; **आश**—आशा है; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्यलीला के "श्री चैतन्य महाप्रभु से रघुनाथ दास गोस्वामी की भेंट" शीर्षक छठे अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।